प्रकाशक :
सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

मुद्रक :
रेफिल आर्ट प्रेस
३१, बड़तल्ला स्ट्रीट,
कलकत्ता-७

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ मे बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिहजी बहादुर द्वारा सस्कृत, हिन्दी एव विशेपत: राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानो एव भाषाशास्त्रियो का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमे प्रारंभ से ही मिलता रहा है।

सस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर मे विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तिया चलाई जा रही हैं, जिनमे से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस सबध मे विभिन्न स्रोतो से सस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दो का सकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, लबे समय से प्रारभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं। कोश मे शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाए दी गई हैं। यह एक अत्यत विशाल योजना है, जिसकी सतोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य मे इसका प्रकाशन प्रारभ करना सभव हो सकेगा।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है। अनुमानत पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग मे लाये जाते हैं। हमने लगभग दस हजार मुहावरो का, हिन्दी मे अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणो सहित प्रयोग देकर सपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है।

यदि हम यह विशाल सग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह सस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी।

३. आधुनिकराजस्थानीकाशन रचनओं काप्र

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१. कळायण, ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम सस्कर्ता

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी।

३ बरस गांठ, मौलिक कहानी संग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओ का एक अलग स्तम्भ है, जिसमे भी राजस्थानी कवितायें, कहानिया और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानो ने मुक्त कठ से प्रशसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एव अन्य कठिनाइयो के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नही हो सका है। इसका भाग ५ अङ्क ३-४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वा भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा हैं। इसका अङ्क १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड का सचित्र और वृहत् विशेपाक है। अपने ढग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन मे भारत एव विदेशो से लगभग ८०' पत्र-पत्रिकाए हमें प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशो मे भी इसकी माग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओ के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यत: सग्रहणीय शोध-पत्रिका है। इसमे राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखो के अतिरिक्त सस्या के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एव प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो को सुरक्षित रखने एव सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एव शुद्ध रूप मे मुद्रित करवा कर उचित मूल्य मे वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। सस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रयो का अनुसधान और प्रकाशन सस्था के सदस्यो की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई सस्करण प्रकाश मे लाये गये हैं और उनमे से लघुतम सस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अ श 'राजस्थान भारती' मे प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध सस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती मे प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखा) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अ क में प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन सस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबध राजस्थान भारती मे प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतो का सग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैकडो लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरिया और लगभग ७०० लोक कथाएँ सग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाडे और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल सग्रह 'बीकानेर जैन लेख सग्रह' नामक वृहद् पुस्तक के रूप मे प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवत उद्योत, मुहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्र थो का सम्पादन एव प्रकाशन हो चुका है ।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचद भडारी की ४० रचनाओ का अनुसधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सबध मे भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' मे लेख प्रकाशित हुआ है ।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखो और 'भट्टि वश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं ।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रथो का अनुसंधान किया गया और ज्ञानसार ग्रथावली के नाम से एक ग्रथ भी प्रकाशित हो चुका है । इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओ का सग्रह प्रकाशित किया गया है ।

१५. इसके अतिरिक्त सस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज, और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियो के निर्वाण-दिवस और जयन्तिया मनाई जाती हैं ।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियो का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमे अनेको महत्वपूर्ण निबध, लेख, कविताएँ और कहानिया आदि पढी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है । विचार विमर्श के लिये गोष्ठियो तथा भाषणमालाओ आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है ।

१६. बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानो को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है । डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिवेरिओ-तिवेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानो के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं ।

गत दो वर्षो से महाकवि पृथ्वीराज राठौड आसन की स्थापना की गई है । दोनो वर्षो के आसन-अधिवेशनो के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हूडलोद, थे ।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षो के जीवन-काल मे, सस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरतर सेवा करती रही है । आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह संभव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लडखडा कर गिरते पडते इसके कार्यकर्त्ताओ ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एव प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओ के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरतर चलता रहे । यह ठीक है कि सस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा सदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधनो के अभाव मे भी सस्था के कार्यकर्ताओ ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर सस्था के गौरव को निश्चय ही बढा सकने वाली होगी ।

राजस्थानी-साहित्य-भडार अत्यन्त विशाल है । अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश मे आया है । प्राचीन भारतीय वाड्मय के अलभ्य एव अनर्घ रत्नो को प्रकाशित करके विद्वज्जनो और साहित्यिको के समक्ष प्रस्तुत करना एव उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना सस्था का लक्ष्य रहा है । हम अपनी इस लक्ष्य पूर्त्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं ।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तको के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सभव नही हो सका । हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक सशोध एव सास्कृतिक कार्यक्रम मत्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओ के विकास की योजना के अतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु० १५०००) इस मद मे राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु० ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष मे प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तको का प्रकाशन किया जा रहा है ।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३ अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६. दलपत विलास	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल गीत—	,, ,, ,,
८. पंवार वश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चोपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमाजलि—	श्री भवरलाल नाहटा
१७. विनयचन्द कृतिकुसुमाजलि—	,, ,, ,,
१८. कविवर धर्मवद्धन ग्रथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१. राजस्थान के नीति दोहा—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थान व्रत कथाए—	,, ,, ,,
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,, ,,
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५ भड्डली—	श्री अगरचन्द नाहटा म:विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रथावली	श्री अगरचन्द नाहटा
२७ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथो का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२९. हीयाली-राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रंथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन सग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रथावली (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचन्द नाहटा), नागदमण (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रंथो का सपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है ।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमे अवश्य प्राप्त हो सकेगी ‚जिससे उपरोक्त सपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रथो का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मजूर की ।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अत: हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने मे समर्थ हो सके । सस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी ।

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थो का संपादन करके सस्था के प्रकाशन-कार्य मे जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादको व लेखको के अत्यत आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर सग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन सग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसधान समिति जयपुर, ओरियटल इन्स्टीट्यूट बडोदा, भाडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ बृहद् ज्ञान-भडार बीकानेर, मोतीचंद खजान्ची ग्रंथालय बीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बबई, आत्माराम जैन ज्ञानभडार बडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशकर देराश्री, पं० हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक सस्थाओ और व्यक्तियो से हस्तलिखित प्रतिया प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थो का सपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थो का सम्पादन श्रमसाध्य है एव पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय मे ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियो का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छत: स्खलनक्वपि भवत्येव प्रमाहत:, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधव:।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनो का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावो द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुन. मा भारती के चरण कमलों मे विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पाजलि समर्पित करने के हेतु पुन. उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मत्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
स० २०१७
दिसम्बर ३, १९६०.

रानी पद्मिनी — एक विवेचन

भारतीय इतिहास के अनेक व्यक्ति भावना विशेष के प्रतीक बन चुके है। भगवान् राम मर्यादापुरुषोत्तम हैं तो कृष्ण तत्त्ववेत्ता और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ। पृथ्वीराज विलासप्रिय क्षत्रिय है तो जयचन्द्र मत्सरयुक्त देशद्रोही। एक ओर महाराणा प्रताप हैं तो दूसरी ओर राजा मानसिंह। इसमें भामाशाह है तो माधव और राघव चैतन्य भी। जहाँ दानवावतार अलाउद्दीन है, वहाँ पातिव्रत्य की रक्षा मे सहायक और जीव-दानी गोरा भी। संयोगिता सामान्य जन मानस मे महाभारत रचयित्री द्रौपदी का अवतार है। पद्मिनी अनुपम सौन्दर्य का ही नहीं, बुद्धियुक्त धैर्य, असीम साहस और पातिव्रत्य का भी प्रतीक बन चुकी है, और उसकी गाथा को अनेक रूप में कवियों ने प्रस्तुत किया है। किन्तु किसी आदर्श-विशेष का प्रतीक बनना या अनेकशः वर्णित होना ही, किसी व्यक्ति की ऐतिहासिकता सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं है। सम्भावना अवश्य हो सकती है कि ऐसे व्यक्ति रहे होंगे; किन्तु यह सम्भावना यदि इतिहास से ज्ञात तथ्यों के विरुद्ध हो तो उसे छोड़ने मे भी कोई दोष नहीं है। पद्मिनी की ऐतिहासिकता

भी इसी कसौटी पर परख कर सिद्ध या असिद्ध की जा सकती है।

पद्मिनी का सबसे प्रसिद्ध वर्णन सन् १५४० ई० मे रचित जायसी के 'पद्मावत' काव्य मे है। उसके अनुसार पद्मिनी सिंहलद्वीप के राजा गंधर्वसेन की पुत्री थी और रतनसेन चित्तौड का राजा था। हीरामन तोते के मुख से पद्मिनी के सौन्दर्य का वर्णन सुनकर रतनसेन योगी बनकर सिंहल पहुँचा और अन्ततः पद्मिनी से विवाह करने मे सफल हुआ। चित्तौड की राज्य सभा में राघवचेतन नाम का एक तान्त्रिक ब्राह्मण था। राज्य से निर्वासित होने पर वह दिल्ली पहुँचा। उसने अलाउद्दीन के सामने पद्मिनी के सौन्दर्य की इतनी प्रशसा की कि सुल्तान ने पद्मिनी की प्राप्ति के लिए चित्तौड़ पर घेरा डाल दिया। जब बल से काम न चला तो अलाउद्दीन ने छल से काम लिया। वह अतिथि रूप मे चित्तौड़ पहुँचा और दर्पण मे पद्मिनी का प्रतिबिंब देखकर मुग्ध हो गया। जब राजा उसे पहुँचाने के लिए सातव द्वार तक पहुँचा तो अलाउद्दीन ने उसे सहसा पकड़ लिया और कैदी बनाकर दिल्ली ले गया। कैद से छुटने की केवल मात्र शर्त यही थी वह पद्मिनी को दे दे। उधर गोरा और बादल की सलाह से पद्मिनी ने भी छल से राजा को छुडाने का निश्चय किया। वह सोलह सौ डोलियों में स्त्री वेषधारी राजकुमारों को बिठला कर दिल्ली पहुँची। थोड़ी सी देर के लिए राजा से मिलने का बहाना कर पद्मिनी

ने राजा को कैद से छुडाया और स्वयं बलपूर्वक नगर से बाहर निकल गई। बादल उनके साथ चित्तौड़ पहुँचा। गोरा ने पीछा करने वाली मुसल्मानी सेना से लडकर वीरगति प्राप्त की। कुछ समय के बाद राजा ने कुम्भलमेर पर आक्रमण किया और घायल होकर स्वर्गस्थ हुआ। पद्मिनी और उसकी सपत्नी नागमती सती हुई। इतने मे ही अलाउद्दीन ने चित्तौड पर फिर आक्रमण किया। इस बार अलाउद्दीन की विजय हुई। बादल युद्ध मे काम आया और चित्तौड पर मुसल्मानों का अधिकार हुआ।

इस रूप में कथा ऐतिहासिक सी प्रतीत होती है। किन्तु जायसी ने सब कथा को रूपक बतला कर उसकी ऐतिहासिकता को अत्यन्त संशयास्पद बना दिया है। उसने लिखा है, "इस कथा में चित्तौड शरीर का, राजा मन का, सिंहलद्वीप हृदय का, पद्मिनी बुद्धि का, तोता मार्गदर्शक गुरु का, नागमती संसार के कामों की, राघव शैतान का और अलाउद्दीन माया का सूचक है[१]।"

फरिश्ता ने अपनी तवारीख पद्मावत से लगभग सत्तर वर्ष के बाद लिखी। उसकी कथा जायसी की कथा से मिलती

१—देखें डा० ओझा रचित, उदयपुर का इतिहास पहली जिल्द पृ० १८३-१८७

जुलती है। किन्तु उसने पद्मावती को राजा रतनसेन की पुत्री बना दी है[1]।

श्री अगरचन्दजी नाहटा के संग्रह में गोरा बादल कवित्त नाम की एक लघुकाय रचना हैं। भाषा और शैली की दृष्टि से यह रचना पद्मावत से कुछ विशेष अर्वाचीन प्रतीत नहीं होती। गोरा बादल विषयक अन्य रचनाओं में इसके अवतरण भी इसकी प्राचीनता के द्योतक है। इसमे भी रतनसेन गहलोत चित्तौड का राजा है। रानी नागमती के ताने से रुष्ट होकर वह सिंहल पहुँचा और पद्मिनी से विवाह कर चित्तौड वापस आया। खेल में अप्रसन्न होकर उसने राघव चैतन्य नाम के ब्राह्मण को देश से निकाल दिया। राघव चैतन्य ने दिल्ली पहुँच कर सब लोगों को अपनी अद्भुत तान्त्रिक शक्ति से विस्मित कर दिया। उससे अलाउद्दीन ने पद्मिनी स्त्रियों के गुण सुने। सिंहल में पद्मिनीयाँ प्राप्त थी। किन्तु सिंहल और भारत के बीच में समुद्र होने के कारण वह सिंहल न पहुँच सका। जब उसने सुना कि रतनसेन के घर मे भी पद्मिनी रानी थी तो वह चित्तौड़ पहुंचा। राजाने उसका आतिथ्य किया। बातें करते करते राजा ने दुर्गका अन्तिम फाटक पार किया तो सुल्तान ने राजा को पकड लिया। जब मन्त्रियों ने रानी को दे कर राजा को छुड़ाने का निश्चय किया तो रानी

१—विशेष विवरण के लिए उपर्युक्त इतिहास देखें, पृ० १८८-१८९

गोरा के यहाँ पहुंची। उसने बादल को भी तैयार किया। पाँच सौ डोलियाँ तैयार हुई और एक एक डोली में पाँच-पॉच आदमी बैठे। बादल ने स्वयं पद्मिनी का रूप धारण किया, और राजा को बचा ले गया। गोरा युद्ध में काम आया[1]।

सवत् १६४५ मे जैन कवि हेमरतन ने महाराणा प्रताप के राज्यकाल में इस वीर गाथा की अपने शब्दों मे पुनरावृत्ति की। 'स्वामिधर्म' का प्रचार सम्भवतः इस नव्य रचना का मुख्य लक्ष्य था इसी कथा का परिवर्धन सवत् १७६० में भाग-विजय नाम के अन्य जैन कवि ने किया[2]।

जटमल नाहर रचित 'गोरा बादल चौपई भी इस ग्रंथ मे प्रकाशित हो रही है। इसका रचनाकाल वि० सं० १६८० है[3]। कथा मे कुछ द्रष्टव्य बातें ये है :—

(क) चित्तोड़ का राजा रतनसेन चौहान है।

(ख) एक भाट से पद्मिनी के विषय में सुनकर वह सिंहल जाने का निश्चय करता है।

(ग) सिंहलराज ने बिना किसी आपत्ति के रतनसेन और पद्मावती का विवाह कर दिया और राघवचेतन को उसके साथ चित्तोड़ भेजा।

१—देखें इस संग्रह के पृ०१०९-१२८

२—देखें शोधपत्रिका भाग ३, अङ्क २ पृष्ट १०५-११४ पर श्री अगरचन्द नाहटा का लेख।

३—पृ० १८२-२०८

(घ) राघव को व्यर्थ ही चरित्रभ्रष्ट समझ कर रतनसेन ने देश से निकाल दिया।

(ङ) समुद्र के कारण सिंहल से पद्मिनी स्त्री की प्राप्ति मे विफल होकर, अलाउद्दीन ने राघव चैतन्य के कहने पर चित्तौड पर चढ़ाई की।

(च) राजा ने अलाउद्दीन को पद्मिनी दिखलाई।

(छ) अलाउद्दीन ने द्वार पर राजा को पकड़ा।

(ज) मार से घबरा कर राजा ने पद्मावती को देने का संदेश चित्तौड़ भेजा।

(झ) मत्री पद्मावती को देने के लिए तैयार हुए। किन्तु गोरा और बादल ने युद्ध की सलाह दी बाकी कथा प्रायः वैसी ही है जैसी गोरा बादल कवित्त की और सम्भवतः उसीके आधार पर रचित है।

इसके बाद सम्वत् १७०५-१७०७ में रचित लब्धोदय की पद्मिनी चरित चौपई भी इस संग्रह मे प्रकाशित है[1]। कुछ परिवर्तन द्रष्टव्य है :—

(क) नागमती के स्थान पर इसमें रतनसेन की पहली रानी का नाम प्रभावती है।

(ख) सिंहल-प्रयाण की कथा कुछ और अतिरंजित है।

(ग) पद्मिनी के देने का विचार वही है, किन्तु मुख्यतः

1—देखें पृ० 1-108

इस मत्रणा का दोप स्पत्नी प्रभावती के पुत्र वीरभाण को दिया गया है।

(घ) कथा भाग को यत्र-तत्र परिवर्द्धित कर दिया गया है।

दलपत—दौलतविजय के खुमाण-रासो मे भी पद्मिनीकी कथा है[1] राघवचैतन्य से अलाउद्दीन ने राणा रतनसेन को पकडा। किन्तु इसमे रतनसेन जटमल नाहर की 'गोरा बादल चौपई' का कायर रतनसेन नहीं है, इसका अलाउद्दीन भी कुछ बादशाही शान रखता है। उसने गुण को परखना सीखा है।

राजपूत कालीन राजपूती का सुन्दर वर्णन भी इन शब्दों मे दर्शनीय है।

रजपूता ए रीत सदाई, मरणैं मंगल हरखित थाई ॥४७॥
रिण रहचिया म रोय, रोए रण भाजे गया।
मरणे मगल होय, इण घर आगा ही लगें ॥ ४८ ॥

इस विपय की अनेक अन्य कृतिया भी प्राप्त है[2]। टॉड ने अग्रेजी मे पद्मिनी का चरित्र प्रस्तुत किया है। उसने रतनसेन के स्थान पर भीमसिंह को रखा। पद्मिनी सिंहलद्वीप के राजा हमीरसिंह चौहान की पुत्री है। गोरा पद्मिनी का

१—देखें पृ० १२९-१८१

२—देखें शोध पत्रिका, भाग ३, अङ्क २ में श्री नाहटाजी का उपर्युक्त लेख।

चाचा और बादल गोरा का पुत्र है। राणा के छूट जाने पर जब अलाउद्दीन दुबारा चित्तौड़ पर आक्रमण करता है तो राणियाँ जौहर करती हैं और भीमसिंह आदि दुर्ग के द्वार खोल कर लड़ते हुए वीर गति प्राप्त करते हैं।

पद्मावती विषयक इन सब कथाओं में कुछ बातें एक सी हैं। पद्मावती सिंहल की राजकुमारी है, कथा का नायक रतनसेन और प्रतिनायक अलाउद्दीन है। दुर्मन्त्रणादायी तान्त्रिक ब्राह्मण राघवचैतन्य है। गोरा बादल पद्मावती की सतीत्व के रक्षा करने वाले हैं, और पद्मावती सती धर्म प्रतिष्ठिता राजपूत वीराङ्गना हैं। इनमें कौनसी बात तथ्य है और कौन सी अतथ्य यह एक विचारणीय विषय है। जहाँ तक सिंहल से पद्मावती का सम्बन्ध है, डा० श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा तक इसे सिंगोली का ठिकाना मानने के लिये विवश हुए हैं।

जो विद्वान् पद्मावती की ऐतिहासिकता स्वीकार नहीं करते उनकी संख्या पर्याप्त है। डा० किशोरीशरण-लाल ने कुछ वर्ष हुए पद्मावती की ऐतिहासिकता का खण्डन किया था। अब इस पक्ष का अंतिम और सबसे अधिक व्यापक विमर्श डा० कालिकारञ्जन कानूनगो ने प्रस्तुत किया है[१]। उनकी मुख्य युक्तियाँ निम्नलिखित हैं :—

१-Studies in Rajput history—A Critical analysis of the Padmavati legend.

(क) कथाओं मे पद्मिनी के विषय मे कोई ऐकमत्य नहीं है। इसके पिता का नाम विभिन्न रूप में प्राप्त है। जायसी ने इसके पति का नाम रतनसेन तो टॉडने भीमसिंह दिया है। डा० ओझा ने उसके पति का नाम रत्नसिंह माना है, किन्तु वे उसके लिये कोई प्रमाण उपस्थित न कर सके है।

(ख) बरनी, इसामी, निजामुद्दीन आदि मुसलमान इतिहासकारों ने कहीं पद्मिनी के नाम का उल्लेख नहीं किया है।

(ग) डा० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव ने खजाइनुल फ़ुतूह के आधार पर पद्मिनी की सत्ता को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। वास्तव मे इस ग्रन्थ मे पद्मिनी की ओर किञ्चिन्-मात्र भी सकेत नहीं है।

(घ) पद्मिनी सर्वथा जायसी की कल्पना है, और पद्मिनी-विषयक जितने उल्लेख है वे सब जायसी के बाद के है।

उपर्युक्त युक्तियों में अनेक सत्य होती हुई भी अनैकान्तिक है। पद्मावती-विषयक प्रायः सभी प्राप्त कथाएँ घटनाकाल से दो सौ वर्ष से भी अधिक बाद की हैं। इस दीर्घकाल में वंशादि के विषय में कुछ भ्रान्तियाँ स्वाभाविक हैं। पद्मावती और सिंहल का सम्बन्ध कुछ कवि-समय सिद्ध से है। रहा पति का नाम; इस विषय में भ्रान्ति केवल उन्नीसवीं शताब्दी के लेखक टॉड को रही है। महारावल रत्नसिंह के समय का वि० सं०

१३५६ माघ सुदि ५ बुधवार का एक शिलालेख प्राप्त है। अलाउद्दीन ने संवत् १३५६ माघ सुदि के दिन चित्तौड़ पर प्रयाण किया और वि० स० १३६० भाद्रपद सुदि १४ के दिन किला फतह हुआ। इन प्रमाणों से निश्चित रूप मे कहा जा सकता है कि वि० स० १३५६-६० मे रत्नसिंह ही मेवाडका राजा था और उसी ने अलाउद्दीन से युद्ध किया। यदि पद्मिनी अलाउद्दीन के आक्रमण के समय चित्तौड की रानी थी तो उसका पति वि० स० १३५६ के शिलालेख का यही 'महा-राजकुल रत्नसिंह रहा होगा। इतिहास के विद्यार्थियों को यह कह कर भ्रान्त करने की आवश्यकता नहीं है कि मेवाड के इतिहास से हमे चार रत्नसिंह ज्ञात हैं। अतः हम यह निश्चित ही नहीं कर सकते कि इनमे कौन पद्मिनी का पति रहा होगा।

दूसरी युक्ति केवल मौन के आधार पर है। वास्तव में राजपूत इतिहास का मुसल्मान इतिहासकारों को ज्ञान ही कितना है कि हम कह सकें कि प्रामाणिक इतिहास इतना ही है; इससे अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। स्वय अलाउद्दीन के विषय में अनेक बातें है जिनका वर्णन हिन्दू लेखकों ने किया है, किन्तु बरनी इसामी आदि जिनके बारे मे सर्वथा मौन हैं[१]। खीची

१०—हमारे 'प्राचीन चौहान राजवश' में हम्मीर और कान्हडदेव के वर्णन पढ़ें।

अचलदास की वचनिका मे अनेक ऐसे जौहरों का उल्लेख है जिनका वर्णन हमे मुसल्मानी तवारीखों मे नहीं मिलता[१]। हम जिस प्रकार मुसल्मानी तवारीखों के मौन के कारण उन्हें असत्य मानने के लिए विवश नहीं है, उसी तरह उनका मौन हमे पद्मिनी को भी कल्पित मानने के लिए विवश नहीं करता।

डा० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव ने खजाईनुल फुतूह के आधार पर पद्मावती की सत्ता का प्रमाण उपस्थित किया था। डा० कानूनगो ने उसका निराकरण किया है। खजाइनुल फुतूह के वर्णन का साराश बहुत कुछ अमीरखुसरो के ही शब्दों मे निम्नलिखित है[२]।

८ जमादि उस सानी, हि० स० ७०२ सोमवार के दिन विश्वविजयी (अलाउद्दीन) ने चित्तोड जीतने का निश्चय किया। दिल्ली से सेना चित्तौड की सीमा पर पहुँची। दो महीने तक 'तलवारों की बाद पहाड की कमर तक चढी पर आगे न बढ सकी।' उसके बाढ मगरिबियों से दुर्ग पर पत्थरों की वर्षा होने लगी। ११ मुहर्रम, हि० स० ७०३ सोमवार के दिन 'उस युग का सुलेमान' [अलाउद्दीन] दुर्ग मे पहुँचा। "यह भृत्य [अमीर खुसरो] जो सुलेमान का पक्षी है उसके

१—श्री नरोत्तमदास जी स्वामी द्वारा सपादित अचलदास खीचीरी वचनिका में हमारी भूमिका पढें।

२—देखें जर्नल ऑफ इण्डियन हिस्ट्री, जिल्द ८, पृष्ठ ३६९-३७१

साथ था। वे बार बार 'हुदहुद हुदहुद' चिल्ला रहे थे। किन्तु मैं [अमीर खुसरो] वापस न लौटा, क्योंकि मुझे डर था कि शायद सुल्तान पूछ बैठे, 'मुझे हुदहुद क्यों नहीं दिखाई पड़ता ? क्या वह अनुपस्थित है ?' और यदि वह ठीक कैफियत मांगे तो मैं क्या बहाना करूँगा।" उस समय वर्षाऋतु थी। "सुल्तान के क्रोध की बिजली से आहत होकर राय एडी से चोटी तक जल उठा और पत्थर के द्वार से इस तरह उछल निकला जैसे आग पत्थर से निकलती है। पानी में पड कर वह शाही शामियाने की तरफ दौड़ा। इस तरह उसने तलवार की बिजली से अपने को बचा लिया। हिन्दू कहते हैं कि बिजली पीतल के बर्तन पर अवश्य गिरती है और राय का मुँह भय के मारे पीतल सा पीला पड गया था। यह निश्चित है कि वह तलवार और बाणों की बिजली से सुरक्षित न रहता, यदि वह शाही शामियाने के दरवाजे तक न पहुँचता।"

इसी अवतरण पर टिप्पण करते हुए प्रोफेसर हबीब ने लिखा था, "हुदहुद वह पक्षी है जो सुलेमान के पास सेबा की रानी बलकिस के समाचार लाता है। यह स्पष्ट है कि सुलेमान के सेबा आदि की तर्फ संकेत के लिये पद्मिनी उत्तरदायी है[१]।" चित्तोड़ की बलकिस तो उस समय भस्म हो चुकी थी। फिर उस युग के सुलेमान, अलाउद्दीन को उसके समाचार कौन देता ? डा० कानूनगो ऊपर दिए हुए अवतरण में पद्मिनी की

१—वही पृष्ठ ३७१, टिप्पणी १

ओर कोई संकेत नहीं पाते। किन्तु सकेत वास्तव मे तो अत्य-धिक अस्पष्ट नहीं है। अन्यथा इसमे हुदहुद, शेबा, सुलेमान आदि के लिए विशेष कारण ही क्या था ?

यह अवतरण अन्य दृष्टियों से भी महत्वपूर्ण है। यह ठीक है कि इससे पद्मिनी के आरम्भिक जीवन पर कुछ प्रकाश नहीं पडता। न हम इसके आधार पर यही सिद्ध कर सकते हैं कि गोरा बादल पद्मिनी को छुडा लाए थे। किन्तु चित्तोड़ मे अन्ततः क्या हुआ इसकी झाँकी इसमे अवश्य प्रस्तुत है। चित्तोड का घेरा छः महीने तक चला। जब बचाव की आशा न रही तो राजपूत दरवाजा खोलकर शाही शामियाने की ओर बढ चले [1]। खजाइनुल फ़ुतूह से ही सिद्ध है कि अला-उद्दीन के हाथों 'हजारों' विद्रोही मारे गए। किन्तु रत्नसिंह या तो पकडा गया, या उसने आत्मसमर्पण किया। दुर्ग बादशाह के हाथ आया किन्तु जिस बलकिस की आशा मे युग का सुलेमान वहाँ पहुंचा था, वह उस समय समाप्त हो चुकी थी। वह किसी भी हुदहुद की पहुंच के बाहर थी।

रत्नसिंह की इस अतिम गति का कुछ आभास हमें नाभिनन्दन जिनोद्धार ग्रन्थ से भी मिलता है जिसका रचना-काल सन् १३३६ ई० है। उसमे अलाउद्दीन की अनेक विजयों का वर्णन करते हुए कक्कसूरि ने यह भी लिखा है कि उसने चित्रकूट के राजा को पकडा, उसका धन छीन लिया, और

१—शाही शामियाने पर कूच का वर्णन प्राय हर एक जौहर के बाद है।

कण्ठ में (रस्सी) बाध कर नगर नगर मे बन्दर की तरह घुमाया (३.४)। यह मानने की इच्छा तो नहीं होती कि मेवाड़ाधिपति को भी ऐसे दिन देखने पड़े थे। किन्तु एक सम-सामयिक और निष्पक्ष उद्धरण को असत्य कहकर टालना भी कठिन है। कहा जाता है कि महाप्रतापशाली कविजनवन्दित कविश्रेष्ठ मुञ्ज परमार की भी कभी ऐसी ही दशा हुई थी।

पद्मिनी और रतनसेन के जीवन की इस अन्तिम झाकी से पूर्व के वृत्त के लिये हमे पद्मिनी सम्बन्धी साहित्य को ही आधार रूप मे ग्रहण करना पडता है। यदि पद्मिनी सम्बन्धी सब साहित्य पद्मावत मूलक हो और पद्मावत सर्वथा कल्पनामूलक, तो पद्मावती की ऐतिहासिकता को हम वहुत कुछ समाप्त ही समझ सकते है। किन्तु वास्तव मे ऐसी बात नहीं है। जायसी ने रूपक की रचना अवश्य की है, किन्तु उसने हर एक गुण और द्रव्य के अनुरूप ऐतिहासिक पात्र चुना है। इसमें अलाउद्दीन, चित्तौड और सिहल ही नहीं, पद्मिनी और राघवचैतन्य भी ऐतिहासिक व्यक्ति है।

मन्त्रवादी के रूप मे राघव चैतन्य का उल्लेख वृद्धाचार्य प्रवन्धावली के अन्तर्गत जिनप्रभसूरि प्रवन्ध मे वर्तमान है। श्री लालचन्द भगवानदास गाँधी ने इसे पन्द्रहवीं और श्री अगरचन्द नाहटा ने सोलहवीं शती की कृति मानी है। श्री नाहटा जी ने सम्भवतः इसके संवत् १६२६ की एक प्रति भी देखी है। एपिग्राफिआ इण्डिका, भाग १, पृष्ठ १६२-१६४ में

प्रकाशित ज्वालामुखी देवी का स्तव भी राघवचैतन्य मुनि की कृति है। यह राघवचैतन्य सम्भवतः जिनप्रभसूरि प्रबन्ध के राघव चैतन्य से अभिन्न है। शार्ङ्गधर पद्धति का रचयिता शार्ङ्गधर राघव का पौत्र था और उसने अत्यन्त आदर पूर्वक श्री राघव चैतन्य के श्लोकों को उद्धृत किया है। इससे सिद्ध है कि राघवचैतन्य की ऐतिहासिकता जायसी के पद्मावत पर निर्भर नहीं है। और यही बात अब दृढता के साथ पद्मावती के विषय मे भी कही जा सकती है।

छिताई चरित्र का एक सस्करण प्रकाशित हो चुका है। दूसरा श्री अगरचन्द जी नाहटा द्वारा सम्पादित होकर शीघ्र ही इन्दौर से प्रकाशित होने वाला है। इसकी रचना के समय महानगर सारगपुर मे मलहदी शासन कर रहा था। सलहदी की मृत्यु ६ मई, सन् १५३२ के दिन हुई। इससे स्पष्ट है कि छिताई चरित की रचना इमसे पूर्व हुई होगी। विशेष रूप से ग्रन्थ रचना का वर्णन इस पद्य मे है।

पन्द्रह सइ रु तिरासी माता।
कछूक सुनी पाछली वाता ॥१०॥
सुदि आपाढ सातइ तिथि भई।
कथा छिताई जपन लई ॥

इसके अनुसार छिताई चरित की रचना वि० स० १५८३ तदनुसार सन् १५२६ ई० मे हुई। पद्मावत का रचनाकाल सन् १५०० है। अतः यह निश्चित है कि छिताई चरित अपनी

कथा के लिये पद्मावत का ऋणी नहीं हो सकता। अलाउद्दीन के देवगिरि पर आक्रमण के समय जब समरसिंह वहाँ से निकल गया और अलाउद्दीन को यह आशंका हुई कि यादवराज रामदेव की पुत्री भी वहाँ से निकल गई होगी तो उसने राघव चैतन्य से कहा—

मेरौ कहिउ न मानइ राउ।
बेटी देई न छाडइ ठाऊं ॥४२३॥
सेवा करइ न कुतबा पढई।
अहि निसि जूझि बरावर चढई।
घसि सौरसी देसतरु गयो।
अति धोखउ मेरे जीय भयो ॥४२४॥
रनथभौर देवल लगि गयो।
मेरो काज न एकौ भयो।
इउं बोलइ ढीली कउ धनी।
मइ चीत्तौर सुनी पदुमिनी ॥४५५॥
बंध्यौ रतनसेन मइ जाइ।
लइगो बादिल ताहि छंडाइ।
जो अबके न छिताई लेऊं।
तो यह सीसु देवगिरि देऊं ॥४५६॥

"राजा (रामदेव) मेरा कहना नहीं मानता। वह न बेटी देता है और न स्थान छोड़ता है। वह न सेवा करता है, और न (आधीनता सूचक) खुत्बा पढ़ता है। समरसिंह निकल

कर देशान्तर में चला गया है। इससे मेरे जी मे अत्यन्त धोखा हुआ है। मैं देवल (देवी) के लिए रणथंभोर गया; किन्तु मेरा एक काम भी सिद्ध न हुआ।" (फिर) दिल्ली के स्वामी ने कहा, "मैंने चित्तौड मे पद्मिनी की सत्ता के बारे में सुना। मैंने जा कर रत्नसेन को बाँध लिया, किन्तु बादल उसे छुडा ले गया। जो अबकी बार मैंने छिताई को न लिया तो यह सिर मैं देवगिरि को अर्पण करूँगा।"

इस अवतरण से सिद्ध है कि जायसी के पद्मावत से पूर्व ही पद्मिनी की कथा और अलाउद्दीन की लम्पटता पर्याप्त प्रसिद्ध प्राप्त कर चुकी थी। जायसी ने पद्मावती, रत्नसेन और बादल का सृजन नहीं किया। ये जनमानस मे उससे पूर्व ही वर्तमान थे। समयानुक्रम से इस कथा मे अनेक परिवर्तन भी हुए होंगे। यह सम्भव नहीं है कि पद्मावती की कर्णपरम्परागत गाथा सोलहवीं शताब्दी तक सर्वथा तथ्यमयी ही रही हो। किन्तु उसे जायसी की कल्पना मानने की व्यर्थ कल्पना को अब हम तिलाञ्जलि दे सकते है। सन् १३०२-३ में रत्नसेन (रत्नसिंह) की सत्ता निर्विवाद है। राघवचैतन्य ऐतिहासिक व्यक्ति है। परम्परा-सिद्ध पद्मावती की सत्ता भी असम्भावना की कोटि मे प्रविष्ट नहीं होती। विषय-लोलुप अलाउद्दीन, सती पद्मिनी, वीरव्रती गोरा और बादल ये सब ही तो स्वचरित्रानुरूप है। हर्पचरित में भ्रातृजाया की रक्षार्थ कामिनी-वेष को धारण कर शत्रुशिविर मे पहुँच कर

शकाधिपति को मारने वाले साहसाङ्क चन्द्रगुप्त के इतिवृत्त को पढ़ने वालों के लिए तो बादल का वीर कार्य भी भारतीय परम्परा के अनुकूल है। बादल ने केवल अपने स्वामी की रक्षा की। चन्द्रगुप्त ने तो अपनी भ्रातृजाया को बचाया और 'परकलत्रकामुक' विजयी शकराज का भी हनन किया था[1]। शौर्य और साहस के ऐसे कार्यों से भारतीय इतिवृत्त देदीप्यमान है, और इन्हीं से भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की रक्षा हुई है।

'नवीन बसन्त'
आश्विन शुक्ला चतुर्थी, दशरथ शर्मा
वि० स० २०१८

१—"अरिपुरेच परकलत्रकामुकं कामिनीवेशगुप्तश्च चन्द्रगुप्तः शकपतिम शातयत्" (पृ० १९९-२००)।
इसी पर टीका में शङ्कर ने लिखा है, "शकानामाचार्यः शकाधिपतिः। चन्द्रगुप्तभ्रातृजायां ध्रुवदेवीं प्रार्थयमानश्चन्द्रगुप्तेन ध्रुवदेवी वेष-धारिणा स्त्रीवेषजनपरिवृतेन रहसि व्यापादित इति।"

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में सतपुरुष व सतियों के जीवनचरित का बडा भारी महत्व है। महान् व्यक्तियों के उदार चरित युग-युग तक जनता के जीवन-पथ में दीपस्तंभ का काम करते है। कथानायक चाहे पौराणिक हो या ऐतिहासिक उनकी जीवन सौरभ समान रूप से जनमानस को अनुप्राणित करती रहती है। सती पद्मिनी और गोरा बादल का चरित सतीत्त्व और स्वामीधर्म का प्रतीक होने से मेवाड के कण कण में व्याप्त हो गया और विभिन्न कवियों ने उस पर काव्य बना कर श्रद्धाञ्जली अर्पण की। सं० १६४५ में कवि हेमरत्न ने, सं० १६८० में नाहर जटमल ने, फिर सं० १७०७ में लब्धोदय ने, उसके बाद कवि दलपतविजय ने 'खुमाण रासो' में सती पद्मिनी की गौरव-गाथा गायी है। इनमे हेमरत्न की कृति को छोडकर अवशिष्ट तीनों कृतियाँ इस ग्रंथ मे प्रकाशित की जा रही है। इन तीनों से पूर्ववर्ती रचना 'गोरा बादल कवित्त' है, जो प्राचीन व महत्त्वपूर्ण होने से इस ग्रंथ के पृ० १०६ में प्रकाशित किया गया है। सभी कवियों ने अपने काव्यों मे इस अज्ञात कर्तृक कृति के कवित्तों को उद्धृत कर प्रामाणिक माना है। किस कवि की कृति में कहाँ कौनसा पद्य अवतरित है यह नीचे की पंक्तियों में बताया जाता है।

गोरा बादल कवित्त का २२वाँ कवित्त हेमरत्न ने पद्याङ्क ५७ और लब्धोदय ने पृ० २८ में उद्धृत किया है।

पद्याङ्क २३ व २६ को हेमरत्न ने पद्याङ्क ६६-६६ में दिया है।

प० ३१ को हेमरत्न ने थोड़े पाठान्तर से प० ८६ में दिया है।

प० ३५ कवित्त हेमरत्न ने प० ६७ में उद्धृत किया है।

प० ४१वें छन्द को लब्धोदय ने पृ० ५८ में एवं खुमाणरासो पृ० १४३ में उद्धृत किया है।

प० ४२ व प० ४३ को हेमरत्न ने प० २५३ व प० २८८ में उद्धृत किया है।

प० ५२ को हेमरत्न ने प० ३६८ में लिया है।

प० ५८ कवित्त को हेमरत्न ने प० ३४२ में व खुमाणरासो पृ० १५५ में लिया गया है।

प० ५६-६० को हेमरत्न ने प० ३४४-४५ मे उद्धृत किया है।

प० ७२-७३-७४ को हेमरत्न ने प० ३६६-३६७ व ५६६ में लिया है।

प० ७७-७८ को हेमरत्न ने प० ६१२-१३ में एव खुमाणरासो पृ० १७६ में लिया है।

प० ८१ को हेमरत्न ने प० ६२० तथा खुमाणरासो प० १८० में उद्धृत किया है।

इस में राणा रतनसिंह को गुहिलोत व गोरा बादल को चौहान वंशीय बतलाया है। गाजन्न के पुत्र बादल की आयु २३ वर्ष की बतलाई है जो समीचीन प्रतीत होती है। इसमें

राघव को परदेशी विप्र बतलाया है जिसके पाण्डित्य से प्रभावित होकर राणा ने अपने पास रखा। एक दिन खेल में राघव के पराजित होने पर राजा ने उससे द्रव्य मागा तो वह कुपित हो गया। राजा द्वारा निर्वासित हो वह चितौड़ से निकला और उसने राणा के पैरों में वेड़ियाँ डलवाने की प्रतिज्ञा की। राघव ने मन्त्रसिद्धि द्वारा योगिनी को आराधन किया और वर प्राप्त कर दिल्ली चला गया। उसने सुलतान अलाउद्दीन को निशिचर्या मे दरवेश के भेष मे आने पर ढिल्ली का सुलतान होने का आशीर्वाद दिया और प्रतीति प्राप्त कर शाही दरबार में प्रविष्ट होकर राजमान्य हो गया। छन्द पद्याङ्क ५० मे लिखा है कि गोरा ५ वर्ष से राणा के ग्राम-ग्राम को अस्वीकार कर अपने घर बैठा है।

प्राचीनता की दृष्टि से हेमरत्न की कृति का स्थान गोरा बादल कवित्त के बाद आता है। इसके छन्द भी परवर्त्ती कवियों ने उद्धृत किये हैं। पद्याङ्क १७०-७१-७२-७३ को लब्धोदय ने पृ० ३१-३२ मे उद्धृत किये है तथा खुमाणरासो मे दलपत-विजय ने पद्याङ्क ७०-७१-७२-७३ मे उद्धृत किये है। पद्याङ्क २८८ को खुमाणरासो (पद्यांक २४६३) में उद्धृत किया है। जटमलनाहर ने इसके पद्याङ्क ५६७ छन्द को पद्याङ्क ११० मे उद्धृत किया है। लब्धोदय ने अपनी चौपाई के प्रारम्भ मे "पूरव कथा संपेख" शब्दों द्वारा जिस पूर्व रचना का उल्लेख किया है वह कृति जटमल की न होकर हेमरत्न की ही होनी

चाहिए क्योंकि वह रचना मेवाड में और विशेष कर नररत्न भामाशाह के भाई कावेडिया ताराचन्द के आग्रह से गुंफित हुई थी। अतः इसका पर्याप्त प्रचार हो गया था।

हेमरत्न के पश्चात् जटमल नाहर की गोरा बादल चौपई निर्मित हुई, यह कृति अपेक्षाकृत छोटी है और इसमें कुल १५३ छन्द हैं। इस सुन्दर हिन्दी रचना का निर्माता कवि जटमल नाहर पंजाब का निवासी था अतः हेमरत्न व लब्धोदय आदि इतर कवियों की भाति राणा वश से अभिज्ञ न होने के कारण रतनसेन को जायसी की भांति चौहान वंश का लिखा है जब कि वे गुहिलोत वंश के थे। जटमल ने राघव चेतन को सिंहलद्वीप से पद्मिनी के साथ आया हुआ लिखा है जब कि अन्य कवि उसे चित्तौड़ निवासी मानते हैं। जटमल एक कथा और भी लिखता है कि राणा ने मोहवश पद्मिनी का मुंह देखे बिना अन्नजल न ग्रहण करने को नियम ले रखा था। एक दिन वह दो घडी रात रहते राघव चेतन को साथ लेकर शिकार को चल पडा। उसके अत्यन्त तृषातुर होने पर नियम पालनार्थ राघव ने त्रिपुरा की कृपा से पद्मिनी की तादृशमूर्त्ति बनाई जिसके जंघा पर तिलका चिन्ह कर दिया। राना ने राघव के चरित्र पर संदेह लाकर घर आते ही रुष्ट होकर उसे निर्वासित कर दिया। वह योगी का भेष धारणकर वाद्य-यंत्र बजाते हुए दिल्ली पहुँचा और वनखण्डमें निवास करने लगा। एक दिन सुलतान अलाउद्दीन शिकार खेलने के लिए वन में आया तो

राघव ने संगीतध्वनि से सारे मृगों को अपने पास आकृष्ट कर लिया। शिकार न पाकर सुलतान राघव के स्थान में आया और घोड़े से उतर कर उसके पास गया। वह उसकी संगीत-कला से इतना प्रभावित हुआ कि उसे अपने साथ दिल्ली ले आया। राघव चेतन ने सुलतान से ५०० गाव प्राप्त किये ऐसा पद्मिनी चरित्र चौपई पृ० २७ मे उल्लेख है।

जटमल पद्मिनी के सौन्दर्य्य की ओर सुलतान को आकृष्ट करने के लिए जीवित शशक की कोमलता व हेमरत्न पाँख लाने का उल्लेख करता है जबकि जायसी का राघव सीधा ही सुलतान के समक्ष पद्मावती का रूप वर्णन करता है।

जटमल ने लिखा है कि सुलतान १२ वर्ष तक चित्तौड पर घेरा डाले बैठा रहा (जो कि कवि की अतिरंजना मात्र लगती है) अन्त में राघवचेतन की सलाह से सुलतान ने छलपूर्वक रतनसेन को गिरफ्तार कर लिया और प्रतिदिन उसे गढ़ के नीचे लाकर सब लोगों को दिखाते हुए राणा के कोड़े मरवाया करता जिसकी वेदना से व्याकुल हो कायरता लाकर राणा के मुंह से कवि पद्मिनी को देने के लिए खास रुक्का प्रेषण करने की स्वीकृति कराता है (कवित्त ८०) जोकि राणा और उसके राजवंश की शान के विपरीत कायरतापूर्ण कदम है। आगे चलकर जब बादल कपट प्रपच रचना द्वारा पद्मिनी को देने के प्रलोभन से सुलतान को वशवर्त्ती कर राणा को छुडाने आता है तो कवि फिर राणा द्वारा बादल को इस जघन्य कार्य

(रानी को देकर राणा को छुड़ाने) के लिए धिक्कार दिलाता है। ये दोनों बातें एक दूसरे से विपरीत हैं अतः कवि ने यहाँ विरोधाभास किया है।

जटमल तथा अन्य सभी कवियों ने पद्मिनी को सिंहलद्वीप की पुत्री बतलाया है जो निरी कवि-कल्पना मात्र है। ओझा जी के अनुसार चित्तौड़ से ४० मील पूर्व स्थित सिंघोली गांवही सिंघल होना सम्भव है। सिंहलद्वीप के जल-वायु ने पद्मिनी जैसी श्रेष्ठ लावण्यवती स्त्री पैदा की हो एवं इतने दूर से राजस्थान आई हो यह सभव नहीं। राजस्थान में जैसे पूगल की पद्मिनी प्रसिद्ध रही है उसी प्रकार सम्भव है मेवाड़ में भी सिंघोली जैसा कोई स्थान रहा हो। खुमाणरासो हमे सूचना देता है कि महाराणा राजसिंह औरंगमीर की माग मान कमध की पुत्री को व्याह कर लाया था, उस सुन्दरी को भी कवि ने पद्मिनी लिखा है, जिसने राणा को पत्र लिख कर मुसलमान के घर जाने से बचाकर अपनी रक्षा करने की प्रर्थना की थी। राणा उसे व्याह कर ले आया इसके बाद राणा शिकार के लिए गया, उसने गगा त्रिवेणी गोमती और नागद्रह को देखकर बाँध कराने के विचार से गजधर को बुलाकर शिरोपाव दिया। खुमाणरासो मे यहाँ तक का वर्णन प्राप्त है। अतः राजसिंह की पद्मिनी की भाँति रतनसेन की परिणीता पद्मिनी सती भी मेवाड़-राजस्थान मे ही जन्मी हुई वीरागना होनी चाहिए।

इस ग्रथ में कवि लब्धोदय कृत पद्मिनी चरित्र चौपई'ही सर्व प्रथम और प्रधान रचना है अतः यहाँ कवि लब्धोदय का यथाज्ञात जीवन परिचय दिया जाता है।

महोपाध्याय लब्धोदय और उनकी रचनाएँ

राजस्थानी साहित्य की श्री वृद्धि करने में जैन कवियों का योगदान बहुत ही उल्लेखनीय है। अपभ्रंश से राजस्थानी भाषा का विकास हुआ तब से लेकर अबतक सैकड़ों कवियों ने हजारों रचनाए राजस्थानी गद्य व पद्य में निर्मित की। नीति, धर्म सदाचार के साथ-साथ जीवनोपयोगी प्रत्येक विषय की राजस्थानी जैन रचनाएं मिलती है। राजस्थानी साहित्य की विविधता और विशालता जैन विद्वानों की अनुपम देन है। पन्द्रहवीं शती तक राजस्थान और गूजरात, सौराष्ट्र, कच्छ और मालवा जितने व्यापक प्रदेश की एक ही भाषा थी। तेरहवीं शती से पन्द्रहवीं शती तक की जैनेतर रचनाए बहुत ही अल्प मिलती है पर जैन कवियों की प्रत्येक शताब्दी के प्रत्येक चरण में विविध काव्य रूपों एवं शैलियों की सैकड़ों रचनाएं उपलब्ध होती है। पन्द्रहवीं शती तक की जैन रचनाएं अधिकाश छोटी-छोटी है, पन्द्रहवीं के उत्तरार्द्ध से कुछ बड़े रास रचे जाने लगे और सतरहवीं शताब्दी से तो काफी बड़े-बड़े रास अधिक संख्या मे रचे गये। रास, चौपाई, फागु, विवाहला आदि चरित-काव्य पहले विविध प्रसंगों मे व मन्दिरों आदि मे खेले भी जाते थे अतः उनका छोटा होना स्वाभाविक व जरूरी भी था पर जब रास

बड़े-बड़े रचे जाने लगे तो वे केवल गेय-काव्य रह गये, खेलने के नहीं। साधारण जनता, अपनी परिचित स्वरलहरी और बोल-चाल की भाषा में जो रचनाएं की जाती है उनको सरलता से अपना लेती है। प्राकृत संस्कृत भाषा में प्राचीन विस्तृत साहित्य होने पर भी उससे लाभान्वित होना जन साधारण के लिए सम्भव नहीं था, इसलिए बहुत कुछ उनके आधार से और कुछ लोककथाओं को धार्मिक बाना पहना कर जैन कवियों ने सरल राजस्थानी भापा में प्रचुर चरित काव्य बनाए। प्रातः, मध्यान्ह और रात्रि में उन्हीं रास, चौपाइयों को गाकर व्याख्या की जाती थी। लोकगीतों की प्रचलित देशियों में उनकी ढालें बनाई जाने से जनता उन्हें भाव-विभोर होकर सुनती और उन चरित्र-काव्यों से मिलने वाली शिक्षाओं को अपने जीवन का ताना वाना बना लेती। फलतः उस समय का लोक-जीवन इन रचनाओं से बहुत ही प्रभावित था। नीति, धर्म और सदाचार की प्रेरणा देने मे इन रचनाओं ने बहुत बड़ा चमत्कार दिखाया।

अठारहवीं शताब्दी मे अनेक राजस्थानी जैन कवि हुए हैं जिन में महोपाध्याय लब्धोदय की साहित्यसेवा चालीस पचास वर्षों तक निरन्तर चलती रही। उन्होंने छः उल्लेखनीय बड़े रास बनाए। लघु-कृतिया भी अनेक बनाई होगी किन्तु वे या तो नष्ट हो गई या किसी भंडारों में छिपी पड़ी होंगी। लब्धोदयजी का विहार मेवाड़ प्रदेश मे अधिक हुआ

और वहा के भंडारों की जानकारी भी कम प्रकाश मे आई है। उनके उल्लिखित, रासों में पद्मिनी चौपाई ही अधिक प्रसिद्धि प्राप्त है, अन्य ३ रासों की एक-एक दो-दो प्रतिया मिली हैं। तीन रासों के तो नाम व प्रतिया भी कहीं नहीं मिली, पर कवि की अन्य रचनाओं में उनकी सूचना प्राप्त होती है।

आज से ३२-३३ वर्ष पूर्व जव हमने हस्तलिखित-ज्ञान भण्डारों का अवलोकन प्रारम्भ किया और अपने संग्रहालय के लिए प्रतियों का संग्रह प्रारम्भ किया तो कवि लब्धोदय की पद्मिनी चरित्र चौ० की प्रतिया ज्ञानभंडारों मे देखने को मिली तथा हमारे सग्रह मे भी १ प्रति सगृहीत हुई। स० १९९१ मे 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' भाग १५ अङ्क २ मे श्री मायाशंकर याज्ञिक ने अपने 'गोरा वादल की वात' नामक लेख मे पद्मिनी चरित्र का सर्व प्रथम परिचय हिन्दी जगत को दिया। उनके सग्रह में इसकी एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति थी। उन्होंने पद्मावत और 'गोरा वादल की वात' के कथानक से इस पद्मिनी चरित्र मे जो अन्तर है उसका संक्षिप्त परिचय उस लेख मे दिया था। इस ग्रन्थ के रचयिता का नाम उन्होंने भ्रमवश लक्षोदय लिख दिया था और वह भूल काफी वर्षों तक दुहराई जाती रही। अतः हमने 'सम्मेलन पत्रिका' वर्ष २९ अंक १-२ मे 'जैन कवि लब्धोदय और उनके ग्रन्थ' नामक लेख प्रकाशित करके इस भूल को संशोधन करते हुए कवि की रचनाओं का परिचय भी प्रकाशित किया। सं० १९९२ में 'युगप्रधान श्रीजिन-

चन्द्रसूरि' के पृष्ठ १६३ में श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी की शिष्य-परम्परा का परिचय देते हुए इनकी दो रचनाओं का उल्लेख किया था। कवि ने दूसरी रचना गुणावली चौ० में इससे पूर्व-वर्ती ६ रचनाओं का उल्लेख किया है, इसका भी उल्लेख किया गया था पर उस समय तक हमे केवल दो ही रचनाएँ मिली थी। इसके बाद खोज निरंतर जारी थी और उसके फलस्वरूप दो रचनाओं की और प्रतियाँ मिलीं एवं दो स्तवन भी देखने में आए।

आपकी गुरु-परम्परा युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी के गुरु श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी से प्रारभ होती है। इस परम्परा में कई और भी अच्छे अच्छे विद्वान हो गए हैं जिनमें गुणरत्न व महिमोदय आदि उल्लेखनीय हैं। आपने अपने ग्रंथों मे अपनी गुरु-परम्परा का परिचय इस प्रकार दिया है :—

श्री जिनमाणिकसूरि प्रथम शिष्य, श्री विनयसमुद्र मुनीशजी।
श्री हर्षविशाल विशाल जगत मे, सुवदीता जसु सीसजी ॥व०
महोवझाय श्री ज्ञानसमुद्र गुरु, वाणी सरस विलासजी।
तासु शिष्य उवझाय शिरोमणि, श्री ज्ञानराज गुणराशिजी ॥व०
विद्यावंत अने वड भागी, सोभागी सिरदारजी।
तासु शिष्य लब्धोदय पाठक, सम्बन्ध रच्यो सुखकार जी ॥व०

[रत्नचूड मणिचूड़ चौ० प्रशस्ति]

यही परम्परा कवि ने पद्मिनी चरित्र चौ० की प्रशस्ति मे दी है जो इसी ग्रंथ के पृ० १०६ में देखना चाहिए।

जन्म समय और दीक्षा

कवि की सर्वप्रथम रचना पद्मिनी चरित्र चौपई स० १७०६ में प्रारम्भ होकर सं० १७०७ चैत्री पूनम के दिन सम्पूर्ण हुई है। इस समय ये गणि पद से विभूषित थे, अतः उनकी आयु २७ वर्ष के लगभग होना सभव है इससे इनका जन्म सं० १६८० के लगभग माना जा सकता है। आपका जन्म नाम लालचन्द था उस समय दीक्षा प्रायः लघुवय मे ही हुआ करती थी अतः दीक्षा का समय स० १६६५ के आसपास होना चाहिए। और आपका दीक्षा नाम लब्धोदय रखा गया था।

अध्ययन और विहार

आपकी गुरु-परम्परा एक विद्वद्-परम्परा थी। विनयसमुद्र वाचक पद से विभूपित थे। उनके शिष्य वाचक गुणरत्न तो जैन साहित्य के अतिरिक्त साहित्य और तर्कशास्त्र के भी अद्भुत विद्वान थे। इनके रचित १ काव्यप्रकाश टीका (श्लोक १०५००), २ सारस्वत टीका (क्रियाचन्द्रिका ४००० श्लोक) ३ रघुवश सुबोधिनी टीका (६००० श्लोक), ४ तर्कभापा (गोवर्द्धनी प्रकाशिका-तर्क तरगिणी श्लो० ७४५०) ५ शशधर के न्याय सिद्धान्त पर टिप्पण ६ मेघदूत पजिका ७ नमस्कार प्रथम पद अर्थ के अतिरिक्त १ संयतिसंधि २ श्रीपाल चौपई, दो राजस्थानी काव्य उपलब्ध है। इनमे से 'तर्कतरगिणी' की एकमात्र प्रति ब्रिटिश म्युजियम, लंदन में है और 'न्यायसिद्धान्त' की सम्पूर्ण प्रति अनूपसंस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर मे है। 'मेघदूत पंजिका' की भी

एक मात्र प्रति श्रीमोहनलालजी ज्ञानभडार, सूरत में मिली है। हर्षविशाल के शिष्य ज्ञानसमुद्र महोपाध्याय तथा उनके शिष्य ज्ञानराज भी महोपाध्याय पदविभूषित थे। पद्मिनी चरित्र चौ० की प्रशस्ति में उन्हें साधु शिरोमणि 'सकल विद्या गुण शोभता' लिखा है। अतः ऐसे गुरुओं की सेवा में रहते हुए आपने अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया, यह आपने स्वय अपनी मलयसुन्दरी चौ० में लिखा है :—

"प्रौढोपाध्याय पदधारी, श्री लब्धोदय गुण खाणिजी।
व्याकरण तर्क साहित्य छन्दकोविद, अलंकार रस जाणिजी।।६।।"

आपकी सर्व प्रथम रचना स० १७०६ उदयपुर की है उसमे आपने खरतर गच्छाचार्य श्रीजिनरगसूरिजी की आज्ञा से उदयपुर में आने का उल्लेख किया है। उसके बाद की प्राप्त सभी रचनाएँ उदयपुर, गोगूंदा, धुलेवा मे रचित है। अतः आपका विहार मेवाड प्रदेशमे ही अधिक हुआ प्रतीत होता है।

वाचक व उपाध्याय पद

आपने अपनी प्रथम रचना में अपने को गणि पद विभूषित लिखा है उसके बाद दीर्घकाल तक कोई रचना नहीं मिलती। अतः आपको वाचक पद कब मिला, नहीं कहा जा सकता पर सं० १७३९ की रत्नचूड मणिचूड़ चौ० में आपने अपने को पाठक (उपाध्याय) पद से सम्बोधित किया है। अतः इतःपूर्व आचार्य श्री द्वारा आपको उपाध्याय पद मिल चुका था। खरतर गच्छमें यह मर्यादा है कि उपाध्यायों में जो सब से बड़ा हो वह महो-

पाध्याय कहलाता है। आपके गुरु और प्रगुरु दोनों महोपाध्याय थे अतः उनकी काफी लंबी आयु थी। आपकी मलयसुन्दरी चौ०में प्रौढोपाध्याय पद का उल्लेख ऊपर आ चुका है।

रचनाएँ

राजस्थान में पद्मिनी और गोराबादल कथा की काफी प्रसिद्ध रही है और इस सम्बन्ध मे कई रचनाएँ प्राप्त होती हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ मे प्रकाशित 'गोराबादल कवित्त' सभवतः सब से प्राचीन रचना है। इसी के आसपास मलिक मुहम्मद जायसी ने 'पद्मावत' नाम का महत्वपूर्ण काव्य बनाया। अल्लाउद्दीन और पद्मिनी संबधी घटना का सर्व प्रथम उल्लेख जायसी से पूर्ववर्त्ती कवि नाराइणदास के छिताई चरित्र मे मिलता है जो सं० १५८३ में रचा गया है। जायसी के बाद स० १६४५ मे जैन कवि हेमरत्न ने गोराबादल चौ० की रचना भामाशाह के भाई ताराचन्द के लिए सादडी मे की। तदनन्तर स० १६८० में जटमलनाहर ने गोराबादल कथा* हिन्दी भाषा मे बनाई तदनन्तर कवि लब्धोदय ने 'पद्मिनी चरित्र चौपाई' की रचना की।

शील धर्म पर पद्मिनी चरित्र मेवाड़ के राणा जगतसिंह की माता जवूवती के मन्त्री खरतर गच्छीय कटारिया केसरी

---

* इसके आधार से स० २०१३ तेरापंथी संत शतावधानी श्रीधनराजजी स्वामी ने हिन्दी पद्य में 'पद्मिनी चरित्र' नामक गेय काव्य बनाया है।

के पुत्र हंसराज और भागचन्द के आग्रह से मुनि श्री लब्धोदय गणि ने पूर्व रचित कथा को देखकर पद्मिनी चरित्र चौ० की रचना स० १७०६ में प्रारम्भ कर ४६ ढाल व ८१६ गाथाओं मे स० १७०७ चैत्रीपूनम के दिन पूर्ण की। इससे पूर्ववर्त्ती रचना हेमरत्न की है उसमें 'गोराबादल कवित्त' का उपयोग हुआ है और लब्धोदय ने तो इन दोनों ही रचनाओं का उपयोग किया है। हेमरत्न की रचना मे गा० ६३२ हैं और लब्धोदय की गाथा ८१६ है। अतः कवि ने कथा प्रसङ्ग विस्तृत किया है।

इसके पश्चात् कवि ने तीन चौपाइया और भी रची थी पर वे अवतक अनुपलब्ध है। उपलब्ध रचनाओं में रत्नचूड मणिचूड चौपाई सं० १७३९ की है जो ५वीं रचना होनी चाहिए क्योंकि इसके बाद की मलयसुन्दरी चौ० में उससे पूर्व ५ चोपाई रचने का उल्लेख स्वय कवि ने किया है।

रत्नचूड मणिचूड़ की प्राचीन कथा को दान-धर्म के माहात्म्य मे कवि ने राजस्थानी पद्य (३८ ढालों) में संकलित किया है। स० १७३९ वसन्तपंचमी को उदयपुर में इसकी रचना हुई। पद्मिनी चरित्र चौ० जिस मन्त्री भागचन्द के आग्रह से बनाई गई थी उसी के आदर से यह चौपाई रची गई है। इसकी प्रशस्ति में मन्त्री भागचन्द के पुत्र व पौत्रों का अच्छा परिचय दिया गया है। मन्त्री भागचन्द के सम्बन्ध में ५ पद्य है, उससे उसका महत्व भली-भाँति स्पष्ट है। उसके पुत्र दशरथ, समरथ

और अमृत थे इनमें से समरथ के ३ पुत्र महासिंह, मनोहर दास व हरिसिंह थे। दशरथ के पुत्र आसकरण और सुजाण सिंह थे। अमृत के पुत्र गोकुलदास व इन्द्रभाण थे। इस प्रकार मन्त्री मुकुट भागचन्द का परिवार काफी बडा था। ७ पाट के बाद मेवाड में खरतर गच्छ की पुनः प्रतिष्ठा करने का श्रेय कवि ने उसे दिया है। इस रचना के समय मन्त्री भागचन्द काफी वृद्ध हो चुके थे, फिर भी उनकी धर्म भावना और शास्त्र श्रवण प्रेम ज्यों का त्यों बना हुआ था। इस चौपाई की एक मात्र प्रति 'हितसत्क ज्ञानमन्दिर' घाणेराव से अभी अभी हमें प्राप्त हुई है। काव्य बड़ा सुन्दर और रोचक है।

कवि की छट्टी चौपाई सबसे बडी कृति है—मलयसुन्दरी चौपाई। यह भी शील-धर्म के माहात्म्य पर १४२ पत्रो में रची गई है। प्रस्तुत मलयसुन्दरी चौ० सं० १७४३ श्रावण वदी १३ के दिन प्रारम्भ कर गोघूदा (मेवाड) में धनतेरस के दिन पूर्ण की। केवल ३ मास मे इतने इतने बड़े काव्य का निर्माण वास्तव मे कवि की असाधारण प्रतिभा का द्योतक है। इसकी रचना कवि के उल्लेखानुसार उनके गुरु महो० ज्ञानराज द्वारा स्वप्न* मे दी हुई प्रेरणा के अनुसार की थी। मलयसुन्दरी कथा जैन साहित्य मे काफी प्रसिद्ध है।

---

* "महोपाध्याय ज्ञानराज गुरु, कह्यो सुपन में आय।
पाँच चौपाई थे करी, ए छट्ठी करो बणाय॥"

कवि की सातवीं रचना गुणावली चौपाई ज्ञानपंचमी के माहात्म्य पर निर्मित हुई है। सं० १७४५ के मिती फाल्गुण सुदि १० को उदयपुर में कटारिया मन्त्री भागचन्द जी की पत्नी भावलदे के लिए यह रची गई थी। फा० ब० १३ को प्रारम्भ कर फा० सु० १० को अर्थात् केवल १२ दिनमें आपने यह काव्य रच डाला था।

उपर्युक्त बड़ी रचनाओं के अतिरिक्त कवि ने बहुतसी छोटी रचनाएँ अवश्य बनाई होंगी, पर हमें उनमें से केवल २ ही रचनाओं की जानकारी मिली है। प्रथम धुलेवा ऋषभ-देव स्तवन १३ पद्यों का है और उसकी रचना सं० १७१० ज्येष्ठ बदि २ बुधवार को हुई है। दूसरा ऋषभदेव स्तवन १५ गाथा का है जो सं० १७३१ मि० ब० ८ बुधवार को रचा हुआ है।

स्वर्गवास

सं० १७४५ के पश्चात् आपकी कोई रचना नहीं मिलती और उस समय आपकी आयु लगभग ६५-७० वर्ष की हो चुकी थी। अतः सं० १७५० के आस-पास आपका स्वर्गवास मेवाड-उदयपुर के आसपास हुआ होगा।

शिष्य परम्परा

कवि लब्धोदय बड़े प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनके धार्मिक उपदेशों से प्रभावित होकर अनेक भावुक आत्माओं ने उनका शिष्यत्व स्वीकार किया था। कवि ने अपने 'रत्नचूड मणिचूड़ चौपाई' और 'मलयसुन्दरी चौ०' की प्रशस्ति में अपने शिष्यों की नामावली इस प्रकार दी है :—

"शिष्य रत्नसुन्दर गणि वाचक, कुशलसिंह मन हरपइ जी।
सांवलदास शिष्य सोभागी, पासदत्त परसिद्ध जी।
खेतसी परमानन्द रूपचन्द, वाची ने जस लिद्ध जी।"
[रत्नचूड मणिचूड चौ०]

जसहर्ष शिष्य वाचक सोभागी, रत्नसुन्दर सिरदार जी।
शिष्य कल्याणसागर ज्ञानसागर, पद्मसागर पंडित श्रीकारजी॥
[मलयसुन्दरी चौ०]

कवि के शिष्य ज्ञानसागर के शिष्य भुवनधीर अच्छे विद्वान थे, इनके रचित भुवनदीपक बालावबोध सं० १८०६ में रचित उपलब्ध है।

उपर्युक्त शिष्योंमें से कुछ की शिष्य-परम्परा अवश्य ही लम्बे समय तक चली होगी व उनमे कई कवि व विद्वान भी हुए होंगे पर हमें उनकी जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी।

सवत् १७०६ से सं० १७४५ तक की रची हुई उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है कि महोपाध्याय लब्धोदय ने ४० वर्ष तक राजस्थानी भाषा और साहित्य की विशिष्ट सेवा की थी। उनकी पद्मिनी चरित्र चौ० को यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। अवशिष्ट रचनाओं के प्रकाशन से कवि की काव्य-प्रतिभा का सही मूल्याकन हो सकेगा, क्योंकि यह तो कवि की प्राथमिक रचना है, उसके बाद अन्य रचनाओं मे प्रौढ़त्व अवश्य ही मिलेगा।

प्रतिष्ठा लेख आदि

आपके जीवनचरित्र की उपर्युक्त सामग्री में हम देख चुके है कि आपका विहार विशेषकर मेवाड़ मे हुआ था। आपने वहाँ जिनमदिर, प्रभु-प्रतिमाएँ व गुरु-पादुओं की प्रतिष्ठा भी

करवायी थी। मंत्रीश्वर कर्मचन्द्र के वंशजों द्वारा निर्मापित उदयपुर की बीराणी की सेरी में स्थित ऋषभदेव जिनालय के मूल-नायक भगवान के लेख से विदित होता है कि आपके कर-कमलों से उपर्युक्त प्रतिष्ठा हुई थी। वहाँ के यतिवर्य ऋषि श्री अनूपचन्द्रजी द्वारा प्राप्त लेख यहाँ दिये जा रहे है :—

"संवत् १७४३ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्री वृहत् खरतर गच्छे प्रतिष्ठितं युगप्रधान श्री जिनरंगसूरि भट्टारकस्यादेशात् महोपाध्याय श्री ज्ञानराज गुरुणां शिष्य महोपाध्याय श्री लब्धोदय गणिभिः श्री ऋषभदेव बिम्बं कारितं च वच्छावत म० लखमी चन्देन पुत्र मं० रामचन्द्रजी भ्रातृ सा० रघुनाथ जी भ्रातृजयं सबलसिंह पृथ्वीराज बाई हरीकुमरीकया श्रेयोर्थं।

संवत् १७४३...श्री जिनरंगसूरि विजये युगप्रधान श्री जिन-कुशलसूरिणा पादुके कारिते प्रतिष्ठिते च महोपाध्याय श्रीलब्धोदय।

संवत् १७२१ (?) वर्षे चैत्र द्वादशी ...... श्री लब्धोदय गणि।

श्री जिनकुशलसूरि च० प्रतिष्ठितं महोपाध्याय श्री ज्ञान-समुद्राणा शिष्य महोपाध्याय ज्ञानराज महोपाध्याय श्रीलब्धो-दयवाचक रत्नसुन्दरयुक्त।

इसके अतिरिक्त स० १७४८ की भी एक जोड़ी चरणपादुका प्रतिष्ठित विद्यमान है। टाइल्स लगा देने से लेख अब दब गए है, एक लेख का निम्नलिखित अंश पढने में आता है :—

"शिष्य महोपाध्याय श्री ज्ञानसमुद्राणां महो० श्री ज्ञान-राजानां शिष्य लालचन्द्रोपाध्यायैः।

गोरा बादल कथा के रचयिता नाहर जटमल

कवि जटमल नाहर की गोरा बादल कथा गद्य मे होने की भ्रान्ति हिन्दी के विद्वानों मे चिरकाल तक रही है। एसियाटिक सोसायटी-कलकत्ता की जिस प्रति के आधार से यह भ्रान्ति फैली थी, उस प्रतिका निरीक्षण कर भ्रान्ति का निराकरण स्वर्गीय पूरणचन्दजी नाहर व स्वामी नरोतमदास जी के प्रयत्न से 'विशाल भारत' पोष १९९० व नागरी प्रचारणी पत्रिका वर्ष १४ अक ४ मे प्रकाशित लेखों द्वारा हुआ। यह निश्चित हो गया कि वास्तव मे जटमल ने गोरा बादल कथा पद्य मे ही लिखी थी पर उन्नीसवीं शती में गद्य में लिखे गए अर्थ के कारण जटमल के गद्यकार होने की भ्रान्त परम्परा चल पडी। उसके बाद डा० टीकमसिंह तोमरने 'गोरा बादल कथा' की एक प्रति का पाठ गलत पढ़ कर जटमल की जाति जाट होने का उल्लेख शोध प्रबन्ध मे किया जिसका निराकरण भी नागरी-प्रचारणी पत्रिका द्वारा किया गया।

हिन्दी के विद्वानों को जटमल की केवल 'गोरा बादल कथा' नामक एकही रचना की जानकारी थी। हमने जब बीकानेर के ज्ञानभंडारों का निरीक्षण किया व अपने ग्रन्थालय के लिये हस्तलिखित प्रतियों का संग्रह प्रारम्भ किया तो जटमल की अन्य कई रचनाओं की प्राप्ति हुई। फलतः हमने हिन्दुस्तानी वर्ष ८ अं० २ में 'कवि जटमल नाहर और उनके

ग्रथ' नामक लेख द्वारा जटमल की समस्त रचनाओं पर सर्व प्रथम प्रकाश डाला।

कवि जटमल नाहर ने अपना परिचय अपनी रचनाओं में इस प्रकार दिया है :—

(१) धरमसी कौ नन्द नाहर जाति जटमल नाउ।
तिण करी कथा बणाय के, बिचि सिंवला के गाउ॥
इति जटमल श्रावक कृता गोरा बादल की कथा संपूर्णा

(२) वसै अडोल 'जलालपुर', राजा थिरु 'सहिवाज',
रइयत सयल वस सुखी, जब लगि थिर ध्रू राज, ८३
तहाँ वसै 'जटमल लाहोरीं', करनै कथा सुमति मति दोरी;
'नाहर' वस न कछु सो जानै, जो सरसती कहै सो आनै, ८४

इति प्रेमविलास प्रेमलताह्व सवरसलता नाम कथा नाहर गोत्र श्रावक जटमल कृता (सं० १७५३ लिखित प्रति)

इस से सिद्ध होता है कि कवि जटमल लाहोर निवासी जैन श्रावक थे और नाहर गोत्रीय थे। आपके रचित (१) गोरा बादल कथा की रचना सं० १६८० में सिंवला ग्राम में हुई है जिसे स्वामी नरोत्तमदासजी व सूर्यकरणजी पारीक द्वारा सम्पादित कापी से यहा साभार प्रकाशित किया जा रहा है। दूसगी कथा प्रेमविलास प्रेमलता की रचना स० १६९३ भाद्रपद शुक्ला ४ रविवार को जलालपुर में हुई है। (३) बावनी—पजाबी भापा के ५४ पद्यों में है, इसे 'पंजाबी दुनिया' में गुरुमुखी में छपवा दिया है। (४) लाहोर गजल—इसमें लाहोर नगर का

महत्त्वपूर्ण वर्णन पद्य ६० में है। नगर वर्णनात्मक हिन्दी पद्य संग्रह में मुनि श्रीकान्तिसागरजी द्वारा यह प्रकाशित है। (५) स्त्री (सुन्दरी) गजल, (६) झिगोर गजल, (७) फुटकर कवितादि, हमारे संग्रह मे है। उदयपुर में एक और रचना भी देखने में आई थी।

गोरा वादल कथा की प्रशस्ति में मोछ ग्राम का उल्लेख है। कविवर समयसुन्दर कृत मृगावती रास के एक गुटके की लेखन प्रशस्ति में मोछ ग्राम एव जट्टू नाहर का उल्लेख मिलता है। अतः वह गुटका जटमल नाहर के लिखित प्रतीत होता है। प्रशस्ति इस प्रकार है :—

संवत् १६७५ वर्षे माघ सुदि ११ तिथौ शनिवारे। पतिस्याह नूरदी आदिल जहागीर राज्ये लिखतं जट्टू नाहर नागउरी मोछ ग्रामे सा० कवरपाल सुतमा वाला देवी पासा तोड़ा रंगा गंगा पुस्तिका वापणा गोत्रे। लिखत जट्टू पठनार्थं।

खुमाणरासो रचयिता दौलतविजय

खुमाणरासो के सम्वन्ध मे हिन्दी साहित्य के विद्वानों में वडी भ्रान्ति रही है। खुमाण का नाम देखकर उसका काल ९वीं शताब्दी ही रासो का रचनाकाल मान लिया गया। इस मे महाराणा प्रताप का भी वृतान्त है अतः यह धारणा वना ली गई कि इस मे पीछे से परिवर्द्धन होता रहा है अतः

वर्त्तमान रूप १६वीं शताब्दी में प्राप्त हुआ मान लिया गया। माननीय शुक्लजी जैसे विद्वान ने भी अपने इतिहास में यही लिख दिया कि—'यह नहीं कहा जा सकता कि दलपतविजय असली खुमान रासो का रचयिता था अथवा उसके पिछले परिशिष्ट का।' वास्तव मे हिन्दी के विद्वानों ने इसकी प्रति को देखा नहीं, अतः अन्य लोगों के उल्लेखों के आधार से विविध अनुमान लगाते रहे। लगभग २५ वर्ष पूर्व श्री अगरचन्द्र जी नाहटा ने वीर-गाथा-काल की बतलाई जानेवाली रचनाओं को परीक्षा की कसौटी पर रखा और जैनगूर्जर कविओ भाग १ से खुमाणरासो की १३६ पत्रों की अपूर्ण प्रति का पता लगा कर पूना के भंडारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट से प्रति को प्राप्त कर इसके तथ्यों पर सर्वप्रथम निश्चयात्मक प्रकाश डाला। 'नागरी प्रचारणी पत्रिका' वर्ष ४४ अङ्क ४ में प्रकाशित उनके लेख से वह निश्चित हो गया कि यह ग्रंथ १८वीं शताब्दी में ही रचित है कवि का नाम दलपतविजय नही पर उसका प्रसिद्ध नाम दलपत और जैन दीक्षा का नाम दौलतविजय था।

खुमाण रासो की अद्यावधि एक ही प्रति मिली है जो अपूर्ण है और उसमें महाराणा राजसिंह तक का विवरण है। टॉड के संग्रह तथा नागरी प्रचारिणी सभा में भी इसी प्रतिकी प्रतिलिपि है। कविने प्रस्तुत ग्रन्थ में अपनी गुरु-परम्परा का परिचय इस प्रकार दिया है:—

त्रिपुरा शक्ति तणे सुपसाय, रच्यो खण्ड दूजो कविराय ।
तपगच्छ गिरुआ गणधार, सुमतिसाधु वंशे सुखकार ॥
पडित पद्मविजय गुरुराय, पटोदयगिरि रवि कहेवाय ।
जयबुध शातिविजय नो शिष्य, जपे दौलत मनह जगीश॥"

अर्थात्—कवि त्रिपुरादेवी का भक्त था और तपागच्छ के सुमतिसाधुसूरि की परम्परा में पद्मविजय शिष्य जयविजय शि० शान्तिविजय का शिष्य था ।

खुमाण रासो (अपूर्ण) मे खुमाण से लेकर राजसिंह तक का ही विवरण मिलता है, पर इसके प्रथम खण्ड के अन्तिम दोहे मे महाराणा सग्रामसिंह (द्वितीय) तक का उल्लेख होने से इसकी रचना सं० १७६७ से स० १७९० के वीच मे हुई निश्चित है।

बिउ सागउ अमरेस सुत, सीसोद्यो सुवियाण ।
राण पाट प्रतपे रिधू, मन हेला महिराण ॥

खुमाण रासो के छट्ठे खण्ड मे रत्नसेन-पद्मिनी और गोरा बादल का वृतान्त आया है अतः उसे इस ग्रंथ के [पृ० १२९ से १८१] मे प्रकाशित किया गया है। यह अंश स्वामी नरोत्तमदासजी द्वारा प्राप्त श्री श्रोत्रिय के की हुई प्रेस कापी से लेकर दिया गया है अतः इसके लिए आदरणीय स्वामीजी और श्रोत्रियजी धन्यवादार्ह है।

इस ग्रंथ के पृ० १०६ में गोरा बादल कवित्त प्रकाशित किया गया है, जिसकी प्रति हमारे संग्रह में है। लब्धोदय कृत चौपई की प्रति हमारे संग्रह की है, जिसके पाठान्तर गुलाबकुमारी लाइब्रेरी, कलकत्ता स्थित बड़ौदा के गायकवाड़ ओरयण्टल-इन्स्टीट्यूट की नकल से दिये गये हैं। हमारे आदरणीय मित्र डा० दशरथ शर्मा ने अनेक कार्यों मे व्यस्त रहते हुए भी भूमिका रूप में "रानी पद्मिनी—एक विवेचन" शीघ्र लिख भेजा था, पर ग्रथ का कलेवर बढ़ जाने से उसमे और अभिवृद्धि करने के लिए उन्हें दिया गया था, जिसे उन्होंने यथासमय ठीक कर भेजा पर वह डाक की गड़बड़ी मे गुम हो गया। तब उसे पुनः नये रूप में लिख कर भेजने का कष्ट किया है। पूज्य काकाजी श्री अगरचन्द्रजी नाहटा तो इसके श्रेय के वास्तविक अधिकारी हैं ही, अतः इन सभी आदरणीय विद्वानों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करने के हेतु उपयुक्त शब्द मेरे पास नहीं है, वह तो हृदय की भाषा जाननेवाले सुधीजन स्वतः अवगाहन कर लेंगे। सुज्ञेपु किं बहुना,

कलकत्ता
पौष कृष्णा १०
पार्श्वनाथ जन्म दिवस

भँवरलाल नाहटा

पद्मिनी चौपाई का कथासार

भगवान ऋषभदेव, महावीर, शारदा और ज्ञानराज गुरू को नमस्कार कर कवि लब्धोदय सती पद्मिनी का चरित्र निर्माण करते हैं। इसमे वीर शृंगार प्रधान नवरसो का सरस वर्णन है। वीर गोरा, बादल की स्वामीभक्ति और शौर्य, सती के शीलव्रत के साथ क्षीर घृत और खाड के संयोग की भाति सुस्वादु हो जाता है। पहली ढाल में कवि ने चितौड़ का वर्णन किया है। वे कहते है—मेवाड का चितौड़ दुर्ग सब गढ़ो मे प्रधान है यह गगनस्पर्शी कैलाश से टक्कर लेता है। यहा बहुत से तापस तीर्थ, चित्रा नदी, गोमुख कुण्डादि है, कूप, सरोवर, जिनालय, शिवालय, ऊचे ऊंचे महल हैं, यह बाग बगीचों और करोडपतियों की लीलाभूमि है। चितौड मे महाराणा रतनसेन नामक प्रतापी राजा राज्य करता था। जिसकी सेवा मे दो लाख सुभट एव कई राजा थे। पटरानी प्रभावती अत्यन्त सुन्दर ओर सब रानियों मे सिरमौर थी, वह राजा की प्रियपात्र और प्रतापी कुमार वीरभाण की माता थी। रानी प्रतिदिन राजा को अपने हाथ से परोस कर प्रेमपूर्वक भोजन कराती थी। एकदिन रत्नजटित थाल मे नाना व्यंजन युक्त स्वादिष्ट भोजन आरोगते हुए हास्य-विनोद मे राणा ने कहा—

आजकल भोजन बिलकुल निरस और स्वादरहित होता है। तुम्हारी चतुराई कहा चली गई ? रानी ने तमक कर कहा—मैं तो कुछ भी नहीं जानती, मेरे में चतुराई है ही कहा ? स्वादिष्ट भोजन के लिए नवीन पद्मिनी ब्याह कर ले आइये। रानी प्रभावती के वाक्य राणा के हृदय में तीर की तरह चुभ गए, वह भोजन त्याग कर उठ खड़ा हुआ और रानी का मान मर्दन करने के निमित्त पद्मिनी से पाणिग्रहण करने के हेतु दृढ-प्रतिज्ञ हो गया।

राणा ने दो घोड़ों पर बहुत सा धनमाल लेकर खवास के साथ गुप्तरूप से चितौड से प्रस्थान किया। जब वे बहुतसी भूमि उल्लंघन कर गये तो सेवक के पूछने पर राणा ने अपनी यात्रा का उद्देश्य प्रगट किया, पर दोनों ही व्यक्ति पद्मिनी स्त्री का ठाम ठिकाना नहीं जानते थे। उन्होंने एक वृक्ष के नीचे विश्राम किया तो एक भूख-प्यास से व्याकुल पथिक आकर राणा के चरणों में उपस्थित हुआ। राणा ने उसे खान-पान और शीतोपचार से संतुष्ट किया और स्वस्थ होने पर पूछा कि तुमने कहीं पद्मिनी स्त्री का ठाम-ठिकाना देखा-सुना हो तो बताओ। पथिक ने कहा—राजन्! दक्षिण समुद्र के पार सिंघल-द्वीप मे अप्सरा की भाति पद्मिनी स्त्रियाँ होती हैं! राणा ने दक्षिण का मार्ग पकड़ा और नाना जगल पहाड़ों को उल्लघन करता हुआ खवास के साथ समुद्र तट पर पहुंचा।

राणा को दुलंध्य समुद्र को पार करने की चिन्ता मे घूमते हुए सहसा औघडनाथ योगी से साक्षात्कार हुआ। राणा ने उसे विनय-भक्ति से संतुष्ट कर पद्मिनी के हेतु सिंघलद्वीप पहुँचाने की प्रार्थना की। योगी ने अपने दोनों हाथों मे दोनों सवारों को लेकर आकाशमार्ग द्वारा सिंहलद्वीप पहुँचा दिया और स्वय अदृश्य हो गया। राणा प्रसन्नचित्त से भ्रमण करता हुआ सिंहलद्वीप की शोभा देखने लगा। जब वह नगर के मध्य भाग मे पहुँचा तो उसने ढढोरे का ढोल सुना और पूछने पर ज्ञात हुआ कि सिंहलपति की तरुण वहिन पद्मिनी उसी व्यक्ति को वरमाला पहनायगी, जो उसके भ्राता को सतरज के खेल में जीत लेगा। राणा ने पटह-स्पर्श किया, वह पद्मिनी के समक्ष सिंहलपति के साथ शतरंज खेलने लगा, पद्मिनी भी राणा के सौन्दर्य से मुग्ध होकर मनही मन उसके विजय की प्रार्थना करने लगी। पुण्य प्राग्भार से राणा ने सिंहलपति को जीत लिया, पद्मिनी की वरमाला राणा के गले मे सुशोभित हुई। सिंहलपति ने राणा के साथ पद्मिनी का पाणिग्रहण वड़े भारी समारोह से कराया और अपनी प्रतिज्ञानुसार राणा को आधा देश भडार समर्पित किया। पद्मिनी को दहेज मे हाथी, घोड़े, वस्त्रालङ्कार और दो हजार सुन्दर दासियां मिलीं। पद्मिनी तो अद्भुत रूपनिधान थी ही, उसके देह सौरभ से चतुर्दिक् भौंरे गुजार कर रहे थे। कुछ दिन सिंहलद्वीप मे रहने के पश्चात् सारे धनमाल और परिवार को जहाजो मे भरकर

राणा स्वदेश के लिए रवाने हुआ। सिंहलपति से प्रेमपूर्वक विदा लेकर राणा स्वदेश लौटा।

इधर चित्तौड़ में राणा के एकाएक चले जाने से चिन्तित वीरभाण ने माता से सत्य वृतान्त ज्ञात किया और लोगों के समक्ष राणा के जाप में बैठने की प्रसिद्धि कर स्वयं राज काज चलाने लगा। लोगों को जब छः मास से भी अधिक बीत जाने पर राणा के दर्शन न हुए तो नाना प्रकार की आशंकाएँ उठ खड़ी हुईं। इसी समय राणा रतनसेन दो हजार घोड़े, दो हजार हाथी एवं पालकियों के परिवार से परिवृत चित्तौड़ के निकट पहुँचा। पद्मिनी की स्वर्ण-कलशों वाली पालकी, मध्य में सुशोभित थी। दूर से विस्तृत सेना आती हुई देखकर परदल की आशंका से वीरभाण ने सैनिक तैयारी प्रारम्भ कर दी। इतने ही मे राणा का पत्र लेकर एक दूत राजमहल मे पहुँचा, सारा वृतान्त ज्ञात कर चित्तौड़ में सर्वत्र आनन्द छा गया और स्वागत के लिए जोर-शोर से तैयारियाँ होने लगी।

स्थान स्थान में मोतियों से वधाते हुए, ध्वजा पताका सुशोभित उल्लासपूर्ण वातावरण में महाराणा ने चित्तौड़ में प्रवेश किया। रानी प्रभावती को राणाने अपनी प्रतिज्ञापूर्ण कर दिखा दी। राणाने पद्मिनी के लिए विशाल एवं सुन्दर महल प्रस्तुत किया, जिसमे वह अपनी सखियों के साथ आनन्दपूर्वक रहने लगी। महाराणा अहर्निश पद्मिनी के प्रेमपाश में बँधा हुआ

नाना क्रीडा, विलास में रत रहता था। एक बार 'राघव चेतन' नामक प्रकाण्ड विद्वान ब्राह्मण,जोकि महाराणा द्वारा सम्मानित होने के कारण वेरोकटोक महलों मे जाया करता था, पद्‌मिनी के महलमे जा पहुँचा। महाराणा अपने क्रीड़ा-विलास के समय उसे आया देखकर कुपित हो गए और असमय में व अनाहूत आने की मूर्खता पर बहुत सी खरी-खोटी सुनाई। धक्का देकर निकाल दिये जाने पर अपमानित व्यास राघव चेतन शीघ्र ही चित्तौड़ त्यागकर दिल्ली चला गया। थोड़े दिनों में उसकी विद्वता की प्रसिद्धि शाही-दरवार तक पहुँच गई। सुलतान अलाउद्दीन ने उसे दरवार में वुलाया और प्रसन्न होकर पाँचसौ गाँव देकर अपना दरवारी वना लिया।

राघव चेतन ने राणा से प्रतिशोध लेने के लिए एक भाट और खोजे से घनिष्टता कर ली। रावचेतन ने उसे किसी प्रकार पद्‌मिनी स्त्री की वात छेडने के लिए कहा, तो भाट राज-हंस की पाँख लेकर दरवार में आया और सुलतान के किसी अनोखी वस्तु की वात पूछने पर पद्‌मिनी स्त्री के सौन्दर्य्य व सुकुमारता की प्रशंसा की। सुलतान ने कहा कि तुमने कहीं पद्‌मिनी देखी सुनी हो तो कहो। भाट ने कहा—श्रीमान् के महल मे हजार स्त्रियाँ हे जिनमे कोई अवश्य होगी। खोजे ने कहा कि रावण की लंका मे पद्‌मिनी स्त्री सुनी गई थी और तो कहीं भी ससार मे नहीं है। यहाँ तो सव संखिनी स्त्रियाँ है। भाट-खोजे के विवाद मे सुलतान ने रस लिया और पूछा

क्यों वे, हमारे महल में सभा सखिनी है ? पद्मिनी एक भी नहीं ? खोजे ने कहा—यह तो लक्षण, भेदादि के शास्त्र-मर्मज्ञ राघवचेतन ही बतला सकते हैं ! सुलतान के पूछने पर व्यास ने चारों प्रकार की स्त्रियों के गुण-लक्षणादि विस्तार से समझाये। सुलतान ने अपने महल की स्त्रियों की परीक्षा कर पद्मिनी जाति की स्त्री बताने की आज्ञा दी और उनका प्रतिबिंब देखने के लिए मणिगृह का आयोजन किया। राघव-चेतनने सबको देखकर कहा कि आपके महल में एक एक से बढ़कर रूपवती हस्तिनी, चित्रणी तो है, पर पद्मिनी स्त्री एक भी नहीं है।

सुलतान ने कहा—विना पद्मिनी स्त्री के मेरा जीवन ही वृथा है, पद्मिनी स्त्री कहाँ मिलेगी ? व्यास ! मुझे बतलाओ ! राघव चेतन ने कहा—सिंघलद्वीप मे पद्मिनी स्त्रियाँ होती है। तो सुलतानने १६ हजार हाथी और २७ लाख अश्वारोही सेना के साथ सिंहलद्वीप की ओर प्रस्थान कर दिया। समुद्र-तट पर पहुँचने पर हठी सुलतान ने सिंहलपति पर आक्रमण करके गिरफ्तार करने की आज्ञा दी। सुभट लोग नौकाओं में बैठ कर दरिया के बीच गए तो भँवरजाल में पडकर वाहण टूट-फूट गए। सुलतान ने कुपित होकर और सुभटों को भेजने की आज्ञा दी। उसे केवल एक ही धुन थी कि लाखों सेना भले ही समुद्र मे समाप्त हो जाय, पर सिंहलपति को अवश्य हराकर पद्मिनी प्राप्त की जाय ! सुभटों ने राघव चेतन से कहा—

किसी प्रकार सुलतान को लौटाने की युक्ति सोचो, अन्यथा बेकार लाखों की प्राणाहुति हो जायगी। राघव चेतन की सलाह से ५०० हाथी ५००० घोड़े, करोड़ दीनार एवं नाना प्रकार की भेंट वस्तुएँ प्रस्तुत कर अज्ञात व्यक्तियों द्वारा वाहनों मे भरकर प्रातःकाल होने से पूर्व ही समुद्र में उपस्थित कर दिये और उन्हें सिंहलपति के प्रधान लोग दण्ड स्वरूप लाये है, बतला कर विनय वचनों से सुलतान को समझाकर सुलह करा दी। सुलतान ने सिंहलपति की कथित भेंट स्वीकार कर उनके प्रतिनिधियों को सिरोपाव देकर लौटा दिया और सिंहल से आई हुई भेंट को अपनी सेना मे बाँट कर दिल्ली की ओर लौटने का आदेश दे दिया।

जव सुलतान दिल्ली आये, तो वड़ी वेगम ने कहा—आप कैसी पद्मिनी लाए हैं, हमे भी दिखाइये। सुलतान के मन में फिर पद्मिनी प्राप्त करने की तमन्ना जग उठी और राघवचेतन से कहा—सिंघलद्वीप के सिवा और कहीं पद्मिनी स्त्री हो तो बतलाओ! राघव चेतन ने कहा—चित्तौड़ के राणा रतनसेन के यहाँ पद्मिनी अवश्य है, पर शेपनाग की मणि को कौन ग्रहण कर सकता है? सुलतान ने अभिमान पूर्वक वड़ी भारी सेना तय्यार कर चित्तौड़ पर चढ़ाई कर दी। राणा की सेना ने सुलतान के साथ वडी वीरता से युद्ध किया और उसके सारे प्रयत्न विफल कर दिये। सुलतान ने सफलता पाने के लिए गुप्त छल करने का निश्चय करके अपने प्रधान पुरुषों को सुलह करने

के लिए राणा के पास भेजा। उन्होंने राणा से कहा—सुलतान चाहते हैं कि अपने परस्पर प्रीति की वृद्धि हो। अतः वे गढ़ देखकर, पद्मिनी के दर्शन व उसके हाथ से भोजन कर बिना किसी प्रकार के दण्ड, भेंट लिए वापस दिल्ली लौट जायेंगे। राणा रतनसेन कपटी सुलतान की मीठी बातों के चक्कर में आ गया और सुलतान के अधिकारियों के सुंस-प्रतिज्ञा पूर्वक कहने पर उसने थोड़े लश्कर के साथ चित्तौड़ दिखा कर गोठ जिमाने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

सुलतान अलाउद्दीन के पास व्यास राघव चेतन राणा के घर का पूरा भेदू था। उसकी मंत्रणा के अनुसार ही वह अपना कपट-चक्र संचालन करता था। सरल स्वभावी राणाने मंत्रियों को स्वागत के लिए भेजकर सुलतान को बुलाया। गढ़ के द्वारा खोल दिये गए। सुलतान तीस हजार सैनिकों के साथ गढ़ में प्रविष्ट हो गया। इतने सैनिक देख राणा के मन में खटका हुआ और उसने अपनी सेना को तैयार होने का संकेत कर दिया। सुलतान के यह कहने पर कि क्यों सेना एकत्र करते हो, हम गढ़ देखकर लौट जावेंगे, तो राणा ने कहा—अपने वचनों के विपरीत आप तीस हजार सवार क्यों लाये ? मेरी सेना के वीर इन्हें क्षण मात्र में पीस डालेंगे। सुलतान ने छलपूर्वक कहा—राणा ! आप संदेह क्यों करते हो ! मेहमान थोड़े हों या अधिक, आ जावें उनका तो सत्कार करना ही चाहिए। आज तो खाद्यपदार्थ सस्ते है, सुकाल है, यदि भोजन-

व्यय का विचार आता हो तो हम लौटे चलें। राणा ने कहा— भोजन के लिए ऐसी क्या बात है, तुच्छ बात न कहें, इससे दुगुने हों तो भी खान पान की कमी नहीं। इस प्रकार दोनों मेल-जोल से बातें करते महलों मे आये। राणा ने शाही भोजन के लिए बड़ी भारी तय्यारी की। राणा ने जब पद्मिनी को आज्ञा दी कि वह सुलतान को परोसे। तो उसने अपने जैसी ही रूप रंगवाली दासी को इस कार्य के लिए नियुक्त कर दिया। राणा के सजे हुए मंडप मे सुलतान को पद्मिनी की दासी ने नाना वेश परिवर्त्तन कर विविध व्यंजन परोसे। सुलतान उसकी रूप-माधुरी से विह्वल होकर कहने लगा—राणा के घर मे तो इतनी पद्मिनिया है, और मेरे यहा एक भी नहीं तब मेरी बादशाही मे क्या रखा है। राघव चेतन ने कहा—यह तो पद्मिनी की दासी है। पद्मिनी तो ऊँचे महलों के समृद्ध कक्ष में रहती है, उसके तो दर्शन ही दुर्लभ है। इतने ही में पद्मिनी ने सहज भाव से शाही भोजन-समारोह को देखने के लिए रत्नजड़ित गवाक्ष की जाली में से झाँका। राघव चेतन ने संकेत से पद्मिनी को दिखाया और रूप मुग्ध सुलतान को विह्वल और मूर्छित होते देख, उसे किसी युक्ति से प्राप्त करने की आशा देकर आश्वस्त किया।

भोजनान्तर राणा ने सुलतान को हाथी, घोड़े, वस्त्राभरण भेंट कर परस्पर हाथ मिलाये हुए चित्तौड़ दुर्ग मे घूम घूम कर सारे विषम घाट-स्थान दिखलाए। सुलतान ने राणा से मा-

जाये भाई के सदृश प्रेम प्रदर्शित करते हुए विदा मागी और हाथ पकड़े पकड़े प्रेमालाप पूर्वक पहुँचाने के बहाने वह उसे गढ के बाहर तक ले आया और राघव चेतन की सलाह से सुभटों द्वारा राणा को कब्जे कर गिरफ्तार कर लिया। राणा के साथ में जो थोड़े बहुत सुभट थे वे हक्के बक्के और किंकर्त्तव्य विमूढ हो गए। राणा के हाथ पैर में बेड़ी डाल दी गई। गढ में यह खबर पहुँचने पर सुभटों के बीच बैठकर वीरभाण अपना कर्त्तव्य स्थिर करने के लिए विचार विमंश करने लगा। इतने ही में दो शाही दूत आये और उन्होंने यह शाही सन्देश सुनाया कि—सुलतान पद्मिनी को प्राप्त करके ही राणा को मुक्त कर सकता है, उसे और किसी वस्तु की वाञ्छा नहीं है! यदि आप लोग पद्मिनी को नहीं दोगे, तो शाही सेना द्वारा दुर्ग को चूर कर राज्य छीन लिया जायगा। वीरभाण ने सोच-विचार कर प्रातः काल उत्तर देने का कह कर दूतों को विदा किया।

वीरभाण ने सुभटों से नाना विचार विमर्श कर निश्चय किया कि पद्मिनी को देकर राणा को छुडा लेना ही श्रेयस्कर है! निर्नायक सुभट निरुपाय होकर सत्वहीन हो गए। वीरभाण के हृदय में अपनी माता के सौभाग्य उतारने में कारणभूत पद्मिनी के प्रति सद्भाव की न्यूनता थी ही। अतः पद्मिनी के लिए अपना रास्ता स्वयं निर्धारित करने के सिवा और कोई चारा नहीं रहा। वह अपनी शीलरक्षा के लिए प्राणों

की आहूति देने के लिए प्रस्तुत थी ही, पर किसी युक्ति से राणा भी मुक्त हो जाय और उसे भी तुर्कों के कब्जे में न जाना पड़े, ऐसा उपाय सोचने लगी।

पद्मिनी ने सुना था कि गोरा बादल नामक वीर काका-भतीजा किसी बात पर राणा से नाराज होकर घर जा बैठे है और उन्होंने ग्रास-गोठ को भी त्याग दिया है। वे चित्तौड़ त्याग कर काम-काज के लिए अन्यत्र जाने को प्रस्तुत हो रहे थे, उसी समय अचानक शाही आक्रमण हो गया, अतः उन्होंने चित्तौड़ छोड़ना स्थगित कर दिया है। अपने गाँठ का खर्च खाकर वे घर पर बैठे हुए है, (खेद है) ऐसे आत्माभिमानी वीरों को कोई नहीं पूछता। अतः उपस्थित समस्या का न्यायपूर्वक हल भी कैसे हो ? पद्मिनी उनके शौर्य्य की प्रसिद्धि से प्रभा-वित हो चकडोल पर बैठकर स्वय वीर गोरा के घर गई। गोरा ने उसका स्वागत करते हुए कहा—माताजी! आज मेरे घर पधार कर आपने बडी कृपा की, घर बैठे गगा प्रवाह आने से मैं पवित्र हो गया, मेरे योग्य जो काम सेवा हो उसे फरमाइये! पद्मिनी ने दुःख भरे शब्दों में कहा—क्या करूं ? ऐसे विकट समय में सुभटों ने क्षत्रवट खो कर मुझे तुर्कों के यहाँ भेजना स्वीकार कर लिया है,अब मुझे एकमात्र आपका ही भरोसा है, मैं इसी हेतु आपके पास आई हूँ। गोरा ने कहा—माताजी! हमें कौन पूछता है ? हम तो अपनी गाठ का खर्च खाकर घर मे बैठे हैं, पर आपने हमारे घर को चरण-धूलि से पवित्र कर

दिया तो अब किसी प्रकार का भय न लाकर निश्चिन्त रहें ! आप जैसी रानी को देकर राजा को छुड़ाने का घटिया दाव खेलने से तो मर जाना ही श्रेयष्कर है ! रानी ने कहा—इस तुच्छ बुद्धि के धनी तो राजा की तरह गढ को भी खो बैठेंगे ! अतः इसीलिए मैं तुम्हारे शरण में आई हूँ। गोरा ने कहा—(तो ठीक है) मेरा भाई गाजण बड़ा भारी शूर वीर था, उसके पुत्र बादल से भी चल कर सलाह कर ली जाय !

गोरा और पद्मिनी, बादल के यहा गए। उसने सविनय जुहार करते हुए आने का कारण पूछा। गोरा ने सारा वृतान्त बताते हुए कहा कि—अपन दो व्यक्ति किस प्रकार शाही सेना को शिकस्त दें। पद्मिनी ने कहा भैया ! मैं तुम्हारे शरणागत हूँ, यदि बचा सको तो बोलो, अन्यथा एक बार मरना तो है ही, मैं हर हालत में अपनी शील रक्षा तो करूंगी ही। पद्मिनी की प्रेरणा दायक बातें सुनकर बादल ने तत्काल राणा को छुड़ा लाने की प्रतिज्ञा की। पद्मिनी कृत-कार्य होकर अपने महल लौटी। बादल की माता और स्त्री ने उसे इस दुस्साहसपूर्ण प्रतिज्ञा से विचलित करने के लिये नाना मोह जाल फैलाया पर उस दृढ-प्रतिज्ञ बादल को विचलित करना तो दूर, उलटे वीरोचित प्रेरणा उत्साह दिला कर अपने हाथों हथियार बँधा कर विदा करना पड़ा। वह काका गोरा के पास अश्वारूढ़ होकर कार्यक्षेत्र मे उतरने की आज्ञा माँगने के लिए गया। जब गोरा ने उसे अकेले न जाने का कहा तो बादल ने उसे

यह कहकर आश्वस्त किया कि युद्ध मे अपने दोनों साथ चलेंगे, अभी तो मैं केवल चास-भाष देखकर आता हूँ।

बादल तत्काल मेवाड़ी सुभटों की सभा मे पहुंचा। उसे अचानक आये देखकर सब लोगों ने खडे होकर सम्मान प्रदर्शित किया। वीरभाण कुमार आदि से खूब विचार-विमर्श करने के अनन्तर वह अकेला अश्वारूढ़ होकर शाही सेना की खबर लेने के लिए चल पड़ा। सुलतान ने जब अकेले बादल को आते देखा तो चमत्कृत होकर सम्मानपूर्वक उसे अपने पास बुलाया। बादल ने कहा मैं पद्मिनी का भेजा हुआ आया हूँ। अपना पूरा परिचय देते हुए उसने कहा—पद्मिनी ने जब से आपको देखा है, आपसे मिलने के लिए तडफ रही है, वह उस घड़ी की प्रतीक्षा मे है, जब आप से उनका मिलना होगा। यह लीजिये उसने मुझे आपको देने के लिए चिट्ठी भी दी है, जिसमे अपनी आतरिक अवस्था और विरह गाथा यत्किञ्चित प्रदर्शित की है। आपका सदेश जब पद्मिनी को आपके यहाँ भेजने के लिये गढ मे पहुचा तो सुभटो ने तो मरने मारने की तैयारी कर ली, पर मै किसी प्रकार कुंवर वीरभाण व सुभटों को समझा-बुझाकर आया हूँ और आशा करता हूँ कि आपका व पद्मिनी का मनोरथ पूर्ण करने मे मुझे अवश्य सफलता मिलेगी।

बादल के प्रस्तुत किये नकली प्रेमपत्र को पढ़कर सुलतान पानी-पानी हो गया। उसके हृदय पर इसका सीधा असर हुआ

और वह बादल की बात को सर्वथा सत्य मानकर गारूड़ी मन्त्र-प्रभावित सांप की भांति पूर्णतया उसके अधीन हो गया। सुलतान ने कहा—मेरी लाज तुम्हारे हाथ है, बादल! जिस किसी प्रकार से सुभटों को समझा-बुझाकर पद्मिनी को मेरे पास भेजने में उन्हें सहमत कर लो! सुलतान ने बादल को सिरोपाव सहित लाख स्वर्णमुद्राएं देते हुए कहा कि काम बन जाने पर तुम देखना, मैं तुम्हारी कितनी इज्जत बढ़ाऊंगा। सुलतान ने पद्मिनी को प्रेम-पत्र भेजना चाहा तो बादल ने कहा—पत्र किसी अन्य व्यक्ति के हाथ लग जाने से ठीक नहीं। अतः मैं आपके सारे समाचार मौखिक ही सुनाऊंगा। इस प्रकार बादल ने मीठे वचनों से सुलतान को प्रसन्न कर विदा ली, सुलतान उसे पोलि द्वार तक पहुंचाने आया। बादल जब प्रचुर धन राशि लेकर घर लौटा तो माता व स्त्री को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। गोराजी ने कहा—बादल अवश्य ही अपने काम में सफल होगा। पद्मिनी को भी अपने पति-मिलन का विश्वास हो गया। सब लोग उसके बुद्धिचातुर्य्य से हर्ष विभोर हो गए।

बादल ने राज-सभा में जाकर गुप्त मन्त्रणा की और तय किया कि दो हजार सुन्दर चकडोल जरी के वस्त्र और स्वर्ण-कलश मंडित तैयार हों, और प्रत्येक में दो दो शस्त्रधारी सुभट सन्नद्ध बद्ध रहें। बीच की प्रधान पालकी में गोराजी को बिठाकर पद्मिनी के रूप में उनका परिचय दिया जाय। उसे वस्त्रों

से इस प्रकार वेष्टित किया जाय कि मानों पद्मिनी के सौरभ से आकृष्ट भ्रमर-गुंजार से बचने के लिए ही ऐसा किया गया हो ! सुभटों वाली पालकियों में पद्मिनी की सखियाँ है ऐसा प्रचारित किया जाय। गढ़ से लेकर सेना पर्य्यन्त इस प्रकार पालकियाँ आयोजित हों कि उनकी कड़ी सी जुड़ जाय। इस सारे काम को सम्पन्न करने में कुछ विलम्ब करना इधर में सुलतान के पास जाकर पहले राणाजी को छुड़ा लू उसके बाद घात किया जायगा। इस प्रकार बादल अपनी सारी योजना समझा कर सुलतान के पास गया। सुलतान हर्षपूर्वक उससे मिला और पूछने लगा कि काम बनाया कि नहीं ? बादल ने कहा—किसी प्रकार समझा-बुझाकर पद्मिनी को सखियों के परिवार सहित लाया हूँ, सारी पालकियाँ गढ़ से उतर कर आ ही रही हैं। पर सब लोग इस बात से शंकित है कहीं राणा भी न छूटे और रानी भी चली जाय। अतः उनके आश्वस्त होने के लिए आपकी सेना का यहा से प्रयाण हो जाना आवश्यक है ! यदि आपको भय हो तो पाच हजार सेना अपने पास रख सकते हैं। पद्मिनी से मिलनोत्सुक सुलतान ने कहा—मैं भला किससे डरूं ? जगत मेरे से भय खाता है। तुमने भी बादल, चतुर होते हुए यह खूब कही ! उसने तुरंत चार हजार सुभटों को छोड़कर बाकी समस्त सेना को तुरन्त कूच करने की आज्ञा दे दी।

सुलतान ने पुनः बादल को सिरोपाव पूर्वक लाख स्वर्ण-

मुद्राएँ दीं। वह सारा धन घर में रख आया और सुभटों को सारे संकेत समझाकर सुखपाल के आगे आगे स्वयं चलने लगा। बादल को देखकर सुलतान ने उसे अपने पास बुलाया। संयोग की बात थी कि राघवचेतन बड़ा भारी बुद्धिमान था, पर स्वामिद्रोह के पाप के कारण उसकी बुद्धि पर पत्थर पड़ गये, अस्तु। बादल ने निवेदन किया—पद्मिनी ने संदेश भेजा है कि आपकी सब रानियों में मुझे पटरानी स्थापित करना होगा। सुलतान के सहर्ष स्वीकार करने पर वह बार-बार स्वर्णकलश वाली तथा कथित पद्मिनी के पालकी और सुलतान के बीच संदेश लाने के बहाने फिरने लगा। उसने कहा—पद्मिनी ने कहलाया है कि हमें आते-आते बहुत देर हो गई, अब कृपाकर राणाजी से एक बार अंतिम मिलन का अवसर दें, क्योंकि लोक व्यवहार में मैं उनके साथ ब्याही गई थी, तो दो बात कर, उनसे अन्तिम विदा तो ले आऊँ! सुलतान को पद्मिनी का यह शिष्टाचार योग्य लगा और उसने तत्काल राणा रतनसेन को बन्धन मुक्त-कर देने का आदेश दे दिया। जब यह शाही आज्ञा लेकर बादल राणा के पास गया तो राणा ने कुपित होकर बादल से कहा—धिक्कार हो बादल! तुमने क्षत्रियत्व को लजाने वाला यह क्या सौदा किया? स्वामीद्रोह करने के साथसाथ तुमने सदा के लिये मेरे कुल में भी कलंक लगा दिया! बादल ने कहा—चिन्ता न करें, यह खेल दूसरा है, आपके भाग्य से सब अच्छा ही होगा।

इन वचनों से राणा मन ही मन सब कुछ समझ गया। सुलतान ने उसे पद्मिनी को जल्दी विदा देने की आज्ञा दी। राणा पालकियों के बीच में से बादल के संकेतानुसार तीर की तरह निकलता हुआ तुरन्त गढ़ में जा पहुँचा। उसके सकुशल पहुँचने के उपलक्ष मे संकेतानुसार जगी नगारे निसाण बजा दिये गये। चित्तौड गढ़ मे राणा के पहुँचने से सर्वत्र हर्ष उल्लास छा गया।

जब गढ़ में नौबत बजते हुए सुने तो गोरा बादल ने समस्त सन्नद्धबद्ध सुभटों के साथ शाही सेना मे मार काट मचा दी। विस्तृत शाही सेना तो पहले ही कूच कर कोशों दूर पहुँच चुकी थी। अतः जो चार हजार सुभट सुलतान के पास थे, गोरा और बादल ने घमासान युद्ध करके उनका सफाया कर डाला। अन्त मे गोरा ने जब सुलतान पर आक्रमण किया तो वह भागने लगा। यह देख बादल ने कहा—काकाजी इस कायर निर्बल को छोड दो। भगते पर वार करना क्षात्र धर्म के विपरीत है। किले पर खड़े राणा आदि सभी लोग गोरा के वीरत्व की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे।

इस युद्ध मे गोराजी काम आये, बादल ने सुलतान को जीवित छोड़ कर शाही लश्कर को लूट लिया। दो दिन के बाद सुलतान एक खवास के साथ मारा मारा फिरता नमाज के समय लश्कर के निकट पहुंचा। खवास के खबर करने पर अमीर उमराव आकर सुलतान से मिले। उसे भूखा प्यासा

और बेहाल देखकर उन लोगों ने पूछा कि अपना कटक और पद्मिनी आदि सब कहाँ रह गये ? सुलतान ने कहा—बादल ने हमारे से धोखा किया, पद्मिनी के भरोसे आई हूई पालकियों में से सुभट कूद पड़े और हमारे लश्कर को समाप्त कर डाला। मैं तो रहमान की कृपा से बडी मुश्किल से बच पाया हूँ। मैं वस्तुतः पद्मिनी के मोहजाल में भ्रान्त हो गया था, अन्यथा हिन्दू लोगों की मेरे सामने क्या बिसात थी। इसके बाद सुलतान अपने लश्कर के साथ दिल्ली चला गया। जब बेगमों ने सुलतान से पद्मिनी दिखाने की प्रार्थना की तो उसने कहा—पद्मिनी का मुँह काला किया, खुदा की दुआ से खैरियत हुई। सुलतान की बेगमे खमा! खमा! करने लगी, माता ने कहा—स्त्री के कारण रावण जैसों का राज गया, अब तो खुदा का ध्यान करते हुए आनन्द से राज करो।

सुलतान के भगने पर रणक्षेत्र शोधकर बादल चित्तौड दुर्ग में प्रविष्ट हुआ राणा ने उसे हाथी पर बैठाकर छत्र ढुलाते हुए गढ़ में लाकर नाना प्रकार से सन्मानित किया। पद्मिनी ने आशीर्वाद की झड़ियाँ लगा दी। उसे तिलक करके मोतियों से वधाते हुए पद्मिनी ने उसे अपना भाई करके माना। क्या घरों में और क्या बाजार में सर्वत्र बादल के यशोगान किये जा रहे थे। माता ने बादल को चिरंजीवी होने का आशीर्वाद दिया और स्त्रियों ने धवल मंगलपूर्वक हर्ष व्यक्त किया। काकी ने पूछा! तुम्हारे काका ने किस प्रकार शत्रुओं से लोहा

लिया ? बादल ने कहा—माता ! काकाजी की वीरता का कहाँ तक वर्णन करूँ। उन्होंने तो शत्रुसेना का इतना सफाया किया कि मात्र सुलतान अकेला किसी प्रकार बच पाया। काकाजी का शरीर इस महायुद्ध में तिल तिल-सा छिद्रित हो गया और वे स्वर्गपुरी के मेहमान हो गये। उन्होंने गढ़ की लज्जा रखी और अपने वंशको उज्वल किया।

पति की वीरता का बखान सुनकर गोरा की स्त्री के रोम-रोम मे वीरत्व छा गया और वह पतिपरायणा सतवंती सत्त मे अभिभूत होकर बादल से कहने लगी—बेटा ! ठाकुर स्वर्ग में अकेले हैं और विलम्ब होने से अन्तर पड़ता जा रहा है। अतः अब काकी को शीघ्र ही ठिकाने लगाओ। बादल ने काकी के सत्त की प्रशंसा की। वह सुसज्जित होकर अश्वारूढ़ हुई और राम-राम उच्चारण करते हुए (गोरा के शव के साथ) अग्नि-प्रवेश कर गई।

बादल ने अपने बुद्धिबल, स्वामिभक्ति और शौर्य्य के बल पर राणा को छुडाया, दिल्लीपति को जीता और पद्मिनी की रक्षा की। उसका यश नवखण्ड मे फैला। इस तरह पद्मिनी के शील-प्रभाव और बादल के सानिध्य से रत्नसेन राणा निर्भय राज्य करने लगे।

इसके बाद कवि लब्धोदय पद्मिनी चरित्र को सुखान्त समाप्त करता है और प्रशस्ति मे अपनी गुरु परम्परा, वर्तमान आचार्य तथा राणा जगतसिंह की माता जंबूवती के प्रधान

और बेहाल देखकर उन लोगों ने पूछा कि अपना कटक और पद्मिनी आदि सब कहाँ रह गये ? सुलतान ने कहा—बादल ने हमारे से धोखा किया, पद्मिनी के भरोसे आई हुई पालकियों में से सुभट कूद पड़े और हमारे लश्कर को समाप्त कर डाला। मैं तो रहमान की कृपा से बडी मुश्किल से बच पाया हूँ। मैं वस्तुतः पद्मिनी के मोहजाल में भ्रान्त हो गया था, अन्यथा हिन्दू लोगों की मेरे सामने क्या बिसात थी। इसके बाद सुलतान अपने लश्कर के साथ दिल्ली चला गया। जब बेगमों ने सुलतान से पद्मिनी दिखाने की प्रार्थना की तो उसने कहा—पद्मिनी का मुँह काला किया, खुदा की दुआ से खैरियत हुई। सुलतान की बेगमें खमा! खमा! करने लगी, माता ने कहा—स्त्री के कारण रावण जैसों का राज गया, अब तो खुदा का ध्यान करते हुए आनन्द से राज करो।

सुलतान के भगने पर रणक्षेत्र शोधकर बादल चित्तौड़ दुर्ग में प्रविष्ट हुआ राणा ने उसे हाथी पर बैठाकर छत्र ढुलाते हुए गढ़ मे लाकर नाना प्रकार से सन्मानित किया। पद्मिनी ने आशीर्वाद की झड़ियाँ लगा दी। उसे तिलक करके मोतियों से बधाते हुए पद्मिनी ने उसे अपना भाई करके माना। क्या घरों में और क्या बाजार में सर्वत्र बादल के यशोगान किये जा रहे थे। माता ने बादल को चिरंजीवी होने का आशीर्वाद दिया और स्त्रियों ने धवल मंगलपूर्वक हर्ष व्यक्त किया। काकी ने पूछा! तुम्हारे काका ने किस प्रकार शत्रुओं से लोहा

लिया ? बादल ने कहा—माता ! काकाजी की वीरता का कहाँ तक वर्णन करूँ। उन्होंने तो शत्रुसेना का इतना सफाया किया कि मात्र सुलतान अकेला किसी प्रकार बच पाया। काकाजी का शरीर इस महायुद्ध में तिल तिल-सा छिद्रित हो गया और वे स्वर्गपुरी के मेहमान हो गये। उन्होंने गढ़ की लज्जा रखी और अपने वंशको उज्वल किया।

पति की वीरता का बखान सुनकर गोरा की स्त्री के रोम-रोम मे वीरत्व छा गया और वह पतिपरायणा सतवंती सत मे अभिभूत होकर बादल से कहने लगी—बेटा ! ठाकुर स्वर्ग में अकेले है और विलम्ब होने से अन्तर पड़ता जा रहा है। अतः अब काकी को शीघ्र ही ठिकाने लगाओ। बादल ने काकी के सत्त की प्रशंसा की। वह सुसज्जित होकर अश्वारूढ हुई और राम-राम उच्चारण करते हुए (गोरा के शव के साथ) अग्नि-प्रवेश कर गई।

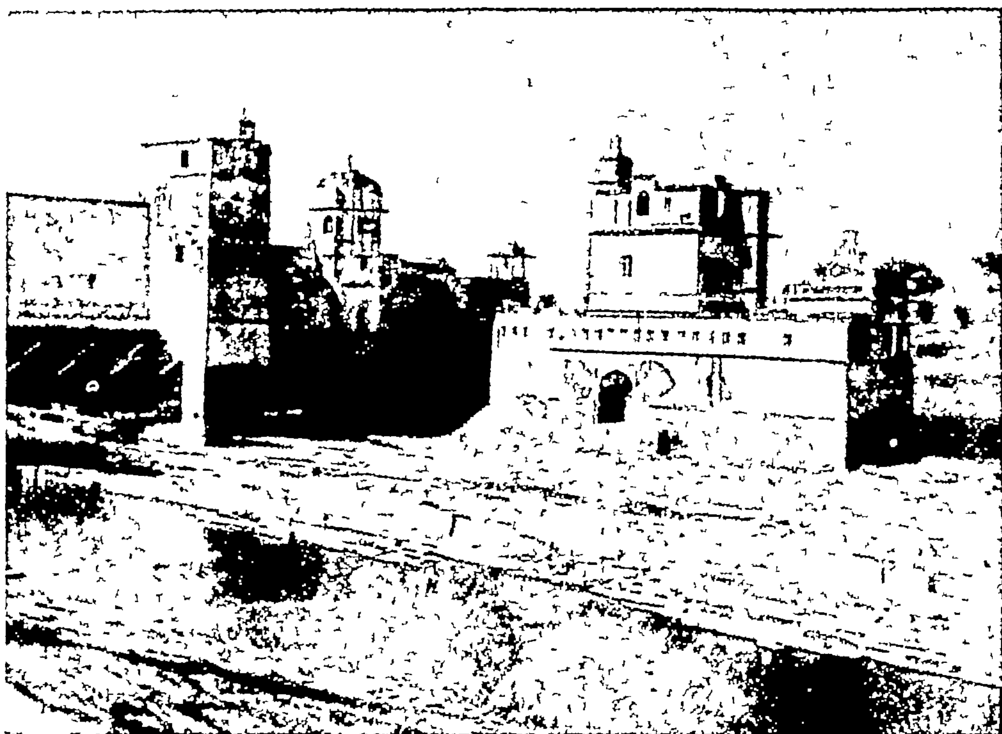
बादल ने अपने बुद्धिबल, स्वामिभक्ति और शौर्य्य के बल पर राणा को छुडाया, दिल्लीपति को जीता और पद्मिनी की रक्षा की। उसका यश नवखण्ड मे फैला। इस तरह पद्मिनी के शील-प्रभाव और बादल के सान्निध्य से रत्नसेन राणा निर्भय राज्य करने लगे।

इसके बाद कवि लब्धोदय पद्मिनी चरित्र को सुखान्त समाप्त करता है और प्रशस्ति मे अपनी गुरु परम्परा, वर्त्तमान आचार्य तथा राणा जगतसिंह की

कटारिया मंत्री भागचंद—जो इस रचना के प्रेरक थे—के वंश का परिचय देता है। अलाउद्दीन के पुनराक्रमण और पद्मिनी के जौहर की घटनाओं के सम्बन्ध में लब्धोदय तथा दूसरे सभी कवि मौन है।

मलिक मुहमद जायसी के 'पद्मावत' में लिखा है कि राणा को सुलतान अलाउद्दीन गिरफ्तार कर दिल्ली ले गया था पर जटमल प्रतिदिन गढ के नीचे राणा को लाकर उसके कोड़े मरवाने का उल्लेख करता है। तथा लब्धोदय आदि ने भी स्पष्ट लिखा है कि राणा को शाही शिविर में कैद किया गया था, और छुडा कर लाने की सारी घटनाएँ और संकेत इसी बात को पुष्ट करते है। नाभिनंदनोद्धार प्रबन्ध (रचना सं० १३७३) में श्री कक्कसूरि चित्रकूटपति को पकड कर गले में रस्सी बाँध कर नगर नगर में घुमाने का उल्लेख करते हैं जो चित्रकूट से अन्यत्र गमन के पक्ष में है। संभव है यह घटना पुनराक्रमण से सम्बन्धित हो। ऐतिहासिक तथ्यों को शोध कर प्रकाश में लाना विद्वानों का काम है।





पद्मिनी महल, चित्तौड

[फोटो—सार्वजनिक संपर्क विभाग-राजस्थान]

कवि लब्धोदय कृत

पद्मिनी चरित्र चौपई

प्रथम खण्ड

मंगलाचरण

दोहा

श्री आदीसर प्रथम जिन, जगपति ज्योति सरूप।
निरभय[1] पद वासी नमु, अकल अनंत अनूप ॥ १ ॥
चरण कमल चितस्युं नमुं, चउवीसम जिणचंद।
सुखदायक सेवक भणीं, साचो सुरतरु कंद ॥ २ ॥
सुप्रसन सामणि सारदा, होयो[2] मात हजूर।
बुद्धि दियो मुझ नै बहुत, प्रगट वचन पंडूर ॥ ३ ॥
ज्ञाता दाता दान[3] धन, 'ज्ञानराज' गुरुराज।
तास प्रसाद थकी कहुं, सती चरित सिरताज ॥ ४ ॥

कथा-प्रसङ्ग

गौरा बादल अति सगुण[4] सूर वीर सिरदार।
चित्रकूट कीधो चरित, स्वामीधर्म साधार ॥ ५ ॥
सरस कथा नवरस सहित, वीर शृंगार विशेष।
कहस्युं कवित कल्लोल स्युं, पूरव कथा संपेख ॥ ६ ॥
पदमणी पाल्यो शीलव्रत, बादल गौरा वीर।
शील वीर गावत सदा, खांड मिली घृत खीर ॥ ७ ॥

१—निरभय २ हुइज्यो ३ ज्ञानधर ४ गुणी

ढाल १—चउपई नी, राग रामगिरी

चित्तौड़-वर्णन

देश वड़ो 'मेवाड' दयाल, प्रारथिया दुखियां प्रतिपाल।
'चित्रकूट' तिहा चावो अछै, पहोवी गढ़ वीजा तसु पछै ॥१॥
गावै मीठे सुर गंधर्व, सुरनर किन्नर देखे सर्व।
तापस तीर्थ तिहा अति कह्या, राम जिहां वनवासै रह्या ॥२॥
ऊंचो गढ लागो आकास, हर भूल्यो जाण्यो कविलास।
हर राणी तव कीधो हास, हिम[1] गढ चढ़ीयो[2] हेमाचल पास ॥३॥
वले[3] अति वाको छै गढ घणो, ऊंची पोलि अनैं सोहामणो।
कोसीसा जे ऊंचा कीया, गयण आलंवन थाभा दिया ॥४॥
वहैं नदी सीप्रा[4] विस्तार, कूप सरोवर[5] वावि अपार।
गौमुखकुंड प्रमुख वहुकुंड, पाणी जास पीइं पट खंड ॥५॥
संचा वस्त अनेको तणा, का न रहइ मननी कामिणा।
ऊंचा तोरण महल अनेक, एक-एक थी अधिका एक ॥६॥
सोवन दण्ड धजा करि सोहता, मनड़उ भविक तणा मोहता।
दीपैं तिहां जिन शिव देहरा, मोटा सिहर सरद मेहरा ॥७॥
वारू चउरासी वाजार, हुँसी वैठा हारो हार।
राज महल अति रलीयामणा, पुण्य विना ते नहिं पावणा ॥८॥
च्यारे वर्ण वसइ अति चंग, पवन अढारें मन नें रंग।
माणिकचउक न लहै माग, वन वाड़ी फल फूल्या वाग ॥९॥

---

१ हिम २ रच्यौं ३ वलय तीन ४ चित्रा ५ कूवा सरवर

इन्द्रपुरी जाणे अवतरी, कोडीधज लोके करि भरी।
नगर वर्णनो नावे पार, देव रचई[1] ए गढ सार ॥१०॥
चतुर सुणयो देइ नइं चित्त, गुर मुख ढाल अरथ सुपवित्त।
'लब्धोदय' कहै पहली ढाल, आगइ सुणता अछै रसाल ॥११॥
[सर्व गाथा १८]

राजा वर्णन

दोहा

सूर वीर अति साहसी, सब राई मइ सिरमौर।
'रतनसेन' राणो तिहा, जा सम भूप न और ॥ १ ॥
जाकइ तेज प्रताप थइं, दुरजन[2] भागे सब दूर।
अंधकार कैसे रहइ, उदइ होइ जीहा सूर ॥ ३ ॥
अविचल आज्ञा अवनि परि, न्याय निपुण निरभीक।
अरिगज भंजन केसरी, राखे खत्रीवट लीक ॥ ३ ॥
मानी मरदाना वली, दरवारइ दोय लाख।
सुभट खड़ा सेवा करइं, सुरपति वदइ ज्युं साख ॥ ४ ॥
हय गय रथ पायक हसम, करि न सकें कोउ मान।
रयण दूयुस ठाढइ रहे, सनमुख सब राय राण ॥ ५ ॥

पटराज्ञी वर्णन

पटराणी 'परभावती', रूपे रम्भ समान।
देखत सुरनर किन्नरी, अइसी नारि न आन ॥ ६ ॥

---

१ नीमीयो २ अरिजन गये ज दूर

चंदवदन गजराज गति, पनग वेणि मृग नयण।
कटि लचकनी कुच भार तइं, रति अपछर हुइं अयन ॥७॥

ढाल २ योगिना रा गीतनी राग-मल्हार

राणी अवर राजा तणें जी, रूप निधान अनेक।
पिण मनड़ो परभावती जी, रंज्यो करीय विवेक। राजेसर ॥१॥
चतुराई चित दीध. राजेसर, मन मोती गुण वींध ॥रा० च०॥

सतर भक्ष भोजन सभें जी, नित-नित नवली[1] भाति। रा०
व्यंजन रूड़ी विध करइजी, खातां उपजै खाति। रा० ॥२॥ च०॥

रूपवंत नइ रागणी जी, गुणवंती गज गेलि।रा०।
मन राजा रो मोहीयो जी, सोक्या सहुइ ठेलि। रा० ॥३॥च०॥

भोजन तो परभावती जी, हाथ परुसइ हूॅस।रा०।
वीजी राणी वारणै जी, सहजें जात्रा सुंस।रा० ॥ ४ ॥ च० ॥

माहो माही मोहस्युं जी, रति सुख माणइ राय। स०।
खिण एक विरह नवी खमइ जी, दीठा दोलति थाय।रा०॥५॥च०॥

पालइ राम तणी परइ जी, न्यायइं राज नरेस। रा०
आप भुजा अरीअण हण्या जी, सरद कीया सहुदेस ॥६॥च०॥

राजकुमार वर्णन

जनम्यो पुत्र महाजसी जी, प्रतापी पुण्यवंत। रा०
'वीरभाण' वखते वड़ो जी, दिन दिन अधिक दीपंत॥७॥च०॥

---

1 नव नव

भोजन प्रसंग

एकण दिन भोजन समइं जी, दासी वोलैं राज । रा०
पीउ पधारो भोजन समइं जी, ठाढो होवे नाज ॥रा०॥८॥च०॥
सिंहासन सोवन तणो जी, आवै वैठा राज ।रा०।
रतन जड़ित थाली वड़ी जी, कनक कचोला वाज[1] रा०॥९॥च०॥
रुडी परइं परुसइं रसवती जी, राजा जीमइ राग ।रा०।
खाटा मीठा चरपरा जी, सखर वणाया साग ।रा०॥१०॥च०॥
कदली दल हाथैं करी जी, ढोलै सीतल वाय ।रा०॥
विचि विचि मीठी वातडी जी, जीमता घणो जीमाय॥११॥च०॥
मोसा दोसा मसकरी जी, हासै वीनती तेह ।रा०।
कहिवो हुवै ते सहु कइइ जी, भोजन अवसर जेह ॥१२॥च०॥
जीमता रूडी जुगति स्यु जी, कहि राजा किण हेत ।रा०।
स्वाद रहित सव रसवती जी, का न करो चित चेत ॥॥१३॥च०॥
आजकालिए रसवती जी, निपट करो निसवाद ।रा०।
कहि चतुराइ किहा गइ जी, कै पकस्यो परमाद ॥१४॥च०॥
तव तटकी वोली तिसइं जी, राणी मन धरि रोस ।रा०।
राणी[2] आणो का नवी जी, द्यो मति मुझनै[3] दोस॥१५॥च०॥
म्हे केलवि जाणा नहीं जी, किसो अ करीजै वाद ।रा०।
पदमणि का परणो नवी जी, जिम भोजन हुवै स्वाद ॥१६॥च०॥

---

१ साज २ नारी ३ मझउ

राजा गुरु स्त्री आगि नो जी, नवि कीजैं आसग ।रा०।
'लब्धोदय' इण परि कहें जी, बीजी ढाल सुरंग[1] ॥१७॥च०॥
[सर्व गाथा ४२]

पद्मिनी पाणिग्रहण प्रतिज्ञा

दोहा

रीसाणो ऊठ्यो तुरत, तजि भोजन तिण वार ।
राणो तो हुं रतनसी, परणुं पदमणि नारि ॥ १ ॥
मोसा तो बोल्या मुनें, जइं में राख्यो मान ।
हिवें परणुं तरुणी पदमणी, गालुं तुज्झ गुमान ॥ २ ॥
मूरिख तें मुझ नें गण्यो, वचन कह्यो अविचार ।
जो पदमणि हाथे जीमस्युं, तो आवुं तुझ वार ॥ ३ ॥
मान गहेली माननी, विरूअउ बोल्यो वयण ।
विण आदर न रहें कदे, सिंह सूर नें सयण ॥ ४ ॥

गाहा

जणणी जण वंधू, भजा गेह धणं च·धन्नं च ।
अवि माणया पुरिसा देस दूरेण छंडंति ॥ ५ ॥

दोहा

कीधी परतंज्ञा इसी, मन सेती महाराय ।
पदमणि परणुं तो घरि रहुं, नहिं तो गिरि वनराय ॥ ६ ॥

---

1 सुचग

सिंहलद्वीप प्रस्थान

ढाल (३) राग—मारू केदारो, चाल करतासुं तो प्रीति सहुँ हूँसी करै

इम चित[1]विमासी राय, अश्व दोय घन भर्या रे। अ०
साथें एक खवास, छाना नीसर्या रे। छा० ॥ १ ॥

छल करि दोन्युं असवार कि, चाकर नें धणी रे। चा०
जाता नवि जाणें कोइ कि, गया ते भूंय घणी रे॥ भू० ॥२॥

स्वामी कहूँ कारिज साच कि, सेवक इम भणें रे। से०
अणजाण्या आधि न सेठ कि, दोड्या किम वणें रे। दो० ॥३॥

विण गाम किहा थी सीम कि, मेह विण वादलइ रे। मे०
ऊखर नवि ऊगै अन्न कि, न खेती विण हलइ रे। न० ॥४॥

तिण हेतइ भाखो मुझ कि, गुझ हिरदै तणो रे। गु०
कीजै तसु उपरि काज कि, विचारी आपणो रे। वि० ॥५॥

तव बोल्यो राजा एम कि, परणुं पदमणी रे। प०
आदरि करि करिहु उपाय कि, वात कहुँ सी घणी रे। वा० ॥६॥

बोलें सेवक धन्न मो पास कि, असख्य गाने घणो रे। अ०
पिण नवि जाणुं गृह गाम कि, ठाम पदमणि तणो रे। ठा०॥७॥

थानिक जाणे विण मारग कि, कह्यो बूझ्या किणें रे। क०।
तरु तलि लीधो विश्राम कि, ते बेहु जणें रे। ते० ॥८॥

---

[1] चिंतवि मन मइं

तिण वेला पंथी एक कि, भूख त्रिस भेदीयउ रे । भू०
विण अमलें गहिलें देह कि, पंथ[1] अति देखियउ[2] रे । पं० ॥९॥

अटवी मांहि माणस एक कि, जोतां नवि जुडयो रे । जो०
तदि देख्यो राजा तेण कि, पगि आवी पड़यो रे । प० ॥१०॥

कीधा सीतल उपचार कि, अमल पाणी दीयो रे । अ०
भोजन मेवा बहु भाति कि, राय संतोषीयो रे । रा० ॥११॥

पंथीक नै कोतिक बात कि, राय पूछें वली रे । रा०
देख्यो तें पदमणी देश कि, किहा हि साभली रे । कि० ॥१२॥

सुणि राजन सिंघलद्वीप कि, दक्षिण दिशि अछै रे । द०
आडो वहैं जलधि अथाह कि, पार जेहनो न छै रे । पा० ॥१३॥

तिहा पदमणि नारि अनेक कि, रूपें अपछरी रे । रू०
सुणि राजा देइ कान कि, सीख तिण सुं करी रे । सी० ॥ १४ ॥

मनि आणियो महाराय कि॰ दीप सिंघल भणी रे । दी०
चालविया चपल तुरंग कि, पवन थी गति घणी रे । प० ॥ १५ ॥

लाघ्या गिर नगर निवाण कि, सूर अति साहसी रे । सू०
दोन्युं आया दरिया तीर कि, मन माहि अति खुशी रे म०॥१६॥

जगि पुण्य सहाइ जास कि, तास पूजें मन रली रे । ता०
मुनि 'लब्धोदय' कहै एमकि, को न सकै कली रे । को० ॥ १७ ॥

---

१ पंथ २ देखियउ

समुद्र वर्णन

दोहा

जल भरीयो दरीयो घणो, उछलता उद्धान।
कल्लोले कल्लोले थी, उदक वध्यो असमान ॥ १ ॥

मच्छ कच्छ माहि घणा, न सकें जाय जीहाज।
न चले जोरो नीरस्युं, कीज्ये किसो इलाज ॥ २ ॥

चिंता मन भूपति चतुर, स्युं कीजै जगदीस।
वेलि महा वीहामणी, पूजें केम जगीस ॥ ३ ॥

पदमणि स्युं पाणीग्रहण, विचि वारिधि अति क्रूर।
ऊखाणो साचो हुओ, वाघ नदी जल पूर ॥ ४ ॥

गुड मीठो ऊंडी नदी, आय मिल्यो ए न्याय।
हिकमति सी वीजी हिवें, कीजें कोउ उपाय ॥ ५ ॥

योगी मिलन

जावइं आघो जेहवें, सेवक लीधो साथ।
जोग पंथ साधइ जुगति, निरख्यो अउघड़नाथ ॥ ६ ॥

काने मुद्रा कनक की, आसण चीता चर्म।
लगाय विभूति तप जप करें, ते साधें शिव धर्म[1] ॥ ७ ॥

---

1 शर्म

ढाल (४)—सिहरा सिहर मधुपुरी रे, कुमरा नदकुमार रे एदेशी

राग—कालहरो

सिध साधक योगी भणी रे, जाय कीयो आदेश रे।
वार वार वीनति करी रे, लागो पाय नरेश रे ॥ १ ॥
वाल्हेसर सांमी, मानि नें तुं अंतरयामी,
मानि नें शिवगति गामी, वीनतडी मुझ मानो वा० ॥ आकणी ॥
मुझ मनि सिंघलद्वीप नी रे, पदमणि देखण चाह।
तुझ परसादे सहु हस्यें रे, हिव मुझ सी परवाह रे वा० ॥ २ ॥
विविध विनय वचने करी रे, सुप्रसन्न हुओ साम।
आँखि उघाड़ी देखीयो रे, वोलायो ले नाम रे। वा० ॥ ३ ॥
भूपति मन अचरिज थयो रे, किम जाण्यो मुझनांम।
ए ज्ञानी आयस अछै रे, पूरवस्यै मुझ हाम रे ।वा०।४।
जोगी जपे राणजी रे, तुं आयो मुझ थान।
कारिज थारो हुँ करुं रे, जो गुरु लागो कान रे ।वा०।५।
ईम कही साही समरणी रे, हाथे वेऊं असवार रे।
आयस अंवर ऊडीयो रे, लागी वार न लिगार रे ।वा०।६।

सिंहलद्वीप प्रवेश

सिंघलद्वीपे मूकि नें रे, आयस हूअउ अलोप रे।
राजा रो मन रंलीयो रे, देख्यो नगर अनोप रे ॥ वा०।७।

पद्मिनी दर्शन

सोवन महल सोहामणा रे, इन्द्रपुरी अवतार।
रतनजडित गोखें भली रे, वैठी राजकुमार रे ॥वा०८॥
साथें सखी रे झूलरें रे, गज गति चालें गेल।
चतुरा मनडो मोहती रे, साची मोहन वेलि रे।वा०॥६॥
थानिक थानिक नव नवा रे, नाटिक निरखें राय।
हय गय हाट पटण घणा रे, जोता आघा जायरे।वा०॥१०॥

ढंढेरा श्रवण

नगर मध्य आया तिसें रे, ढंढेरा नो ढोल।
राजा वाजा साभली रे, वोलै एहवा बोल रे।वा०॥११॥
पटह छवी नइं पूछीयउ रे, ढोल वाजे किण काज।
तव वोल्या चाकर तिके रे, वात सुणो महाराज रे।वा०॥१२॥
सिंहलद्वीप नो राजीयो रे, 'सिंवलसिंघ' समान।
तास वहिन पदमणी रे, रूपें रंभ समान रे॥वा०॥१३॥
जोवन लहस्या जाय छे रे, परणे नहिं ते वाल।
परतिज्ञा जे पूरवे रे, तासु ठवें वरमाल रे।वा०॥१४॥
जीपें वाधव नइं जिकोरे, ते परणै भरतार।
तिण कारण मुझ राजीयोरे, पडह दीयो तिण वार रे।वा०॥१५॥
'रतनसेन' राजा कहै रे, हुं जीपूं निरधार।
मझाखाडें रण मुखें रे, रामति कउण प्रकार रे।वा०॥१६॥
राजा मन आणंदीयो रे, रामति जीपें एह।
सुणि पंथी शेत्रुंजनी रे रामति जीपें जेह रे।वा०॥१७॥

वाचा साची आपस्युं रे, आपुं अति सनेह।
अर्द्ध राज भंडार नो रे, भग्नीपति हुइ जेह रे।वा०॥१८॥
राजा मन आणंदियो रे, रामति जीपें एह।
'लब्धोदय' कहैं सदा रे, पुण्य सहाय तेह रे।वा०॥१६॥

क्रीड़ा विजय

दोहा

'रतनसेन' राजा कहें, पूछो सिंघल भूप।
कओल थकी चूके नहिं, कीजें खेल अनूप ॥ १ ॥
सेवक जाइ विनम्यो, हरख्यो सिंघल राय।
वोलावी बहु मानसुं, बइठण दीधौ ताय ॥ २ ॥
रामति रमवा रंग स्युं, वैठा वेऊं आय।
जाणै सूर अनें ससी, मिलीया एकण ठाय ॥ ३ ॥
पासे वैठी पदमणी, कोमल कचन काय।
राणो रूडी विधि रमें, तिम तिम आवैं दाय ॥ ४ ॥
ए छै कोई राजवी, रूपवंत रति राज।
जो जीपें किम ही करी, तू तोठो महाराज ॥ ५ ॥

ढाल (५) दुंढणीया री मेवाड़ी देशी, मेवाडि देशे प्रसिद्धास्ति

रमतां हे सखि रमता रूडी रीत,
रसीयो हे सखि रसियो पदमणि मन वस्यो जी।
जीतो हे सखि जीतो हे राणो जोध,
सिंघल हे सखी सिंघल हार्यो मन उलस्यो जी ॥१॥

दोहा

पान पदारथ सुघड नर, अण तोल्या विकाय।
जिम-जिम पर भूयें संचरें, (तिम) तिम मोल मुहुंगा थाय ॥१॥
हंसा ने सरवर घणा, कुसुम घणा भमराह।
सुगुणा[1] नें सज्जन घणा, देश विदेश गयाह ॥ २ ॥

पद्मिनी विवाह

ढाल तेहिज

रगे हे सखि रगे घालै वरमाल,
घालै हे सखि घालै हे जयमुख उचरे जी ।
सिंघल हे सखि सिंघल भूप सनेह,
रूड़ी हे सखि रूडी हे साहमणि करें जी ।२।
वहिनी हे सखि वहिनी हे पद्मणि विवाह,
कीधो हे सखि कीधो लीधो जस घणो जी ।
आधो हे सखि आधो हे देस भंडार,
दीधो हे सखि दीधो कओल सुहामणोजी ।३।
दासी हे सखि दासी हे दोय हजार,
रूपे हे सखि रूपे हे रति रम्भा वणी जी ।
हाथी हे सखि हाथी हे हेवर हेम,
परिघल हे सखि परिघल द्यैं पहिरावणी जी ।४।
राणी हे सखि राणी हे अति हे सरूप,
एहवी हे सखि एहवी नारि म को अछै जी ।

---

१ सापुरिसा थानिक घणा

भमरा[1] हे सखि भमरा भमइं अनन्त,
नारी हे सखि नारि हे सहु तिण पछै जी ।५।
परिमल हे सखि परिमल महकै पूर,
वासें हे सखि वासें हे भमरा चमकीया[2] जी ।
माणस हे सखि माणस केही मात[3],
हींसे हे सखि हींसे हे देव तणा हिया जी ।६।
राणो हे सखि राणो हे अति रंढाल,
घरणी हे सखि घरणी मनहरणी वरी जी ।
मननी हे सखि मननी हे पूगी आस,
सफली हे सखि सफली परतग्या करीजी* ।७।
दिन दिन हे सखि दिन दिन नव नव भोग,
पूरें हे सखि पूरें हे सिंघल सुख सहु जी ।
रलीया हे सखि रलिया दिन नें रात,
रहतां हे सखि रहता हे दिवस बहू जी ।८।
अवसर हे सखि अवसर हे पामी राय
मागे हे सखि मांगे घर नी सीखडी जी ।
वीनती हे सखि वीनती हे तुम्ह स्युं एह,
मा सुं हे सखी मासुं हे मति करयो अड़ी जी ।।९।।

---

१ रम्भा हे सखि रम्भा रति इंद्राणी, अपछर हे सखि अपछर पदमणि रइ अछै जी २ वसिकीयाजी ३ गात

* साहसियां लच्छी हुवइ, नहु कायर पुरुषांह
कानें कुण्डल रयणमइ, मसि कज्जल नयणांह १

राजा हे सखी राजा हे सिंघल नाम,
राणी हे सखि राणी हे पहुंचावण भणी जी ।
साथें हे सखी साथे सैन्य अपार,
आवें हे सखि आवें हे तटि दरिया तणें जी ॥१०॥
पूर्या हे सखी पूरया हे सच्थल जीहाज,
वैंठा हे सखी वैंठा दोन्युं राजा रंगस्युंजी ।
पुहुँच्या हे सखी पहुँच्या हे वारिधि पार,
सेना हे सखी सेना हे घणी चतुरग स्युंजी ।११।
तंबू हे सखी तंबू हे दरीया तीर,
खाच्या हे सखि खाच्या हे दल वादल भला जी ।
महीमानी हे सखी महीमानी हे घणे हेत,
माडया हे सखी माड्या हे भोजन भला[1] जी ॥१२॥
माहो माहिं हे सखी माहो माहि हे रंग,
गाढा हे सखि गाढा सुख दोन्युं सगा जी ।
चलीयो हे सखी चलीयो हे सिंघल भूप,
पुंहुंचावी हे सखी पहुंचावी हे दरिया लगे जी ॥१३॥
जाणी हे सखी जाणी हे राणा जाति,
हरख्यो हे सखी हरख्यो हे सिंघलपति सही जी ।
सीधा हे सखि सीधा हे वंछित काज,
पद्मणी हे सखि पद्मणी हे मन मे गहगही जी ॥१४॥

१ भटकलाजी

पुण्ये हे सखी पून्ये हे सघला सुख,
रन[1] मइं हे सखि रन में हे रंग लीला लहै जी।
पामें हे सखी पामें हे नव निधि सुख,
मुनिवर हे सखी मुनिवर हे लब्धोदय कहै जी ॥१५॥

परवर्त्ती चित्तौड़ प्रसंग

दोहा

बात सुणो हिव पाछली, राजा नी मन रंग।
छानो छटक्यो भूपती, कोई न लीधो संग ॥ १ ॥
राजा विण सोभे नहीं, राज सभा ने रात।
सोझो गढ सारैं कीयो, पिण नवी[2] जाणी बात ॥ २ ॥
जाय पूछ्यो महल मे, राणी भाख्यो साच।
पद्मणि परणेवा सही, चाल्यो पालण वाच ॥ ३ ॥
सभा माहि बैठो सकज, वीरभाण वड वीर।
कूडी वातज केलवी, पालें राज सधीर ॥ ४ ॥
लोका आगें इम कहै, माहि बैठा जाप।
जपें प्रथवीपति जेहथो, पहवी वधइं प्रताप ॥ ५ ॥

ढाल ६—ता भव बधण थी छोड़ि हो नेमीसर जी, ए देसी

इम पालता राज हो राजेसर जी,
वउल्या पट खंड मास उपर वलि दिन घणा।
संकाणा मन मांहि हो राजेसर जी,
सहु कोई सेवक राणा तणा जी ॥ १ ॥

---

१ रन्नइ हे सखि रन्नइ वेलाउल लहैजी २ नवि लाधी बात

बाहिर नव-नव खेल हो रा० राति दिवस करतो रहतो खडो जी।
मुंहल मूल न देइ हो रा० मास्यो होइं रखे राजा बडो जी ॥२॥

चित्तौड़ आगमन

करता एहवी बात हो रा० राजा आयो रतन सुहामणो जी।
हेंवर दोय[1] हजार हा रा० गेंवर दोय सहस गाजे घणा जी ॥३॥
पालखी परधान हो रा० दोय हजार सहेली सुंदरी जी।
पटराणी ता बीच हो रा० सोवन कलसे पालखी करी जी ॥४॥
मदमाता मातंग हो रा० हींसे हय पायक-चल अति घणाजी।
आया ते चित्रकोट हो रा० शूरा पूरा सुभट सुहामणा जी ॥५॥
नेजा कुहक बाण हो रा० वाजे वाजा पंच शवद भला जी।
सूणीय नासें शत्रु हो रा० रजि ऊडी रवि छायो वादला जी ॥६॥
परदल आया जाणि हो रा० कोलाहल हलचल हुई अति घणीजी।
चित चमक्यो वीरभाण हो रा० धाया शूर सुभट
जूझण भणी जी ॥७॥
तेहवें नृप नउ दूत हो रा० कागल लेई राजमहलें गयो जी।
वाची सगली वात हो राजेसर जी
गढपति आयो गढ आणंद थयो जी ॥८॥

चित्तौड़ प्रवेशोत्सव

बोलावी कोटवाल हो रा० बूहारी[2] जल छास्या. वली जी।
फूल अबीर बिछाय हो रा०सिणगास्या बाजार हो सोभाभलीजी॥६॥

---

१ चार २ बुहरावैं जल छंटाव्या-गली जी

तोरण बांध्या बार हो रा० पोलि आरीसा सूरीज जलहलें जी।
बाजे गुहीर नीसाण हो रा० घरि-घरि ऊँची गूढी ऊछलेजी ॥१०॥

सोवन साखित सार हो रा० फूलमती चाले आगे हीसता जी।
सीसें तेल सिंदुर हो रा० गयवर जाणे परबत दीसताजी ॥११॥

सूहव करि सिणगार हो रा० पूरण कलस ले आवे कामनी जी।
मलपति गावै गीत हो रा०
धन दिवस आयो अम्ह गढ़ धणी जी ॥१२॥

सोवन चउक पुराय हो राजेसरजी,
मोतीया वधावे राय राणी भणी जी।

जीवो कोड़ि वरीस हो राजेसर जी,
गज गामनि असीस दीइ[1] घणी[2] जी ॥१३॥

पाए लागे दोड़ि हो रा० कुमर सकल सेवक साथें करी जी।
बात करै कुसलात हो रा० राजा प्रजा सगली राज रीजी ॥१४॥

गज चढ़े ढलकती ढाल हो रा० पाउ पधास्या राजा गढ ऊपरेंजी।
जग हूवो जसवास हो राजेसर जी,
धन राजा राणी जगि उचरैं जी ॥ १५ ॥

छठी ढाल रसाल हो रा० सामहेलें घरि आयो राजियो जी।
'ज्ञानराज' गणि सीस हो राजेसर जी,
मुनि 'लालचंद' कहै हरख्यो हीयो जी ॥ १६ ॥

दोहा

राणौ आयो रतनसी, लोक सहू आणंद ।
महिला पउधारै तरै, मेस्यौ सगलौ दंद ॥ १ ॥
जाइ मिलिया परभावती, म्हे पाली बोली वाच ।
अब था सुं ऊरण हुया, पदमणी आणी साच ॥ २ ॥

ढाल (७) रागधन्यासी, १ जाइरे जीयरा निकसि कैं एहनी देसी,
२ बात म काढो व्रत तणी ए देशी

मोटा महेल मनोहरू, पदमणी वासा जोगो रे ।
विचरै साथ सहेलीयां, भोगवती सुख भोगो रे ॥
मोटा महल मनोहरु ।आकणी।
रतनसेन राणो गयो, पटराणी ने पासै रे ।
परणे आया पदमणी, हिवै दीज्यो सवासो रे ॥२॥मो०॥
वचन तुम्हारो मैं कियो, अमनें केहो दोसो रे ।
स्वाद करी जीमस्या हिवै, करस्या केहो[1] सोसो रे ॥३॥मो०॥
वचन सुणी दीवाण ना, वीलखी हुई ते नारी रे ।
परभावती मन चिंतवै, हिवें कीज्यै किसु विचारो रे ॥४॥मो०॥
मे मारैं हाथें कियो, केहो कीजे सोसो रे ।
द्रोस जिको मुझ वचन नो, कीजे किणसु रोसोरे ॥५॥मो०॥[1]

---

1 कायापोसोरे

[1] आत्मानो मुख दोषेन, बध्यन्ते शुक सारिका । बकास तत्र न बध्यते, मौनं सर्वार्थ साधनः

प्रथम खंड प्रशस्ति

गिरुओ गच्छ खरतरतणो, जाणें सकल जीहानों रे।
गच्छनायक लायक बड़ों, जंगम युगिपरधानो रे ॥६॥मो०॥
श्री जिनरंगसूरीसरु, तसु श्राविक सिरताजो रे।
कुल मंडण कटारीया, मंत्रीसर हंसराजो रे ॥७॥मो०॥
जेहनो जस जगि महमहें, करणी सुकृत कुवेरो रे।
परम भगति गुरुदेव रा, वड़ दाता मन मेरो रे ॥८॥मो०॥
भाई डुंगरसी भलो, लघु वंधव गुण वृंदो रे।
दुखिया दलिद्र भंजणो, भागचंद कुलचंदो रे ॥९॥मो०॥
तास तणो आदर करी, संवंघ रच्यो सिरताजो रे।
पाठक ज्ञानसमुद्र तणा, शिष्य मुख्य ज्ञानराजो रे ॥१०॥मो०॥
सुपसाइं श्री गुरु तणै, 'लब्धोदय' गणि भाखै रे।
प्रथम खंड पूरौ कियो, धरम तणै अभिलाषै रें ॥११॥मो०॥

इति श्री राणा श्रीरतनसिंह पदमणी परणी पनोता प्रथम खण्ड ॥१॥[१]

---

[१] इति श्री पद्मिनी चरित्रे ढाल भाषा वध श्रीज्ञानराजगणिराजानां शिष्यमुख्य पंडित लब्धोदय गणि विरचित कटारिया गोत्रीय मंत्रीश्रीहंसराज मंत्री श्रीभागचंदानुरोधेन राणा श्री रतनसिंह पद्मणी परणयनो नाम प्रथम खड ॥१॥

द्वितीय खण्ड

मंगलाचरण

वाणी निर्मल विस्तरै, नव खडेहि नाम।
तिण हेतें श्री गुरुभणी, प्रथम करू प्रणाम ॥१॥
सुगण सुणेज्यो श्रुतिधरी, परहो तजो प्रमाद।
बीजें खंड वखाणता, सुणता उपजै स्वाद ॥२॥

पद्मिनी सौंदर्य वर्णन

ढाल १ बागलीया री

राति दिवस भीनो रहै रे, पदमणि स्युं वहु प्रेम रे रंग रसीया।
पच विषय सुख भोगवै रे, दोगंधक सुर जेम रे रंग रसीया ॥१॥
राय राणी मन बसिया, अविहड़
जिम जोडी रसिया, जिम कंचन रस रसीया।
जिम जोड़ी सारसीया रे, अविहड़ लागी प्रीत रे रग रसीया।आ०।
जीव एक नइं जूजूई रे, देही दीसें दोइ रे रंग०।
चित लागो चतुरा तणो रे, चोल तणी परि जोइ रे रंग० ॥२॥

चंदवदन ऊपरि घटा रे, सोहैं वेणीदण्ड रे रंग० ।
(अथ) मृगानयणी ऊपरइ रे, बांध्यो जाल प्रचण्ड रे रंग० ॥३॥
ताटी मरकत मणि तणी रे, अथवा जाणि भुजंग रे रंग०
घाटी मन घेरण तणी रे, पाटि वणीय सुचंग रे रंग० ॥४॥
सैंथो सिंदूरइ भस्यो रे, जाणे रविकर एक रे रंग० ।
कब[1] तम पामो एकली रे, बाधी सब धरि टेक रे रंग० ॥५॥
सीसफूल तारा भला रे, अरधचंद सम भाग रे रंग० ।
विंदी जाणे मणि धरी रे, पीवत अमृत नाग रे रंग० ॥६॥
श्रवण किना सोवन तणी रे सीप सुघट मन फंद रे रंग० ।
कुंडल रे मिसि देखवा रे, आया सूरज चंद रे रंग० ॥७॥
अणियाले काजल भरी रे, निपट रसीले नयण रे रंग० ।
चंचल चतुरा चित हरइ रे, देखत उपजै चैन रे रंग० ॥८॥
नयण कमल ऊपरि वण्या रे, भूंहा भमर समान रे रंग० ।
दीपशिखा सम नासिका रे, देखण रूप निधान रे रंग० ॥९॥
नासा शुक सोवन तणी रे, वेसर मोती जेह रे रंग० ।
आंब[2] सोवट द्यो चंच में रे, विधु वालक सस्नेह रे रंग० ॥१०॥
काया सोवन तसु तणी[3] रे, गोरा गाल रसाल रे रंग ।
आरीसा कंदर्प तणा[4] रे, चंद[5] सरीसो भाल रे रंग० ॥११॥
पाका विंव मधु समा रे, ओपित विद्रुम जाण रे रंग० ।
मामोल्या जिम रातड़ा रे, अधर सुधारस खाण रे रंग० ॥१२॥

---

१ कंचि २ अंब मउर ३ ताया सोवन तवक सा ४ नो ५ कुंकम जेवा लाल रे०

आपही बात कहें हसें म० वेसणो आप ही लेह लाल०
बिहु आलोच करता चिचै म० जावै चतुर न तेह लाल० ॥५॥

गेंरमहेंल नृप मंदिरें म० एकते नर नारि लाल०
लाज समें जावइ जिको म० ते मूरिख निरधार लाल० ॥६॥

निभ्रँछयो राघव भणी म० काढ्यो हाथ ज साहि लाल०
जाता भुँइ भारी पड़ी म० पहुतो निज घर माहि लाल० ॥७॥

राजा रूठो इम कहें म० पदमणी देखी व्यास लाल०
आँखि कढावुं एहनी म० तो मुझ ने स्याबास लाल० ॥८॥

बात सुणी राजा तणी म० एम विचारै व्यास लाल०
राजा मित्र न जाणीइ म० सिंह किसो वेसास लाल० ॥९॥

काके सौचं, द्यूतकारेषु सत्यं ज्ञाने भ्रातिः स्त्रीषु कामोपशाति
क्लीवेधैर्यं मद्यपे तत्वचिन्ता, राजा मित्रो केन दृष्टं श्रुत वा ।१

अत्यासन्न विनासाय दूरस्था निष्फला भवेत् ।
सेव्यता मध्यम भाव्नेन राजा वन्हि गुरुस्त्रियः

राजा री रीस भली नहीं म० चितचमक्यो राघव व्यास लाल०
न हुवे दोन्यु वातडी म० एक वैर नें वास लाल० ॥१०॥

आलोचे मन आपणे म० छोड्यो गढ चीतोड़ लाल०
द्रव्य देई नइ नीकल्या म० राघव चेतन जोड़ लाल० ॥११॥

त्यजेदेकं कुलस्यर्थे, ग्रामार्थे च कुलंत्यजेत् ।
ग्रामं जनपदस्यार्थे, आत्मार्थेंपृथिवी त्यजेत्

राघव चेतन दिल्ली गमन

१ दिन थोड़े दिल्ली गयो म० नगर हुओ जस नाम लाल०
योतिष जाणै अति घणो मन०
विविध विद्या गुण धाम लाल० ॥१२॥
शास्त्र अनेक वाचै भणै म० नव रस पोषइं नित लाल०
सौ सौ अरथ नवा करै म० चतुरा मोहैं चित्त लाल० ॥१३॥
बल पूरो विद्या तणो म० तेहनें स्यो परदेश लाल०
'लालचन्द' कहै साभलो म० विद्या मान नरेश लाल० ॥१४॥

शाही दरबार प्रवेश

दोहा

सद्विद्या धन सासतो, विद्या रूप सुहाग।
मान महातम[1] जस अधिक, विद्या मोटो भाग ॥१॥
पातिस्याह दिल्ली तदा, जास अखंडित आण।
अविचल तेज अलावदी, प्रतपो वारह भाण ॥२॥
एक छत्र महि भोगवैं, जस नव खंडे हि नाम।
सुर नरपति जाथें डरै, सेवकहि करै सिलाम ॥३॥
सेना सतावीस लख, भंजै अरि मड़वाह।
तिण सुणीया बांभण गुणी, तेड़ायो धरि चाह ॥४॥
श्लोक कवित अभिनव करी, आया अणंद पूर।
आदर सु आसीस द्यै, हजरति साहि हजूर ॥५॥

---

१ महतजस भोग सुख

ढाल (३) अलबेल्या नो। कहिनइ किहाथो आविया रे लाल ए चाल०

श्लोक कवित्त कथा करीरे लाल, रीझ्यो निपट[1] पतिसाहि रे सो०।
सकल लोक धन-धन कहे रे लाल, विद्यावत अथाह रे सो० ॥१॥
चतुर पंडित ब्राह्मण गुणनिलो[2] रे लाल। आकणी
पातिसाहि दिल्ली तणो रे लाल, द्यै नित मोज अनेक रे सोभागी
गाम पांचसै अति भला रे लाल,
मनमइं धरीय विवेक रे सोभागी ॥२॥च०॥
इम रहता आणंद स्युं रे लाल, दिल्लीपति रै पास रे सोभागी।
एक दिन राणा जी दीयो रे लाल,
तेह वैर चितारें व्यास रे सोभागी ॥३॥च०॥

राघव चेतन का प्रतिशोध षड़यन्त्र

वयर वाळूं हिवें माहरो रे लाल, छूडायो गढ गेहरे सो०
तो काढूं चित्रकूट थी रे लाल, अपहरी पदमणी तेहरे सो० ४
सैंमुखी काम न कीजिइं रे लाल, जे पर पूठें थायरे सो०
आलोची मन आपणै रे लाल, माड्यो एह उपाय रे सो० ॥५॥
भाईपणो एक भाट स्युं रे लाल, खोजा स्युं मन खंति रे सो०
मान दान देई घणो रे लाल, मित्र कीयो एकंति रे सो० ॥६॥
साहि तणें दरवार मे रे लाल, पदमणि केरी वात रे सो०
जिण तिण भाति काढ़ज्यो रे लाल, मुझ मन एह सुहात रे सो० ॥७॥

1—मानि 2-गुणी

एक दिन कोमल पाखड़ी रे लाल, भाट लेई निज हाथ रे सो०
आवी सभा में वीनवै रे लाल, चिरंजीवो नरनाथ रे सो० ॥८॥

अथ भाट वाक्य

॥ कवित्त ॥

एक छत्र जिण पुहवी, निश्चल कीधी धर उप्पर।
आणं कित्ति नव खंड, अदल कीधी दुनीय प्पर॥
नल वीनल विब्भाड़ि, उदधि कर पाउ पखालिय।
अंतेउर रति रंभ, रूप रंभा सुर टालीय॥
हेतम दान कवि मल्ल कहि, अमर धुन्नि बे वखत गनि।
दीठो न कोइ रवि चक्क लगि, अलावदी सुलतान विणि।१।

ढाल तेहिज

पातिसाह अलावदी रे लाल, देखी अनोपम तेहरे सोभागी
साहि बूझ्यो तेरे हाथ में रे लाल, भाट कहो क्या एहरे सो० ६
राजहंस[१] पंखी रहें रे लाल, मान सरोवर मांहि रे सो०।
तिण पंखी नी पांखड़ी रे लाल, ते देखी पतिसाहि रे सो० १०
मोज देई में नें इम कहें रे लाल, वाह वाह वे वाह रे सो०।
कहुँ वे ऐसी अउर भी रे, चीज देखी कहिनाह रे सो०॥११॥च०॥

पद्मिनी स्त्री के प्रति आकर्षण

ता परि भाट कहै सुणो रे लाल,
सब गुण पदमणि मांहि रे सो०।

१ कर सलाम भट विनवई रे लाल सुग दिल्ली पति साह रे सो०

उआ की ओपम नें द्युं रे लाल,
अउर ऐसी कोई नाहिं रे सो० ॥ १२ ॥ च०॥
अद्‌भुत जाणे अपछरा रे लाल,
अति सुन्दर सुकमाल रे सो०।
पतली कणयर कंबसी रे लाल,
पदमणि रूप रसाल रे सो० ॥१३॥च०॥
दील्लीसर कहै भाट स्युं रे लाल,
ऐसी पदमणि नारि रे सो०।
तै कहा ही देखी सुणी रे लाल,
कहि तुं साच विचारि रे सो० ॥१४॥च०॥
भाट कहै तुम महेंल में रे लाल,
नारी एक हजार रे सो०।
तामै पदमणि सही होसी रे लाल,
दोय चारि निरधार रे सो० ॥१५॥ च०॥
दूजी ठाम न साभली रे लाल,
कैसी कहिइ झूठ रे सो०।
इम निसुणी खोजो कहै रे लाल,
आसंग मन धरि दूठ रे सो० ॥१६॥च०॥
वात फरोसतइं क्या कहै रे लाल,
वाभण साहि हजूर रे। सो०।
कहाँ वे सुरनर मोहनी रे लाल,
पदमणि पुण्य पडूर रे सो० ॥१८॥ च० ॥

रावण घरि पदमणि सुणी रे लाल,
　　अउर नहि संसार रे सो०।
साहि घरे सब संखिणी रे लाल,
　　क्या[1] कहिइ अविचार रे सो० ॥१८॥ च०॥
माहोमाहि सकेत स्युं रे लाल,
　　भाट[2] खोजें कियो वाद रे सो।०
'लालचंद' मुनिवर कहै रे लाल,
　　सुणता उपजै स्वाद रे सो० ॥१६॥ च० ॥

दोहा

हसि के साहि कहै इसो, क्यु वे खोजा खूब।
हम महलें सब संखणी, नहिं पदमणि महबूब ॥ १ ॥

तापरि खोजो बीनमें, बूझौ राघव व्यास।
सब लक्षण गुण पदमणि[3] के, जाणे शास्त्र अभ्यास ॥ २ ॥

साहि कह्यो राघव भणी, स्त्री के केती जाति।
कैसा लक्षण पदमणी, साच कहौ ए वात ॥ ३ ॥

सुविचारी राघव कहै, स्त्री की चारु जाति।
पद्मणी[1] चित्रणी[2] हस्तणी[3] संखणी[4] अैसी भाति ॥४॥

---

१ साहि रुस्यो तिण वार रे सो० २ बांभण ३ नारि का

पद्मिनी आदि स्त्री के लक्षण

॥ कवित्त ॥

रूपवंत रति रंभ, कमल जिम काया कोमल
परिमल पहोप सुगंध, भमर भमैं[1] बहुपरिकरे उत्पल
चंपकली जिम रंग, चग गति गयंद समाणी
शशि वदनी सुकमाल, मधुर मुख जंपे वाणी
चंचल चपल चकोर जिम, नयण काति सोहै घणी।
कहै राघव सुलतान सुणि, पद्मोवी हुवै[2] अइसी पदमणी ॥ १ ॥

कुच युग कठिन सरूप, रूप अति रूड़ी रामा।
हस्त वदन हित हेज, सेज नितु रमें सुकामा
रूसै तूसै रंग, संगि सुख अधिक उपावैं
राग रग छतीत्त, गीत गुण ज्ञान सुणावै।
स्नान मज्जन तंबोल स्युं, रहइ अहोनिश रागणी
कहे राघव सुलतान सुणि, पहोवी हुइइसी पदमणी ॥ २ ॥
बीज जेम झलकत, काति कुदण जिम सोहै।
सुर नर गण गधर्व, रूप त्रिभुवन मन मोहै ॥
त्रिवली तन वेउ लक, वंक नहु वयण पयंपइ
पति सुं प्रेम अपार, अवर सुं जीह न जपइ
स्वामी भगति ससनेहली, अति सुकुमाल सुहावणी।
कहै राघव सुलतान सुणि, पहोवी हुइ इसी पदमणी ॥ ३ ॥

१ वहु भमै बलावल २ इसी हुई

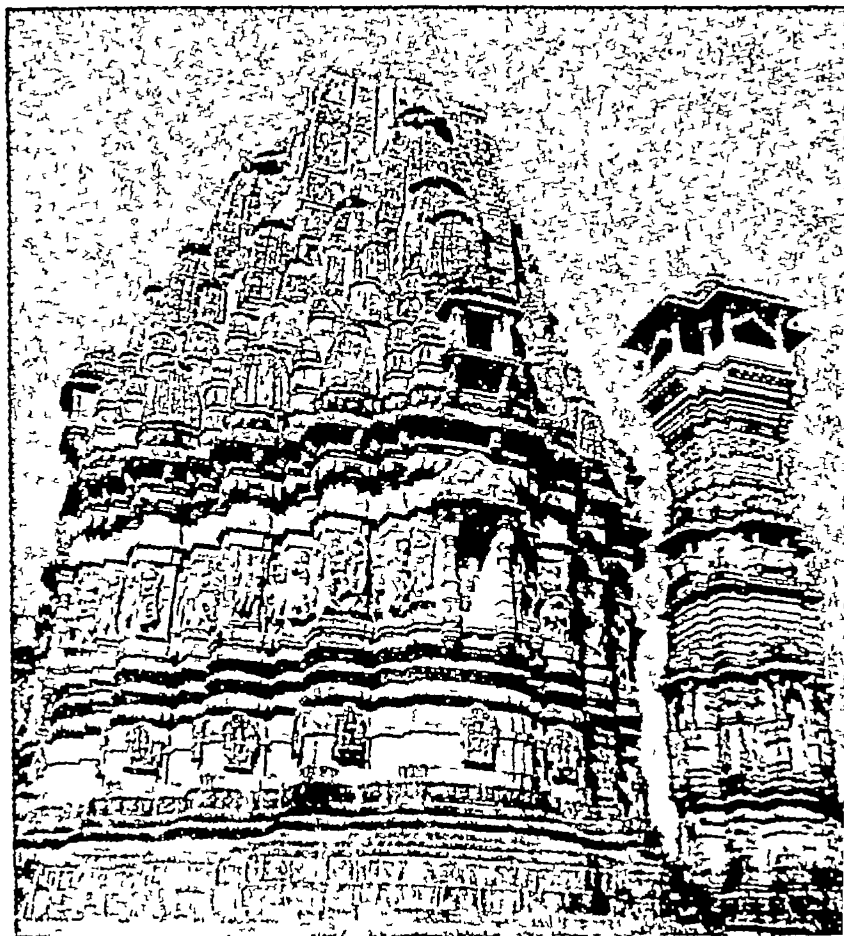
धवल कुसुम सिणगार, धवल बहु वस्त्र सुहावै
मोताहल मणि रयण, हार हीइ[1] ऊपरि भावै
अलप भूख त्रिस अलप, नयण लहु नींद न आवै
आसण रंग सुरंग, जुगति सु काम जगावै
भगति जुगति भरतार री रहै अहोनिश रागणी
कहै राघव सुलतान सुणि, पद्मावी हुवें इसी पमदणी ॥ ४ ॥

श्लोक

पद्मिनी पद्म गन्धा च पुष्प गन्धा च चित्रणी
हस्तनी मच्छ गन्धा च दुर्गन्धा[2]भवेत्संखणी ॥ १ ॥
पद्मिनी स्वामिभक्ता च पुत्रभक्ता च चित्रणी ।
हस्तिनी मातृभक्ता च आत्मभक्ता च संखणी ॥ २ ॥
पद्मिनी करलकेशा च लम्बकेशा च चित्रणी ।
हस्तिनी उर्द्धकेशा च लठरकेशा च संखिणी ॥ ३ ॥
पद्मिनी चन्द्रवदना च सूर्यवदना च चित्रणी ।
हस्तिनी पद्मवदना च शूकरवदना[3] च संखणी ॥ ४ ॥
पद्मिनी हंसवाणी च कोकिलावाणी च चित्रणी ।
हस्तिनी काकवाणी च गर्दभवाणी च संखणी ॥ ५ ॥
पद्मिनी पावाहारा च द्विपावाहारा च चित्रणी ।
त्रिपादा हारा हस्तिनी ज्ञेया परं हारा च संखणी ॥ ६ ॥
चतु वर्षे प्रसूति पद्मन्या त्रय वर्षास्च चित्रणी ।
द्वि वर्षा हस्तनी प्रसूतं प्रति वर्षं च संखिनी ॥ ७ ॥

1 हृदयस्थल 2 क्षीरगन्धा 3 काक

पद्मिनी चरित्र चौपई—



जैन मन्दिर व कीर्त्तिस्तभ

[फोटो—सार्वजनिक संपर्क विभाग-राजस्थान

पद्मिनी श्वेत शृंगारा, रक्त शृंगारा चित्रणी।
हस्तिनी नील शृंगारा, कृष्ण शृंगारा च संखणी ॥८॥

पद्मिनी पान राचन्ति, वित्त राचंति चित्रणी।
हस्तिनी दान राचन्ति, कलह राचंति संखिणी ॥६॥

पद्मिनी प्रहर निद्रा च, द्वि प्रहर निद्रा च चित्रणी।
हस्तिनी त्रय प्रहर निद्रा च, अघोर निद्रा च सखिणी ॥१०॥

चक्रस्थन्यो च पद्मिन्या, समस्थनी च चित्रणी।
उर्द्धस्थनी च हस्तिन्या, दीर्घस्थनी संखिणी ॥११॥

पद्मिनी हारदन्ता च, समदन्ता च चित्रणी।
हस्तिनी दीर्घदन्ता च, वक्रदन्ता च संखणी ॥१२॥

पद्मिनी मुख सौरभ्यं, उर सौरभ्यं चित्रणी।
हस्तिनी कटि सौरभ्यं, नास्ति गंधा च संखणी ॥१३॥

पद्मिनी पान राचन्ति, फल राचन्ति चित्रणी।
हस्तिनी मिष्ट राचन्ति, अन्न राचन्ति संखिणी ॥१४॥

पद्मिनी प्रेम वाञ्छन्ति, मान वांछन्ति चित्रणी।
हस्तिनी दान वाञ्छन्ति, कलह वाञ्छन्ति संखिणी ॥१५॥

महापुण्येन पद्मिन्या, मध्यम पुण्येन चित्रणी।
हस्तिनी च क्रियालोपे, अघोर पापेन संखिणी ॥१६॥

पद्मिनी सिंघलद्वीपे च, दक्षिण देशे च चित्रणी।
हस्तिनी मध्यदेशे च, मरुधराया च संखिणी ॥१७॥

अन्तः पुर की बेगमों में पद्मिनी गवेषणा

ढाल (४)

रागमारू, वाल्हाते विदेशी लागइ वालहो रे[1] ए गीतनी देशी—

इण परि पद्मिणी रा गुण साभली रे, हरख्यो मन सुलतान ।
हम महेलैं पद्मणी केते अछैरे. परखो व्यास सुजाण ॥१॥ इण०॥
सुन्दर सहेली पद्मणी मन वसी रे ॥ आकणी ॥
व्यास कहै आलिम साहिव सुणो रे, किम निरखु तुम नारि ।
निरख्या विगर न जाणु पद्मणी रे, कीजे कवण विचार॥२॥ सु०॥
तब दिल्लीपति महेल करावियो रे, मणिमय एक अनूप ।
व्यास बुलाय कहे पद्मणी रे, निरभया देखी स रूप ॥३॥ सु०॥
सकल नारि प्रतिबिंब निरखियो रे, बैठी मणगृह मांहि ।
देखी हरम हस्तनी चित्रणी रे, यामें पद्मणी नांहि ॥४॥ सु०॥
व्यास कहै सुर नर मन मोहनी रे, अद्भुत रूप अनेक ।
है चित्तहरणी तुरणी महल में रे, पिण नहीं पद्मणी एक॥५॥सु०॥

पद्मिणी के लिए सिंहलद्वीप पर चढ़ाई

एह बात सुणी आलिमपति कहै रे, क्या मेरा अवतार[2] ।
कैसी पतिसाही विण पद्मणी रे, अउरति अउर असार ॥६॥सु०॥
(विण) पद्मणी सेजे पोढु नहीं रे, हेजे न करूं रे संग ।
पद्मणी ऊपरि कीजे उवारणा रे, राज रमणी सर्वंग ॥७॥ सु०॥
मनड़ो लागो मारु भुरट ज्युं रे, पद्मणी परणवा चाह ।
व्यास बतावो चावी पद्मणी रे, इम बोले पतिसाह ॥८॥ सु०॥

---

१ वालउं रे सवायउ वैर हुं माहरौ २ जमवार ।

सिहलदीप अछै दक्षिण दिसइजी, आडो समुद्र अथाग।
व्यास कहै पद्मिणी ठावी तिहाजी, पिण महा दुर्घट माग ॥९॥
साहि कहै मुझ आगे व्यासजी, दरीया है कुण भात।
मुझ देखे सुरनर सहुको डरैरे, सोखुं सायर सात ॥१०॥ सुं०॥
तुरत चढ़ाई सिंहलदीप ने रे, कीधी दिल्लीनाथ।
धुं धुं धुं नीसाण घूरे भलाजी, शूर सुभट ले साथ ॥११॥सुं०॥
सोले सहस मेंगल मदझरता भला रे, जाणे घन गज्जति।
लाख सतावीस हेंवर हींसतारे. चचल गति चालंति ॥१२॥ सु०॥
च्यार चक राजन ससय पड्या रे, धर हर धूजेरे सेस।
रज ऊड़ीरे गयणे रवि ढाकियोरे, सक्यो मनहि सुरेस॥१३॥सुं०॥
डलगारें करि करी उलंघी मही रे, आया दरीया तीर।
रिण रढाला मरदाना वली[1] रे, साथे बहु सूर नै वीर॥१४॥सुं०॥
देख्यो दरियो भरियो जल घणेजी, तव बोले नरनाथ।
वारिधि पूरो हंल वीहला हुइ रे, मु छा घाले हाथ ॥१५॥ सुं०॥
दल वादल डेरा ऊभा किया रे, ऊतरीयो सुलतान।
सिंहलदेश दुहाई फेरि के रे. पकडो सिंघल राण॥१६॥ सुं०॥
'लालचंद' कहै साहि अलावदी रे, बोलाया वड़ वीर।
सझ हर्ड[2] सिंहलद्वीप ने ते, जे मरदाना वीर ॥१७॥ सुं०॥

दुहा

हुकम लही आया वही, जिहा सायर गम्भीर।
जल सुं जोर न कोई चलैं, वूडण लागा मीर ॥१॥

---

१ बडा, २ करि।

सायर ऊपरि हठ[1] कीयो, आलिम साहि अपार।
प्रवहण नवा घडावि ने, चोळ्या[2] बहु जूझार ॥२॥
साहि कहै सुभटा भणी, आ वेला छें आज।
लड़ी भड़ी गढ भेलिज्यो, पकड़्ज्यो सिंघलराय ॥३॥
लाख लाख मोजा दीइं,[3] चलीइ[4] बकारें स्वामि।
कहें तदि पाछो कुण रहै, सूर सुभट रे नाम ॥४॥
बैठा ते दरीया विचै, जेहवै आघो जाय।
आय पड़्या भमर्‍या विचइ, बाजै सबलो वाय ॥५॥

ढाल (५)—

राग-मल्हार सहर भलो पिण साकडो रे नगर भलो पण दूर, ए देशी।

तेहवे दरीयो ऊछल्यो रे, भागी बेड़ी भटाक मेरे साजना।
फिरी आदइ आलिम भणी रे, बूडें तेह कटक। मेरे साजना ॥१॥
जल सुं जोर न को चलै रे, सुभट रह्या जल माहि मेरे०
पदमणी परही जाणि द्यो रे, छोडो केडो साहि मेरे० ॥ २ ॥
आलिमपति इणि परि कहै रे, मैं नवि छोड़ केड़ि मेरे०
मो आगें दरीयो रहे रे, अब नाखुगो उथेड़ि मेरे० ॥ ३ ॥
वरस रहुँ पदमणी वरु रे, पकडुं सिंघलराय मेरे०
बीजा सुभट बुलाइये रे, मुंआ ति गइअ वलाय मेरे० ॥ ४ ॥
सुभट मन में संकीया रे, फोकट दरीया माहि मेरे०
काम विना किम दीजिइं, रे, साहि विचारत नाहि मेरे० ॥५॥

१ कोपियौ, २ चाल्या, ३ लहइ, ४ वलि वपुंकारे।

आलिम अमरस मनि घणो रे,पिण दरीयो भरपूर मेरे०
खाणो पीणो परिहर्यो रे, बैठो चिंता पूर मेरे० ॥ ६ ॥
चिंता निद्रा परिहरइ रे, चिंता ले जाइ दुक्ख मेरे० ।
चिंता अहनिशि तन दहइ, चिन्ता फेड़इ भुक्ख मेरे० ॥ ७ ॥
चिंता चिता समाख्याता चितातो चिन्ताधिका ।
चिता दहति निर्जीवं चिन्ता जीवंतप्यहो ॥
साहि कहे तेहनें घणो रे, द्युंगा देश भंडार मेरे०
दरीयो खोदि मारग[1] करइं रे, जावइं वारिधि पार मेरे० ॥८॥
लालचिया निरधार[2] तिहा रे, मानि हुकम तिहा जाय मेरे०
देखि दरीयो इम कहै रे, खोदे कुंण खुदाय मेरे० ॥ ९ ॥
जे सिंहल पहुँचै जाइ रे, ते पावइ लाख तुरंग मेरे० ।
ते दूणो पावइ पटउ रे, जे भेलइ सास दुरंग मेरे० ॥ १० ॥
जे मारें सिंघल धणी रे, तिगुणो तास पसाय मेरे०
जे आणें पदमणी भणी रे, ते सब गढनो राय मेरे० ॥ ११ ॥
इम लालच देखाडीयो रे, तो पिण न वहै इस मन मेरे०
नव लख सुभट सम्कि थया रे, मानि नहिं[3] साहि वचन मेरे ॥१२॥
दो तड वाघ तणउ वण्यउरे, लसकरिया ने न्याय मेरे०
इक दिस डर पतिसाह रउ, वीजे नाखे समुद्र बहाय मेरे० ॥१३॥
सुभटा व्यास वोलाइयो रे, आलिम सुं एकान्त मेरे०
पापी व्यास कुमतो कीयो रे, माड्यों सुभटा अन्त मेरे० ॥१४॥

---

१ पाधर २ निरधन घणा ३ मानण

दूहा

वचन विमासी वोलियइ, ए पंडित नो न्याय।
अविमासी कारिज करइ, ते नर मूरख राय ॥१५॥

स्त्री बालक पुहोवीधणी रे, ए तिहुँ एक सभाव। मेरे०
रढ नवि छाडै आपणी रे, भावें तो घर जाय। मेरे० ॥१६॥

आवी अनाथ जाणे नहीं रे, वालिभ ए जण च्यार मेरे०
वालक मंगण प्राहुणो रे, लाड गहेली नार मेरे० ॥ १७ ॥

एहवो कोइ मतो करो रे, आलोची मन आप मेरे०
आलिमपति पाछो फिरै रे, तो चूकें सब पाप मेरे० ॥ १८ ॥

आपणो मन आलोचि ने रे, जे करसी निज काज मेरे०
ते पामें सुख सम्पदा रे, 'लालचन्द' मुनिराज मेरे० ॥ १९ ॥

शाही हठ का छल से प्रतिकार कर दिल्ली पुनरागमन

दूहा—

व्यास कहै तुमे सांभलो, सुभट होइ सव एक।
हिकमति एक करो हिवै, फिरें साहि रहे टेक ॥ १ ॥

मदझर मातंग[1] पाचसै, सोवन जडित[2] साधार।
पाखरिया[3] पंच सहस, कोड़ि एक दीनार ॥ २ ॥

सिणगार्‌या पटकूल सुं, नव नव भाते नाव।
सोवन कलस सरस[4] रच्यो, भरयो वस्तु वहुभाव ॥३॥

---

१ माता २ साखित सार ३ वलि पाखरिया सहससय ४ सा सिर ठवड

अणजाण्या नर सीखव्यो, ए सिंघल मूक्यो दंड।
हुं तुम्ह नी पग खेह छुं, अब तु[1] आलिम छंड ॥ ४ ॥
नाक नमण इण परि करो, और न कोई उपाय।
अहंकार इम राखज्यो, जिम आलिम फिर जाय ॥५॥

ढाल (६)—कोई पूछो बाभणा जोसी रे ए देशी। अथवा यत्तनी

इम व्यास वचन अवधारी रे, हरखी तव[2] सेना सारी रे।
सहू सच कीयो तिण रातें रे, दड ल्याया ते परभातैं रे ॥ १ ॥
दिन ऊग्या आलिम जागै रे, देख्या प्रवहण मन रागें रे।
कहो क्या वे आवत सूझें रे, अइंस३ सेवक कुं वूझें रे ॥ २ ॥
तव व्यास कहै सुणि सामी रे, सही तोहै एह सलामी रे।
सिंघल राजा तुम मुकी रे, सबली आग्या प्रभुजी की रे ॥ ३ ॥
सोना कलसे अति सौहै रे, चमकत चूनी मन मोहे रे।
फरहरें नेजा धजा फावइ रे, वहु नेडा[3] प्रवहण आवै रे ॥ ४ ॥
देखत आलिम सुख पावै रे, वाहण दरीया तटि आवै रे
सुलतान चरण धाइ लागें रे, सब पेसकसी धरी आगे रे ॥ ५ ॥
सिंघल तुम पग नी खेहा रे, सेवक सुं राखो सनेहा रे।
वंदे कुं साहि निवाजै रे, ए चूनो तुम पान काजे रे ॥ ६ ॥
तुम दिलीसर जगदीसो रे, नमठेह सु केही रीसा रे।
इम विनय वचन सुणीइजे रे, सिरपाव सिंघल नें भेजै रे ॥ ७ ॥
पहरायो ते परधानो रे, दीधो तेहनै वहु मानो रे।
सिंघल मूक्यो ते लीधो रे, सुभटा ने वाटे दीधो रे॥ ८ ॥

१ कइ २ मानि ३ मतउजइ

सिंघल सों कीधो सनेहो रे, मान देई मूक्या तेहो रे।
समारी सहू राघव वातो रे, जिम तिम वणी आवैं धातो रे॥६॥

दूहा

जेहनइ घटि वहु बुद्धि हुवइ, तेसारइ सहु काम।
भंजइ गंजइ वल घड़इ, वलि आणइ निज ठाम॥ १ ॥

ढाल (७) यतनो—मनसा जे आणो एह

अलिमपति कूच करायो रे, वेघो दिल्ली गढ आयो रे।
घरि घरि गूठी ऊछलीयाँ रे, वहु मंगल धुनी रग रलीयाँ॥ १ ॥
बैठो तखत पतिसाहो रे, गढ सकल थयो उछाहो रे।
मिलि मिलि नर नारी भाखै रे, यो[1] आयो पदमणी पाखैं॥२॥
आलिमपति महेला आया रे, भितरि हथियार धराया रे।
सेवक घरि[2] पाछो जावै[3] रे, तव[4] वड़ी वीवी वुलावै॥ ३ ॥
तुम साहिव पदमणी परणी रे, ते दिखलावो हम तुरणी रे।
देखा दीदार एकवार रे, केसी हुवे पदमणी नारि॥ ४ ॥
जसु घरि नहिं पदमणि नारी रे, कैसो कहीइ घर वार रे।
कैसी तेरी पतिसाही रे, पदमणी नाहि एकाही॥ ५ ॥
विण पदमणी खाना[5] खावै रे, इम वार वार मंतावै रे।
विलखो होय खोजो आवै रे, आलिम नैं वहुत भखावै॥ ६ ॥
गच्छ मोटो खरतर गायो, महावीर पाट चल आयो रे।
सूरीश्वर श्रीजिनरंग रे, तसुशासन श्रावक चंग रे॥ ७ ॥

१ किम २ घरि ३ आवइ ४ वडकण बीबी बतलावइ ५ खाली नावइ

मंत्रीसर श्रीहंसराज रे, वड़ दातारां सिरताज रे।
पुण्यवंत महा परवीण रे, गुणरागी नइ धर्म लीण ॥ ८ ॥
समरथ सगलइ ही कामइ रे, तास भ्रात डुगरसी नामइ रे।
भागचंद वडउ भागवंत रे, मन मोटइ लखमी कांत ॥ ६ ॥
दीपक सम राजदुवारइ रे, कुल आभ्रण सोभा धारइ रे।
तसु आग्रहि कीधउ एह, खंड बीजउ संपूरण तेह ॥ १० ॥
पाठक श्री ज्ञानसमुंद रे, गणि ज्ञानराज मुनीचंद रे।
गुरुराज तणै सुपसाया रे, मुनिलब्धोदय गुण गाया रे ॥ ११ ॥

॥ इति द्वितीय खण्ड सम्पूर्णम् ॥

इति श्रीपद्मिनीचरित्रे ढाल भाषाबंधे उपाध्याय श्री ज्ञान समुद्र गणि गजेन्द्राणां शिष्यमुख्य विद्वद्राज श्रीज्ञानराज वाचक वराणा शिष्य पं० लब्धिउदय मुनि विरचिते कटारिया गोत्रीय मंत्रिराज श्री हंसराज म० श्री भागचंदानुरोधेन राणा श्री रतन सिंहलद्वीप गमन श्री पद्मिनी पाणिग्रहणं श्री चित्रकूट दुर्गागमन सम्बन्ध प्रकाशो नाम द्वितीय खड ॥

राघव चेतन दिल्लीगमन साहि वारिधि यावत् गमनागमन सम्वन्ध प्रकाशनो नाम द्वितीय खड २ (वड़ौदा प्रति)

तृतीय खण्ड

मंगलाचरण

दूहा

मात पिता बंधव हितु, गुरु सम अवर न कोय।
तिण हेतइं गुरु प्रणमता, मनवंछित फल होय ॥ १ ॥
तिणकुं राग करी नमू, इष्ट देवता आप।
खंड कहुं अब तीसरो, सुणता टलै संताप ॥ २ ॥

पद्मिनी की पुनर्गवेषणा

अणख[1] बोल बीबी तणा, सुणि के आलिम साहि।
धमधमीयो कोप्यो घणो, अति अमरस मन माहि ॥ ३ ॥
ततखिण व्यास बुलाइ नै, इम पूछें सुलतान।
सिंहलद्वीप विना अवर, पदमणि आहीठाण ॥ ४ ॥
चावो गढ चीतोड़ छै, पहोवी माहि प्रधान।
रतनसेन रावल[2] जिहा, राजें अमली माण ॥ ५ ॥
शेषनाग सिरमणी जिसी, तस घरि पदमणि नारि।
लेई न सकै कोइ तिण, किम कहिइं अविचार ॥ ६ ॥
एवड़ो सिंहलद्वीप नो, फोकट कीध प्रयास।
गढ चीतोड़ किसो गजो, साहि कहै सुणि व्यास ॥ ७ ॥

---

१ नाजुक २ राणउ तिहां।

चित्तौड़ पर चढ़ाई

ढाल (१) राग—आसा सिन्धू

भणइ मन्दोदरी दैत्य दसकध सुणि एह कड़खा री चाल

चढयो अलावदी साहि सबलै कटक,
सकज सिरदार भड़ साथ लीधा ।
मीर वडवीर रिणधीर जोधा मुगल,
सलह कारी सावता तुरंत कीधा ॥१॥च०॥
इन्द्र ने चंद्र नागेन्द्र चित चमकीया,
धडहड्यो शेष नें धरा धूजें ।
लचकि किचकीचकरें पीठ क्रूरंमतणी,
हलहलें मेरु दिगदत्त कूजै ॥२॥च०॥
आवियो साहि चित्रोड़री तलहटी,
लाख सतवीस उमराव लीधा ।
गाजती राजती जाणीइं गज घटा,
आप करतार नवी पार लीधा[१] ॥३॥च०॥
तरणि छिप गयो रयणि जिम तारिका,
खलकि खुरताल पाताल पाणी ।
गुहीर नीसाण घन घोर जिम घरहरै,
हलहिवै वेग ल्यो हिंदुवाणी ॥४॥
गजा सिर धजा वह नेज वाजा करी,
उरझि मुरझि रहे पवन वाधो ।
हयवरा गेंवरां उमरा सातरा,
आप करतार नवी पार लाधो ॥५॥च०॥

१ मसत गजराज गजगाह कीधइ

राण कुल भाण सुलतान आयो सुणी,
झटक दे कटक सहु सझ कीधो।
मुँछ वल घालि बहू रोस भाखे रतन,
हलाहिव साहि नइं करां सीधो ॥६॥च०॥

भलां तुं आवियो मुझ मन भावीयो,
दूत रजपूत मूंकी कहायो।
हूं हिजें साहि हुसीयार हिवें जाह मत,
भलां सिंघल थकी भाजि आयो ॥७॥च०॥

माहरा साथ रा हाथ हिवें देखज्ये,
ढीलिपति रहैं मति हिवै ढीलो।
भाजता लाज तुझ कां ज आवै नहिं,
देखयो साहि मोटो अडीलो ॥८॥च०

कीयो गढ सातरो नाल गोलां करी,
माडीयां ढीकली अरहट्ट यंत्रं।
धान पाणी घणा वसत सचा किया,
मिली[1] वृद्धिवंत करे वहु मंत्रं ॥९॥च०॥

तुरत[2] रा तीर जिस वैंण रावल[3] तणा,
सुणत परमाण पतिसाहि[4] रूठो।
भभकति आग में जाणि घृत भेलीयो,
साहि कहे हला करि सुभट रूठो ॥१०॥च०॥

---

१ महा मंत्रवी २ ततारा ३ राणा ४ सुलतान

कोट करि चोट उपाडि अलगो करो,
बुरज गुरजा करी करो हिवें भूक ।
ढाहि ढम ढेर गढ घेरि करि पाकडो,
करो हिवे वदि दिन अंध घूक ॥११॥च०॥
करैं मुख रगत युवगत आलिमधणी,
डारि द्यु फूकि थकी[1] गढ चीतोड ।
राण सुं पदमणी चिडी जिम पाकडू,
कवण हिंदू करैं हम तणी होड ॥१२॥च०॥

युद्ध वर्णन

होय हुसीयार हथीयार गहि ऊठीया,
मीर वड वीर रिणधीर रोसइं ।
सुणो पतिसाहि अल्लाह अब क्या करे,
देखि तुझ साथरा हाथ मोसें ॥१३॥च०॥
इम कहि मुगल सिर चुगल जिम मूडीया,
धाय गढ कंगुरे आय लागा ।
पीठ परि रीठ पाधर[2] तणी पड पड़ैं,
अडवडैं लड़थडैं भिड़ैं आगा ॥१४॥च०॥
भडा भड़ि भड़ा भड़ि नाल छूटैं भली,
कड़ाकड़ि कूट वाजैं कुठारा ।
तडातडि तडातड़ि सवद गढ ठावता,
वड़ावड़ि वाण लागै ऊठारा ॥१५॥च०॥

१ गढ सकल २ पाधर

झूंबीया लूबीया मीर गढ ऊपरा[1],
गोफणा फण-फणा वहैं गोला ।
गडा गड़ि गिर तणा गडागरि गिर पड़ै,
चडाचडि ऊछलै मुगदल्ल[2] रहो ला ॥१६॥
जालमी आलमी जोध मिलि झूझीया,
धरहरै धरा धमचक धूजी ।
सरस संग्राम री ढाल ए पनरमी,
सुगुरुराज ग्यान 'लालचद' वाजी[3] ॥१७॥च०॥

दूहा

एकण दिशि रावल[4] अनम्म, आलिमपति दिशि एक ।
भभकारे[5] वेहुं सुभट, राखण रजवट टेक ॥१॥
खाणो दाणो पूरवै, रावल रण रंढाल ।
भारथ मे[6] योद्धा भिड़ै, रिणयोद्धा जिम काल ॥२॥
आलिम चिंता अति घणी, पदमणि पेखण प्रेम ।
गढ हाथैं आवै नहीं, कहो हवै कीजै केम ॥३॥
दिल्लीपति दाखै इसौ, सुभटा नैं समझाय ।
सहु तुमे हिव सामठा, जुड़ो[7] तुरंगा जाय ॥४॥
नेडा होय गढ:सु निपट, खोदो खानि सुरंग ।
वुरजा तणा पुरजा करो, देशी धड़ा दुरग ॥५॥

१ कागुरे २ मूधल होला ३ वांची ४ रणउ वपुकारे ५ मह ६ रिन
७ जडठ दुरगे

ढाल (२) चरणाली चामुडा रण चढै एहनी

साहि कहै सुभटा भणी, होज्यो हिवै हुसीयारो रे।
मरदानी मरदा तणी, देखेंगे इण वारो रे ॥१॥
रिण रसीयो रे अलावदी, मीर वड़ा रण-धीरो रे।
हलकारे हल्ला करे, मुगल मूंकी वड़धीरो रे ॥२॥ रिण०
मरण तणो डर कोई नहिं, मरना है इक वारो रे।
वहुत निवाज वड़ा करुं, द्युं वहु देश भंडारो रे ॥रिण०॥
दिल्ली अव दूरें रही, हिकमति[1] अव मति हारो रे।
रोड़ो इक-इक खेसता, होय पाधर दरहालो रे ॥४॥ रि०॥
कुटका कोट तणा करो, खोदि करो खल खटो रे।
कूटे पाड़ो कागुरा, नेडा होइ निपटो रे ॥५॥ रि०॥
निसरणी ऊंची करो, सुभट करो पैसारो रे।
आणो रावल[2] इण घड़ी, कुद्दण क्यासु गमारो रे ॥६॥रि०॥
तुरत उक्या तड़भडि करी, सुणि के साहि वचनो रे।
मीर मुगल मसती हुआ, सलह[3] पहरी यतनो रे ॥७॥ रि०॥
धेठा होय ने धपटीया, दड़वड़ लागा[4] डागा रे।
वानर जेम विलगीया[5], लपटी गढ नें लागा रे ॥८॥ रि०
गणण गणण गोला वहे, जाणे[6] सींचाण अजाणो रे॥
सगग सगग सर छूटता, वगग वगग कूहकवाणो रे ॥९॥ रि०॥

---

१ हिम्मति २ राणउ ३ जोसण पहर जतन्न रे ४ जाणे ५ विलंविया
६ जाण सीचाणा जाणो रे

मारै मीर महाबली, ताके वाहै तीरो रे।
कूटे कोटनै कागुरा, धुव[1] खडै बड धीरो रे ॥१०॥ रि०॥
रिण रहीया हय हाथीया, कीधा जाणे कोटो रे।
रुधिर तणी रिण नय वहइ, सूर कमल दड[2] दोटो रे ॥११॥ रि०
आतसबाजी ऊछली गयणे घोर अधारो रे।
आरा वे नर ऊछलै, जाणें सूरातन[3] रिण सारो रे ॥१२॥ रि०॥
नारद नाचें मन रुली, डिम डिम डमरू बाजें रे।
जोगणिया खप्पर भरै, रुहिर पीवै मन[4] छाजै रे ॥ १३ ॥ रि० ॥
डडकारा[5] डाकणि करै, राक्षस देवइ रासो रे।
रुडतणी माला रचै, ऊमयापति उल्लासो रे ॥ १४ ॥ रि० ॥
सुर भणी सुरलोक स्युं, ऊतरै अमर विमाणो रे।
अपछर आरतीया करइ, कामणि कंचन वानो रे ॥ १५ ॥ रि०॥
मुगल वसत लूंट घणी, माम कोठार[6] भंडारो रे।
माथें कीधी मेदनी, हूओ गढ़ हाहाकारो रे ॥ १६ ॥ रि० ॥
हेरा करैं डेरा हणौं, राति वाहै राजो रे।
मुगल घणा तिहा मारीया, सबल लूटाणा साजो रे ॥१७॥ रि०
साझ लगै दिन प्रति लडै, पिण कोई न सीझइ कामो रे।
फोकट मुगल मरावीया, आलिम चिंतै आमो रे ॥ १८ ॥ रि०॥
कल वला दोनउं जे करइ, तउ कारिज चढइ प्रमाणो रे।
'लालचंद कहें साहि सुं बीस कहइ इम वाणो रे ॥ १९ ॥ रि०

१ ग्रीव पड़ै २ दल ३ सुत ४ मत माजै रे, ५ ढड़डाटा ६ गोठि

कपट प्रपंच रचना

दूहा

छानो कोइक छल करो, मति प्रकासो मर्म्म।
कपटै बात करो इसी, जिम रहै सगली सर्म ॥ १ ॥
करो सुंस जेतै कहै, बोल वध सवि साच।
हम मुसाफ उपारि है, विचलां नहिं वाच ॥ २ ॥
इम विचारि गढ मूंकीया, जे पाका परधान।
रावल[1] सुं इण परि कहै, करी तसलीम सुजाण ॥ ३ ॥
मेल करण हम मूंकीया, जो तुम मानो बात।
प्रीत वधें हम तुम प्रगट, सबही एह सुहात ॥ ४ ॥
दरस देखि पदमणि तणो, भोजन करि तसु हाथ।
आहीठाण गढ देखि नै, साहि चलंगे[2] साथ ॥ ५ ॥

ढाल (३) बात म काढो व्रत तणी ए देशी २ काची कली अनार की रे

तासु तणी वाता सुणी, बोलै राव रतनो रे। सुणि हो राजन्ना।
गढ तुम हाथ आव नहीं, जो करो कोड़ि जतनो रे ॥ १ ॥ ता०
पाणी[3] वलतो ही पतीजीइं, जो उठावै मुंसापो रे।
सुंस करै मन सुध स्युं, छोडै सकल कलापो[4] रे ॥ २ ॥ ता०
वलि प्रधान इम वीनवे, सुणि हिन्दू पतिसाहो रे।
देश गाम दूहवा नहीं, दंड तणी नहिं चाहो रे ॥ ३ ॥ ता० ॥
राजकुमारी मागा[5] नहिं, नहिं तुमस्युं दिल खोटो रे।
नाक नमणि हम[6] सुं करो, देखाडो चित्रकोटो रे ॥ ४ ॥ ता०

---

१ राणा २ चलें ले ३ पिण जउ मेल करइ मक्इ रेहां, तउ उठावौ मसाफ ४ किलाफ ५ परणउ ६ जउ तुम।

मैं अपणा कृत कर्म सुं, असुर कुले अवतारो रे।
पूरब पुण्य प्रमाण सुं, तूं हिंदूपति सारो रे ॥५॥ता०॥
जीव एक काया जूई, तूं पूरब भव मुझ भ्रातो रे।
हम तुम सूं मेलो हुओ, बैठि करइं दोय बातो रे ॥६॥ता०॥
हरख बहुत हमकुं अछै, भोजन पदमणी हाथो रे।
दीदार पदमणी देखियै, ओरण चाहै आथो रे ॥७॥ता०॥
पाछै[1] दिल्ली कुं चलें, हम तुम होय सनेहो रे।
तब रावल[2] तिणसुं कहै, जो नवि जोर करेहो रे ॥८॥ता०॥
तो नचिंत पावधारिइं, लसकर थोड़ो लेइ रे।
आरोगो आणंद सुं, हम घर प्रीति धरेइ रे ॥९॥ता०॥
साहि भणी बाता सहु, जाय कहै परधानो रे।
सुंस सपति[3] निज बाह सुं[4], झूठै मनि सुलतानो रे ॥१०॥

श्लोक—मुखं पद्मदलाकारं, वाचाचंदन शीतलं।
हृदयं कर्त्तरी तुल्यं, त्रिविधं धूर्त्त लक्षणम् ॥१॥

राघव मंत्र[5] उपाईयो, रावल झालण काजो रे।
छेतरवा छल मांडियो, साहि कीयो बहु साजो रे ॥११॥ता०॥
घरभेदू राघव मिल्यो, सामिधरम दियो छेहो रे।
घरभेदू थी घर रहै, खोवै पणि घर तेहो रे ॥१२॥ता०॥
घर भेदइ लंका गई रेहां, रावण खोयो राज ।सु०
घररउ उंदिर दोहिलउरेहां, सुगम अवर मृगराज ॥१३॥

1 पीछे दिल्ली कुच ढेरहों २ राणो ३ सबदि ४ दूयइ ५ कीधठ मन्त्रणउ, राणा।

सुलतान का चित्तौड़ प्रवेश

पोलि उघाड़ी गढ तणी, सरल सभावै राणो रे।
मुंक्या तेडण[1] मंत्रवी, वेघ[2] पधारो सुलतानो रे ॥१४॥
तीस सहस लोह लुंबीया, ले पैठो सुलतानो रे।
समचा सुंते[3] संचर्‌या, जाण पड़ि नहिं राणो रे ॥१५॥
देखवा कोतिक मिल्या तिहा, नरनारी जन वृंदो रे।
पिण किणहि जाण्यो नहिं, दिलीपति रो छंदो रे ॥१६॥

सुप्त गुप्तस्य दम्भस्य, ब्रह्माप्यंतं न गच्छति।
कौलिको विष्णु रूपेण, राजकन्या निसेवते ॥२॥

कपट कोई नवी लिखी सकै, जो करी जाणै कोई रे।
'लालचंद' मुनीवर कहै, पिण भावी हुइ सो होई रे ॥१७॥

दूहा

आया दीठा सामठा, आलिम सुं असवार।
खुणस्यो मन मांहि खरो, रावल जी तिण वार ॥१॥
चूलायां आया तुरत, सभ्म[4] कीयाह सुभट।
दल बादल आई मिल्या, हिंदू मुगला थट ॥२॥
दिलीपति ढीलो हुवो, पहुंचे कोई[5] न पाण।
अचरिज[6] आसंगी न सकै, बोलै एहवी वाण ॥३॥
कांहें कुं मेलो कटक, खोटो म करो खेद।
हुं लड़वा आव्यो नहीं, नहिं छै को छल भेद ॥४॥

१ मोटा २ पाठ धारउ ३ सब ४ सयनो किये ५ न को उपाय
६ आसग सकै न कोइ किण, भालम खेलइ दाव।

कोतिग देखी गढ तणो, हुं जास्युं निज ठाम।
वली रावल जी इम कहै[1] सुणि दिलीपति साम ॥५॥

ढाल (४)

१ तिण अवसर वाजै तिहा रे ढढेरा नो ढोल ए देसी
२ मेवाड़ी दरजणी री ढाल

एतला[2] आण्या सा भणी रे, तीस सहस असवार।
विण कारण वानर जिसा रे, माता मुगल्ल जे इणवार रे ॥१॥
धुरत दिल खोटा रे, काइं रे तुं साहिव मोटा,
वाचा चूको रे, आलिम वाचा चूको। आकणी।
चूक कियो तो चूरस्युं रे, सेक्या पापड़ जेम रे।
पीसी न्हांखुं पलक में रे, आटा में सिंधव जेम रे ॥२॥धु०॥
हलकारै[3] हलकां करी रे, ऊठै सुभट्ट अपार।
सार मुखैं तिल तिल करै रे, एकेको एक हजार ॥३॥धु०॥
गढगंजन सुभटां भणी रे, तनक हुकम ह्वै मुझ।
तो[4] चिड़ीया जिम पाकड़ै रे, ए तीस सहस दल तुझ रे ॥४धु०॥
आलिमपति इम चिंतवै रे, राय सुणो अरदास
निज घरि आया प्राहुणा रे, कहो किम कीजै उदास रे ॥५ धु०॥
सगतै केम सत्ता करो रे, कांय पचारो पाण।
थोड़ा ही होवै घणा रे, लीज्यें झेलि महमान रे ॥६॥धु०॥

१ वदइ २ एतइ ३ हलकारंतां हेक नइ रे ४ चिटियां री परि।

राणा का आतिथ्य

हम जीमवा आया हुंता रे, नहिं लड़वानो काज।
घणो मामलो काय नहीं रे, आज सुभक्ष सुंहगा नाज रे ॥७
जीमता जो आणो अछो रे, खरच तणो मनि खेद।
कहो तो फिर पाछा फिरा रे, ते भाखो हम सुं भेद रे ॥८॥
भणइ रावल आलिम भणी रे, भलै पधार्या साहि।
बीजा बोलावो वले रे, जीमवा नी सी परवाह रे ॥६॥
ओछा बोल न बोलीइं रे, दिल में राखी योग।
बोल बोल बेऊं हस्या रे, हाथ देई तालि जोग रे ॥१०॥
मांहो माहि मिलि गया रे, सबल हुओ संतोष।
दोष सहु दूरे किया रे, राख्यो रावल रो तोष रे ॥११॥
रावल भगति भोजन तणी रे, सहूअ कराई सम्फ।
रूड़ी व्यंजन रसवती रे, आरोगण आलिम कज्ज रे ॥१२॥
पदमणि सुं प्रीतम कहै रे, खरी धरी मन खंति।
जिण विधइं जस रस रहै रे, भोजन दीजइ तिण भति रे ॥१३॥
प्रीतम सुं पदमणि कहै रे, हुं नहिं परुसुं हाथ।
मो सम दासी माहरी रे, ते परुसस्यै दिलीनाथ ॥१४॥
मानि वचन महाराय जी रे, सिणगारी जव दासि।
काम तणी सेवा जसी रे, रूपे रंभा गुण राशि रे ॥१५॥
खाति करी खिजमति करें रे, आसण बैसण देह।
साख[1] तिहुँ सावती करी रे, तेडइं दिलीपति तेह रे ॥१६॥

---

१ साखित सहु।

हरखित चित आवै हिवै रे, दिलीपति सुलतान।
'लालचन्द' मुनिवर. कहै रे, सुणयो हिव चतुर सुजान रे॥१७॥

दूहा

ऊंचा अमर विमाण सा, मोटा महेल अनेक।
गोख झरोखा जालियां, धोल ति शुद्ध विवेक॥१॥
सरग मृत्य पाताल सब, सुन्दर वन आराम।
चात्रक मोर चकोर बहु, चितरीया चित्राम॥२॥
कनक थंभ कलसे करी, मंडित मोहण गेह।
झिगमगि ज्योति जड़ाव की, चलकती चन्दरुएह॥३॥
रंगित मंडप माहि हिव, जाजिम लांबी जेह।
वारु करै वीछामणा, मोल घणा छै जेह॥४॥
मोखमल मोटा मोल रा, पंच रग पटकूल।
जरी कथीपा जुगति सुं, सखर विछावै सूल॥५॥
तरहदारविण मइं ठव्यो, सिंहासण तिण[1] वार।
माणिक मोती लाल बहु, जड़ीया रतन अपार॥६॥
तिहां आवी बैठा तुरत, सबल साथ सुं साहि।
चिंतइं मानव लोक में, आणी भिस्त अल्लाह॥७॥

भोजन सत्कार

ढाल (५) अलवेल्या नी

पहरी पटोली पांभड़ी रे लाल, दासी सुन्दर देह; मन मान्या रे
एक आवी आसण ठवै रे लाल, रूप अधिक गुण गेह, मन०॥१॥

१ सुखकार।

भोजन भगति भली करै रे लाल, सुंदर रूप अचंभ । मन०
दासी पदमणि सारखी रे लाल, रूपै जांणों रंभ । मन० ॥२॥
सोवन झारी जल भरी रे लाल, कनक कचोला थाल । मन०
ले आवै भावै घणे रे लाल, कामणि अति सुकमाल । मन० ॥३॥
नाना व्यंजन नव नवा रे लाल, चतुर समारया चाख । मन०
खाटा मीठा चरपरा रे लाल, रूड़े स्वादे राखि । मन० ॥४॥
आंवा नींबू कातली रे लाल, माहि बूरो मेलि । मन०
कूंकणीया केला तणी रे लाल, कीज्ये ठेला ठेलि । मन० ॥५॥
नीली चउला नी फली रे लाल, काकड़िया कालिंग । म०
काचर परवर टींडसी रे लाल, टींडोरी अति चंग । म० ॥६॥
मुंगवड़ी पेठावड़ी रे लाल, खारावड़ी मन खंति । मन०
डबकवड़ी दाधावड़ी रे लाल, व्यंजन नाना भंति । मन० ॥७॥
राय डोडी राजा दनी रे लाल चली खुरसाणी सेव । मन० ।
दाडिम दाख सोहामणा रे लाल, खरबूजा स्युं टेव । मन० ॥८॥
खाति समारया खेलरा रे लाल, राईता ईमेलि; मन०
घोलवड़ा काजीवड़ा रे लाल, माट भरया छै ठेलि । मन० ॥९॥
कारेली ने काचरा रे लाल, तली मूंकी घृत संगि । मन०
पापड़[1] एरंडकाकड़ी रे लाल, सीरावड़ीय सुचंग । मन० ॥१०॥
मोठ मठर चूंला फली[2] रे लाल, छमकास्या देइ वघार । मन० ।
मुंल फूल फल पानड़ा रे लाल, अथाणा[3] सुखकार । मन० ॥११॥

१ पाखद कद्दर २ चिणा ३ संधाणा

सुंदरि परूस्या सालणा रे लाल, हिव पकवाने हूंस । मन० ।
खारिक निमजा खोपरा रे लाल, प्रीसतां रूडी रुंस ।मन०।१२॥
दाख बिदाम चिरुंजीया रे लाल, मेवा सगली जाति । मन० ।
खाजा ताजा खांडरा रे लाल, घेवर बूरो घाति । मन० । १३ ॥
सखरा लाडू सेवीया रे लाल, मोती मनोहर जाति[1] ।मन०।
घेवर [2]वड़लां हेसमी रे लाल, पैड़ा[3] कंद बहुभांति[4] ।मन० ॥१४॥
पेंडा[5] डीडवाणा तणा रे लाल, पूड़ी[6] लापसी तेर ।मन०।
मुहम तणीअ तिलंगणी रे लाल, जलेबी बीकानेर[7] । मन०॥१५॥
पहुआवर धनपुर तणा रे लाल, गुप चुप गढ ग्वालेर ।
करणसाही लाडू भला रे लाल, वारु बीकानेर ॥१६॥
बयानइ रा नीपना रे लाल, गुदबड़ा गुणखाण । म०
[गुंदवड़ा पाया तणा रे लाल, आना रायण आण ।मन०।]
रुस्तक रा दाणा भला रे लाल, गुंदपाक सुख खाण ।मन०१७॥
सीरा फीणी सुँहालीयां रे लाल, साबूनी सुखकार । मन० ।
इन्द्रसा नै दहीथडा रे लाल, इम पकवान अपार ।मन० ॥१८॥
रायभोग गरड़ा तणी रे लाल, साठी सखरी सालि ।मन०।
देव जीर परुसै भला रे लाल, दिल मानै ते दालि । मन०॥१६॥
मूग मोठ तूअर तणी रे लाल, राती दाल मसूर ।मन० ।
उड़द चिणा ऊपरि घणा रे लाल, सुरहा घृत भरपूर ।मन०॥२०॥

१ रूप २ वावरह समी ३ केला ४ रूप ५ गट्टा ६ पेंडा नागपुरीय
७ गुपचुप गढ ग्वालेर, जलेबी सु जीय

भोजन री मुगलें भली रे लाल, कीधी झाड़ झाड़ि ।मन०।
उपरि गौरस आथणी रे लाल, परुसै पदमणि माड ।मन० ॥२१॥
चल्ल करी मूछण दीयारे लाल, लूग सुपारी पान । मन० ।
'लालचंद' कहै साभलो रे लाल, तुरक करै अति तान ।मन०॥२२॥

दासी के सौन्दर्य पर मुग्ध सुलतान को राघव चेतन का पद्मिनी दिखाना

दोहा

ज्युं ज्युं दासी नव नवी, सझि आवइ सिणगार ।
देखि देखि चित चमकीयो, आलिम भोजन वार ॥ १ ॥
रूप अनूपम रंभसम, उवा पदमी कहै याह ।
वार वार विह्वल थको, जंपै आलिम साहि ॥२॥
एक नहीं अम घर ईसी, कैसा हम पतिसाहि ।
याकै एती पदमणी, देखत उपजै दाह ॥३॥
वार वार झखखो किसु, राघव बोलें एम ।
ए दासी पदमिणी तणी, आप पधारइ केम ॥४॥
चुंप दे कै देखो चतुर, विचली म करो वात ।
सहस दोय सहेलीया, रहै सग दिन राति ॥ ५ ॥

ढाल (६) हसला ने गलि घूघरमालकि हसलउ भलउ, ए देशी

व्यास कहै सुणि साहिबा, पदमणि नो हे साचो सहिनाण कि ।
काची कंचन वेलसी, नहिं रूपे हे एहवी इंद्राणि कि ॥ १ ॥
झबकै जाणै वीजली, अंधारै हे करती उजासकि ।
भमर सदा रुणझुण करइं, मोह्या परिमल हे नवी छंडै पास कि
॥२॥सुन्दरि भनी ।

ते आवी न रहइ छिपी, जे मोहइ हे त्रिभुवन जन मन्न कि। सुं०
खिण विरहउ न खमि सकइ,

जतने करि राखइ राणउ रतन्न कि। सुं० ।३।

(राणो) रात दिवस पासे रहै, धन्य देखे हे एहनो[1] आकार कि।
साहि कहै सुणि व्यास जी,

किण विधसुं[2] हे देखै दीदार कि। सुं० ॥४॥

व्यास कहै सुणि साहिबा[3] अति ऊँचो हे पदमणि आवास कि।
मुजरो कोई पामे नहिं,

रावल ही हे लहै भोगविलास कि। सुं० ॥५॥

कवित्त

लाख दस लहै पलिंग सोड़ि तीस लख सुणीजैं
गाल मसूरया सहस सहस दोय गिंदूआं भणीजैं ॥
तस उपरि मसोडि[4] मोल दह लखे लीधी।
अगर कुसम पटकूल सेझ कुंकम पुट दीधी ॥
अलावदी सुलतान सुणि विरह व्यथा खिण नवी खमैं।
पदमणि नारि सिणगारि करि रतनसेन सेझा रमैं ॥१॥

ढाल तेहीज—

जे देखइ पदमिणि भणी, ते गहिलो हे होवे गुणवंत कि। सुं०
मान गलइ बहुनारि ना, इम वाता हे वे करि बुधवंत कि। सुं०६

---

१ ए रति रूप उदार कि २ करि हे इम होइ० ३ सामिजी ४ दोवडि

इण[1] अवसरि पदमणि कहै,
सहीया देखा हे केहवो पतिसाहि कि। सु॰।
जाली में मुख घाली नै,
गयगमणी हे देखै मन उच्छाह कि ॥७॥ सु॰॥
ते देखी व्यासैं तिसें तव बोले हे देखो सुलतान कि।सु॰।
रतन जडित जाली विचइ,
बइठी बाला हे गुणवत सुजान कि। सु॰ ॥८॥
तुरत देखी ने पदमणी, बोलइ आलम हे नागकुमारिकि। सू॰।
भद्र कि नाथा रुकमणी,
किन्नर किन्न होय अपछर नारि कि ॥६॥ सु॰॥
वाह-वाह वे पदमणि ऐसी नहीं हे इन्द्र घरि इन्द्राणि कि। सुं॰
या कइ अंगूठा समि नहीं,
नारी हे जगि मांहि सुजाण कि। सु॰।१०।
देखी आलिम अचरिच थयो,
नहिं एहवी नारि संसारिकि। सु॰ ॥११॥
किती बात याकी कहों,
मुझ मन हे मृग पाड्यो प्रेम पास कि। सु॰।
मुरछित हो धरणी पड़यो,
वलि मूके हे मोटा नीसास कि सु॰ ॥१२॥
व्यास कहै सुणि साहिवा, स्युं खोवै हे फोकट निज साखि कि।
और बुद्धि[2] इक अटकलो,
तव लगे हे मन धीरज देउ राखि कि। सु॰। ॥१३॥

१ तिण २ कोई बुधि

जो रावल जिम तिम करी, पकड़ीजे हे तो पहुँचे मन[1] हूँस कि।
आलोची मन आपण, धीरज धरि हे मन पूगै हूंस[2] कि ।।सु॰।।१४।।
केसरि चन्दण कुमकुमा, छंटीज्ये हे कीज्ये रंग रोल कि। सु॰।
वारू दीध पहिरावणी,
हय गय रथ हे आभरण अनेक कि। सु॰। ।।१५।।
भगति जुगति राणइ भली, संतोष्या हे सकल राय राण कि। सु॰
लालचंद कहि सांभलउ,
अस बोलइ हे सइंमुखि सुलतान कि सु॰ ।।१६।।

दूहा

बाँह झालि सुलतान कहैं, राय सुणो महाराउ।
महमानी तुम बहुत की, अब हम गढ़ दिखलाउ ।।१।।
रतनसेन साथे हुओ, विपमी विषमी ठोड़।
देखायो सुलतान ने, फिरि-फिरि गढ चीत्तोड़ ।।२।।
विषम घाट वाको घणो, देख्यां छूटै गरव।
खोट नहीं किण वात नो, साज सांतरो सरब ।।३।।
कीज्यें कोड़ि कलप्पना, तोहि न आवै हाथ।
इम विचारी आपणें, इम जंपे दिल्ली नाथ ।।४।।
काम काज हम सुं कहो, बंधव जीवन प्राण।
बहु भगति तुम हम करी, अब सीख[3] मांगे सुलताण ।।५।।
एम कही वगसै वसत, आलम वारम्वार।
कनक रतन माणक जड़ित, आभ्रण शस्त्र अपार ।।६।।

---

१ प्राणकि २ जीमिया धान ३ विदा देहु महाराण

आलिम कहै ऊभा रहो, करयो मया सदीक ।
रावल कहै आगे चलो, ज्युं सुख पावै जीव ॥६॥
ईम कहि गढ बारणे,[1] सचरीयो महाराव ।
खुरसाणी खोटे मनै, देखैं दाव उपाव ॥७॥

राघव चेतन की कुमंत्रणा

ढाल (७)

राग-मारु १ पंथी एक सदेसडो, २ कपूर हुवै अति ऊजलोरे एदेसी
व्यास कहै नहिं एहवो रे, औसर लहस्यें ओर ।
कहस्यो पछै न कह्यो किणै, थे मति चुको इन ठोर ॥१॥
साहिबजीथे मानल्यो मारी बात, वलि एहवी न पायवी घात ॥
सुनि सुलतान मन चिंतवै रे, साच कहै छै एह ।
अवसर चूक गमाड़ियो, मोल न लहीइ तेर ॥२॥ सा० ॥
हुकम कीयो हल्ला करी रे, विचल्यो साह वचन्न ।
जूझारे जाइ झालियो रे, कपटइ राण रतन्न ॥३॥ सा०॥

राणा की गिरफ्तारी

हम महिमानी तुम करी रे, अब तुम हम मेहमान ।
पेशकशी पदमणी कीयां, हिवैं छूटेवो राजान ॥४॥सा०॥
साथे सुभट हुंता तिके रे, तेह हुआ मति मंद ।
हिकमति[2] कांइ न केलवी, राय पड़यो बहु फंद ॥५॥सा०॥
वेड़ी घाली वेसाणीयो रे, राह ग्रह्यो जिम चंद ।
जोरो कोई चालीयो, सिंह पड़यो जिम फंद ॥६॥सा०॥

---

१ बाहिरै २ हिम्मति

गढ ऊपरि वार्ता गई रे, हलहलियो हिंदुआंन।
गढपति झाल्यो आपणो जी, कीज्यें केहोपान ॥७॥सा०॥
गढनी पोलि जड़ाइ नइरे, मिल्यो कटक गढ माहि।
लोक सहु कहै राय जी, मुरिख अकलि सुनाइ ॥८॥सा०॥
कांई कीयो कपटी तणों रे, असुर तणो वीसास।
राय ग्रह्यो हिव पदमणी ने, गढनो करसी ग्रास ॥६॥सा०॥
आय बैठो सुभटा विचै रे, वीरभाण बड़ वीर।
आलोचै मिल एकठा जी, सूर सुभट रिणधीर ॥१०॥सा०॥
एक कहै गढ में थका रे, सबलो करो संग्राम।
एक कहै रूड़ो हुवै रे, राति (दिवस) वाहैं काम ॥११॥सा०॥
टाणो न मिले जूझतां जी, संकट माहिं सामि।
एक कहै नायक विना जी, न रहै जूझया मामि ॥१२॥सा०॥

हतं ज्ञानं क्रियाहीनं, अज्ञानं च हतं नरं।
हंतं निर्नायकं सैन्यं, अभर्त्तारि स्त्रियो हतं ॥१॥

सबलां सुं जोरो कीया रे, कारिज न सरै कोय।
कहै एक मरवो अछे जी, ज्युं भावै त्यू होय ॥१३॥सा०॥
मूंआ गरज न का सरै जी, छल-विण न सरै काज।
'लालचन्द' छल बल कीयां जी, अविचल पामै राज ॥१४॥

चितौड़ दुर्ग में शाही दूत द्वारा पद्मिनी की मांग

दूहा

मिलि मिलि मोटा मंत्रवी, सूर सुभट रजपूत।
इण विधि आलोचै तिसै, आयो आलिम दूत ॥१॥

आलिम[1] आया दूत वे, बूलाया देइ[2] मान।
आलिम साहि तणा वचन, ते परकासै परधान ॥२॥
आलिमसाहि अलावदी, मूंक्या करिवा प्रीति।
मानो जो ए मंत्रणो, तो रंग वाधइ बहु प्रीति ॥३॥

ढाल (८) मेवाडी राजा रे चीत्रोड़ो राजा रे, एहनी—

सुझ[3] मानो वाता रे, जिम होवै धाता रे;
वले एहवी रे वातां घाता दोहरी रे ॥ १ ॥
साहि पद्मणि तेड़े रे, तुम राजा छोडै रे;
बहु कोडै कर तोड़ै वेड़ी लोहनी रे ॥ २ ॥
गढ कोट भंडारा रे, धन सोवन तारा रे,
हय गेवर सारा माणिक जवहरु रे ॥ ३ ॥
अवर[4] नहिं मागै रे, तुम देश न भागै रे,
मागे मन रंगे पद्मणी मनहरु रे ॥ ४ ॥
मन माहि विचार रे, बहु जूझ निवारै रे;
जो तुम देस्यो नारी सारी पद्मणी रे ॥ ५ ॥
तो देस्यो राजा रे, धन मानै ताजा रे,
नहिं छूटण इलाजा बीजा तुम धणी रे ॥ ६ ॥
जो वातें सीधी रे, राणी नवि दीधी रे,
तो होडैं गढ तोडैं नाखु ईण घड़ी रे ॥ ७ ॥
भाजे तुम देस्या रे, भागी टूक[5] करेस्या रे;
तुम राज हरेस्या तुम सेती लड़ी रे ॥ ८ ॥

---

१ तिहां ने तेड़ो मूंकि नैं २ बहुमान ३ तुम ४ अलम ५ मकभूर

ईम भाखी चाल्या रे, परधाने पाल्या रे,
बांहे करि झाल्या आल्या धन बहू रे ॥ ९ ॥
हम सिर तुम खोलै रे, वीरभाण इम बोलै रे,
हम गढ तुम ओलैं राय राणी सहू रे ॥ १० ॥
आलोची रातें रे, कहस्या परभातै रे;
जातै रहवातै सुख हम तुम सही रे ॥ ११ ॥
पाउधारेंउ डेरै रे, आलिम पंति हेरै रे,
विसटालुं चर[1] पाछा फिरै इम कही रे ॥ १२ ॥
आलोचइं केड़ै रे, न हुंता जे डेरै[2] रे,
आघा ले तेड़ै हेडै स्युं होसी रे ॥ १३ ॥

पथविचलित वीरभाण

आलिम अडीलो रे, किण ही परि ढीलो रे,
होवे न रढीलो तुरक गयो गुसे रे ॥ १४ ॥
जो दीज्यैं राणी रे तो न रहै पाणी रे;
विण दीधे गढ जाणी हाणि होवै पछै रे ॥१५॥
जोरें जो लेसी रे, वहु[3] वंद करेसी रे,
तो कांइ नव रहसी रजवट जे अछै रे ॥ १६ ॥
आ पदमणी दीज्यैं रे, घर सुत संधीजे रे,
विण दीधां वंधीजे, छीजै जन घणो रे ॥ १७ ॥
कोई बोल्यो वाणी रे, ए मुँकी अडाणी रे,
राणी घर लीजे राणो आपणो रे ॥ १८ ॥

१ नर २ नेड़ै ३ वलि

वीरभाण विचारइ रे, मन वैर सभारइ रे,
इण सोहाग उतारयो मुझ माता तणो रे ॥१९॥

जो परही दीज्ये रे, सहिजइ छूटीज्ये रे,
कीज्यें न विलंभ इण वातें घणो रे ॥ २० ॥

सुभट समझावै रे, ए वात सुणावै[1] रे,
सगला सुख थावै जउ दीजइ इणै रे ॥ २१ ॥

किणही मनमानी रे, भलीय न जाणी रे, सुभटा ने न सुहाणी रे
विण नायक न ताणी बोल कह्यो किणे रे ॥२२॥

यस्मिन्कुले यत्पुरुषः प्रधानः सएव यत्ने न हि रक्षणीय ।
तस्मिन विनष्टे सकलं विनष्टे नानाभि भंगे ह्यरकावहति ॥

मन दुरमत[2] आवी रे, सगला मन[3] भावी रे,
वीरभाण सोहावी[4] भावी जे हुवै रे ॥ २३ ॥

सगला ही विचारी रे, परभातै नारी रे,
दीज्यै निरधार उठि ईम कहै रे ॥ २४ ॥

सुणि पदमणी सोचै रे, नयणे जल मोचै रे,
परधाने पौचे मन में खलभली रे ॥ २५ ॥

सुभटां सत हारयो रे, राय वधारयो[5] रे,
अम काज विचारयो भव हारण वली रे ॥२६॥

---

१ घणावै २ दुश्रीनी ३ समचावी रे ४ सोहावीजै सही रे ५ वंदि पधारयो रे

पद्मिनी का स्वावलम्बन

किण सरणें जाऊ रे, दीन भाप सुणाउं रे,
सतहीण न थाउं मन कीज्ये खरो रे ॥ २७ ॥
ए सुभट कुजीहा रे, सी कीजइ ईहा रे
मुख असुर न पेखउं जीहा खण्डि मरउं रे ॥२८॥
समझी मन सेती रे, खत्री धर्म खेती रे,
मन[1] धीर धरेती जिम एनी सती रे ॥ २६ ॥
सीता ने कुंती रे, द्रोपदि बहु भंती रे,
लही सकट[2] न सील चूकी रती रे ॥ ३० ॥
सत सील प्रभावइ रे, दुख नइ मउनावइ रे,
बहु आणंद बधावइ, दिन रयणी गरवइ रे ॥३१॥
हिवें[3] सील प्रभावें रे, सुणयो मन भावै रे,
मुनि 'लालचन्द' गावै पावै सुख ध्रुवै रे ॥ ३२ ॥

वीर गोरा के घर पद्मिनी गमन

दूहा

गोरो रावत तिण गढै, वादल तस भत्रीज ।
बल पूरा सूरा सुभट[4], खत्री धर्म (राखै) तेहीज ॥१॥
तजी सेवा रावल[5] तणी, किणही कुबोल विशेष ।
चाकर गयर थका रहें, गास गोठ तजि रेख ॥२॥

---

१ बहु २ कष्ट न चूकउ 'सत एका रती रे ३ सत ४ बिहुं,
५ श्री राण नी ।

जेहवै ते जाता हुता, अवर ज सेवा कर्म ।
तेहवें गढ रोहो हुवउ, रहिया खत्रीवट धर्म ॥३॥
गाठि खरच[1] खाता रहै, अभिमानी वड़ वीर ।
गढ रोहो किम नीसरै, पर दुख काटण[2] धीर ॥४॥
एहवा नें पूछै नहीं, न्याय हुवे तो केम ।
पंडित नै आदर नहीं, मूरख सु' बहु प्रेम ॥५॥

ढाल (९) एक लहरीलै गोरिलारे-ए देशी

गढ नी लाज वहै धणीरे, गोरो वादल राउरे ।
ते सुणीया मोटा[3] गुणी, बुद्धिवंत सूर साहाउरे ॥१॥
गढ नी लाज वहै रे । ॥आ०॥

चित सु' एहवो चिंतवै रे, चालि चढी चकडोलो रे ।
साथ सहेली नें भूलरै रे, ते गई गोरा नी पोलो रे ॥१॥ ग०॥
वैठो दीठो बारणै, गोरोजी गात गयंदो रे ।
हरपित मनि पदमणी हुवैं, ए दूर करेसी दंदो रे ॥३॥ ग०॥
सामो धायो उलही, प्रणमें पदमणी पायो रे ।
मया करी मो ऊपरै रे, गोरिल वोलै माय रे ॥४॥ ग०॥
आज दिवस धन्य माहरो रे, आवी आलसुआ मे गंगो रे ।
पवित्र थयो घर आंगणो, अधिक पवित्र मुझ अंगो रे ॥५॥ग०॥
काज कहो कुण आविया, माताजी मुझ आवासो रे ।
तब वलती पदमणि कहै, अवधारो अरदासो रे ॥६॥ ग०॥

१ गरथ २ कातर ३ पदमिणी ।

सुभटें सीख दीधी[1] सहु रे, खोई खत्रीवट लीको रे।
असुरा घरि अमनें मोकलै, कुमतीया लाज कितीको रे ॥७॥ग०॥

सीख द्यो हिव मुझ नै, आई छुं[2] इण कामो रे।
ग्यान किसै मुझ नें गिणै, कहै गोरा इण गामो रे ॥८॥ग०॥

खरच न खावा केहनो, कोई न पूछै कामो रे।
तोपिण हिव चिंता तजो, आया जो इण ठामो रे ॥९॥ग०॥

अलगो भय असुरा तणो, हुओ हिव मात निचिंतो रे।
जाण्या सुभट वड़ा जिके, जिण दीधो एह कुमतो रे ॥१०॥ग०॥

वर मरवो इण वात थी, राणी देई राओ रे।
छूटावीज्ये एहवो, सुभट न खेलै डाओ रे ॥११॥ग०॥

करसी ते जीवी किसुं, थाप्यो जिण ए थापो रे।
कर जोड़ी राणी कहै, इण घरि एह अलापो रे ॥१२॥ ग०॥

खोयो राय गढ खोवसी, इण बुद्धि सारू एहो रे।
तिण तुझ हुं सरणो तकी, आई छुं इण[3] गेहो रे ॥१३॥ ग०॥

सिंह तणो स्यो स्यालीइ, कारिज करे समारो रे।
गज पाखर गजस्युं चलै, भींत निवाहै भारो रे ॥१४॥ग०॥

ए कारिज तुम स्युं हुवै, तू हिज बीड़ो झालि रे।
सुभट वड़ो तुं माहरोरे, दोहरी वेला में ढालि रे ॥१५॥ग०॥

सुणि माता सुभटा वड़ो, गाजण थो मुझ भ्रातो रे।
तस सुत बादल तेहनें, पिण पूछीजे वातो रे ॥१६॥ग०॥

१ देह २ इतरइ ३ हिव।

गोरा के साथ बादल के घर जाना

बेऊ चाली आविया, बादल ने दरबारो रे।
विनय करी नें बादले रे, आय कीध जुहारो रे ॥१७॥ग०॥
पूछै कारिज पय नमी, कहो आया किण काजो रे।
'लालचद' कहै[1] तस अखीइं, जस[2] मुख हुवै लाजो रे ॥१८॥ग०॥

दूहा

गोरो कहै बादल सुणो, पदमणि साटै राय।
छूड़ावीज्यै एहवो, सुभटे कीधो उपाय ॥१॥
ते ऊपरि ए पदमणी, आई आपा पासि।
स्युं करिवो सूधो मतो, वेघो कहो विमासि ॥२॥
सरम छोड़ी बैठा सुभट, आपे अछा उदासि।
छोडी दीधो रायनो, गाम गोठि तजि[3] ग्रास ॥३॥
लाजत छै नीची दिया, कुल खत्री धर्म सार[4]।
डीलै दोय आपा सुभट, आलिम कटक अपार ॥४॥
किण विधि जीपीजइ किलो[5], ते भाखो भत्रीज।
तिणए[6] आवी तुम कन्न, पदमणि आपेहीज ॥५॥

ढाल (१०) नाहलिया न जाए गोरी रे वणहटै रे, ए देशी। राग-मारू

पदमणि बोले वीरा बादलारे, सुणि मोरी अरदास।
हुं सरणागति आवी ताहरै, साभलि तुझ जसवास ॥१॥पद०॥
हिव आधार छै एक तुम तणो रे, दोहरी वेला दाखि।
सगति न हवै तो सीख द्यो, राखि सकै तो राखि ॥२॥पद०॥

---

१ तसु दाखोय २ जेहनइ ३ जे ४ लार ५ एकिलो ६ तिणले आयो तुम्ह लगि

नहितर पाछे मन जाण्यो करू रे, देखु छु तुम वाट।
सील न खंडु जीभड़ी खंडस्यु रे, कै नाखु सिर काट ॥३॥पद०॥
पच्छिम ऊगै रवि पूरब थकी रे, वारिधि चूकै ठीक।
जलणी जलु कै जल में पडु रे, पिण नहु लोपु लीक ॥४॥पद०॥
एक वार आगै पाछै सही रे, इण भव मरवो होय।
तो स्यु करु हिव जीव नै रे, एक भव में हुवै दोय ॥५॥पद०॥
जउ उदयागत आवइ आपणइ, पूरब कृत पुण्य पाप।
विण भोगविया ते नवि छूटियइ, करता कोडि कलाप ॥६प०॥
किण जाण्यो थो एहवा कष्ट में रे, पड़सी रतन[1] पडूर।
पिण एहवी भावी वणी रे, जेहवो कर्म अंकूर ॥७॥प०॥
सिंहल देश किहा दरिया परै रे, किहा मेवाड़ सुदेश।
किहा सिंघल वीरा री वइंनडी रे, किहा महाराण नरेश ॥८॥
कोइक पूरब भव संबंधसु रे, आइ मिल्यो संजोग।
भवितव्यता रइ जोग मिलइ इस्यो रे, वणियो एम वियोग ॥९॥
पिण मन माहि हिवै जाणु अछु रे, कोइक पुण्य प्रमाण।
बंधव जी तुम सु भेटो हुओ रे, तो भय भागो सुलतान ॥१०॥
मात पिता थे बंधव माहरा रे, हिवै तुम सगळी लाज।
सील प्रभाव मुझ आसीस थी रे, जैत करो महाराज ॥११॥प०॥
अविचल नाम नव खंडे करी रे, भाजो अरि भड़वाय।
राखो पदमणि रतन[2] छुडाइ ने रे, थंभो गढ जसवाय[3] ॥१२॥

१, २, राण ३ थाउ।

जैत थायज्यो रिपु जीपिनें रे, पूरो सुजन जगीस ।
वादल वीरा ए मुझ वीनती रे, जीवो कोड़ि वरीस ॥१३॥प०॥
साहसि करता मन वंछित सरै रे, वरदायक सुर होय ।
ए काची काया थिर नवि रहै रे, जग में थिर जस सोय ॥१४॥
इम सती वचने प्रेरियो रे, मन थयो मेरु समान ।
'लालचंद' कहै[1] चढती कला रे, सामीधर्म गुण जाण ॥१५॥

वादल द्वारा राणाको मुक्त कराने की प्रतिज्ञा

दूहा

सुणि वातां मन उल्हसी, बोलें वादल वीर ।
केहरि जिम त्राडकि नें, अतुली बल रिणधीर ॥१॥
बाबा सुणि वादल कहें, सोई रहो सुभट ।
तो भत्रीज हुं ताहरो, खला करु तिलवट्ट[2] ॥२॥
एकण पासे एकलो, एकणि साहि कटक ।
बाबा तो हुं बादलो, मारि करु दहवट्ट ॥३॥
मात पधारो निज महल, पवित्र थयो मुझ गेह ।
चित मे चिंता मती करो, जेर[3] करू सब जेह ॥४॥
पाव धरु पतिसाह ने, छोडावु श्री राजान[4] ।
जो वासे जगदीस छै, तो करस्यु वचन प्रमाण ॥५॥

ढाल (११) मधुकर नी

काम घणा श्री राम ना, कीधा श्री हणमंत रावत ।
तिमहु श्री रावल तणा, करस्यु काम अनंत रावत ।१।

१ मुनिवर २ खलखट्ट ३ जोज्यो ४ राण ।

बीड़ो झाल्यो बादलइं, आप भुजाबल जोर रावत।
मूकउ मनधरी खलभली, द्यो नोबति सिर ठउर रावत ॥२॥
सामिधरम सुपसाउलैं, नइं तुम्ह सत पसाय रावत।
परदल नें भाजी करी, ले आवो महाराय रावत ॥३॥बी०॥
जिण तुम सुं इम दाखियो, जावो असुरा गेह रावत।
जीभ जलो[1] तिण मनुष्य री, खत्रीवट न्हाखी खेह रावत ॥४॥
विरुद वखाणी पदमणी, सिर पर लूण उतारि रावत।
सूर सुभट सिर सेहरो, तू अमलीमाण संसारि रावत ॥५॥बी०
गोरो जी सुणि बोलड़ा, मन तन हरखित दोय रावत।
सुर होवे असुरा मिल्यां, कायरे कायर होय रावत ॥६॥बी०॥
मन नचिंत तुमे करो, महल पधारौ माय रावत।
बादल बोल न पालटइ, जो कलि उथल थाय रावत ॥७॥बी०॥
सूरिज ऊगै पच्छिमें, मूकै समुंद मरयाद रावत।
ध्रुव चले पिण न चलइ, सापुरिपा रा साद रावत।

वादल की माता के मोह वचन

महल पधार्या पदमिणि, तेहवै बादल माय रावत।
सगली बात सुणी करी, पासै ऊभी आय रावत ॥६॥बी०॥
नैंण झरै मन दुख करइं, मुख मूकै नीसास रावत।
विनो करी सुत वीनवैं, किम दीसो मात उदास रावत ॥१०॥
मो जीवंता मातजी, चिंता सी तुझ चित्त रावत।
कांय तू आमणदूमणी, कहो मुझ स्युं धरी प्रीत रावत ॥११॥

१ वलो।

पूत सुणो माता कहै, सगतें स्यो जंजाल रावत ।
कांय माड्यो किण रै वलै, ए घर जाणी ख्याल रावत ॥१२॥
पूठै स्यु देखो घणो, आगें पाछे तुम एक रावत ।
तू मुझ आधा लाकड़ी, तु कुल थंभण टेक रावत ॥१३॥वी०॥
जीव जड़ी तु माहरै, तू मुझ प्राणआधार रावत ।
तो विण वेटा माहरै, सूनो ए संसार रावत ॥१४॥वी०॥
हिव तू जूझण ऊमह्यो, पोति समाही काल रावत ।
दात अछै तुझ दूधरा, अजी अछै तु बाल रावत ॥१५॥वी०॥
तुझ नें लाज न कोई चढै, गढ मे सुभट अनेक रावत ।
भ्रास न कोई भोगवा, राय तणो सुविवेक रावत ॥१६॥वी०॥
कदी कीधा जाणो किसा, वेटा तें संग्राम रावत ।
लब्धोदय[1] कहै वहु परै, माय समझावै आम रावत ॥१७॥

दूहा

रिणवट रीत जाणै नहीं, विचि[2] विचि वोले एम ।
किम अणजाण्यो कीजिए, कारिज अनड़[3] नि तेम ॥१॥
अजी न साधी घर वरणि, कहता आवै लाज ।
अती उच्छक उतावलो, रखै विगाडै काज ॥२॥
कीधा कदे न आज लगि, एक त्रिणा थी दोय ।
बालक वेटा वादला, किलो किसी परि होय ॥३॥

१ लालचद २ वजि वजि वोले वाल ३ पूत निटोल ।

वादल का मां को प्रत्युत्तर

तब हसी वादल वीनवै, हुं कित बालो माय।
पूछु तुझ नें पय नमी, ते मुझ ने समझाय ॥४॥
पोढुं हिवै न पालणै, फिरि[1] फिरि न चूखुं धाय।
आडो करतो आगलै, धांन[2] न मांगु माय ॥५॥

ढाल (१२) श्रेणिक मन अचरिज थयो, ए देशी

वादल इण परि वीनवैं, मात नहीं हुं वालो रे।
रिणवट आलिम साह सुं, जोइ करूं ढक चालो रे ॥१॥वा०॥
थापी नै वली उथपुं, राय राणा सुलतानो रे।
तो सुं कारज ए हुवै, काय मन में डर आणो रे ॥२॥पा०॥
नान्हड़ किसनइ नाथियो, वासिग नाग वडेरो रे।
नास करइ रवि नान्हड़ो, अंधकार वहुतेरो रे ॥३॥वा०॥
वाल्हड़ो केहरी वचो, भाजे गैवर थाटो रे।
तो हुं थारो छावडो, रिपु न्हाखुं दहवाटो रे ॥४॥वा०॥
मति जाणो थे मात जी, कुल नें लाज लगाऊ रे।
गजण छावो गाजतो, आज करी नें आऊंरे ॥५॥वा०॥
जो पाछा पग चातरुं तो जाणो मति रजपूतो रे।
कायर वाणी किम कहै, देखो सुत करतूतो रे ॥६॥वा०॥
सूर वचन रजपूत[3] ना, चित में चिंता व्यापी रे।
मन माही वहु खलभली, सीख न तास समापी रे ॥७॥वा०॥

१ घूढ़ि न चूघु धाइ २ थान ३ सुनि पुत्र नउ।

वादल की पत्नी का प्रयास

बहुआ नैं आइ कहै, माहरो वचन ज मानो रे।
थे समझावो जाय ने, जो क्युं ही नेह पीछाणो रे ॥८॥वा०॥
सोल शृंगार सझि करी, सुकलीणी सुविलासो रे।
जाणे झबकी बीजली, आवी प्रीउ नै पासो रे ॥९॥वा०॥
रूपइ रंभा सारिखी, मृगनयणी गज गेलि रे।
कचनवरणी कामिनी, साची मोहन वेलि रे ॥१०॥वा०॥
विनय वचन करि वीनवइ, हसत वदन हितकारो रे।
साहिब वीनति साभलो, तन मन प्राण आधारो रे ॥१२॥वा०॥
साथ सबल पतिसाह नो, मुगल महा दुरदंतो रे।
एकाकी इण परि कहो, किम पूजीजे[1] कंतो रे ॥१२॥वा०॥
कहै वादल सुण कामनी, जोइ करूं जे जंगो रे।
वज्र घणो नानो हुवइं, तोडै गिरि उत्तंगो रे ॥१३॥वा०॥
वात करंता सोहिली, पिण दोहली रिण वेला रे।
सामी एहवइ मंत्रणइ, काय करो जन हेला रे ॥१४॥वा०॥
सूर पणै वादल कहै, स्यानै भय देखावो रे।
तेह नाहिं हुं वादलो, हिव द्युं हेठो दावो रे ॥१५॥वा०॥

वोलइं मोटा वोल, निश्चइ' निरवाहइ नहीं।
तिण माणस रौ मोल, कोड़ी कापड़ियो कहइ ॥१॥

गोला नालि वहै घणा, हय गय रथ भड झूझै रे।
घोर अंधार रिण रजकरी, सूरिज सोइ न सूझै रे ॥१६॥वा०॥

---

1 पहुचीजइ।

मुगल महाभड़ साहसी, मूंकै दोय दोय वाणो रे।
'लालचंद' पतिसाह स्युं, पूजै केहो किम पाणो रे ॥१७॥वा०

दूहा

शस्त्र ग्रही मोटा सुभट, दयें चौकी दिशि च्यार।
साहि सबल पति एकलो, भलो न एह विचार ॥१॥
तब बादल हसि नें कह्यो, कही किसी थे बात।
रावल छोडावुं रतन, तो गाजन मुझ तात ॥२॥
हुं गंजुं हय गय सुभट, भाजि करुं भकभूर।
सतावीस लख दल सहित, साहि करुं चकचूर ॥३॥
नारि कहै[1] रहो रावलो, किसो जणावो पाण।
अजीस नारी आपणी, साधि न[2] हुवे सुजाण ॥४॥
नारी सुं न्हाठा फिरो, मिटी न वाली लाज।
तो कहो कसी परि जूझस्यो, करस्यौ केहो काज ॥५॥

दृढप्रतिज्ञ वीर बादल को स्त्री द्वारा सीख

ढाल (१३) नदी यमुना के तोर उडै दो पखोया —ए देशी—
तउ वलतो बादल कहै सुण कामनी।
तिण दिन आवीस सेज तुमारे जामनी ॥१॥
जीपी आउं जिण दिन वैरी हुं एतला।
छोडावुं श्री राण कि लोह[3] करी कै भला ॥२॥

१ कहर हुवौ वड़ौ २ सीधी नहीं ३ ला करि मलि भला।

तो दस मास न झाल्यो भार मुझ मात जी ।
तें भाखीज्यें वात करुं तिण मे कजी ॥३॥
सूरातन मन देखी नारी तब इम कहै ।
भलो भलो भरतार सु मन मे गह गहै ॥४॥
हम हैं तुमारी दास कि पग की पानही ।
निरवाहैजो वात जेती मुख स्युं कही ॥५॥
मति किणही वातइ ढहि जाहु कि लाजवउ ।
वंश वधानउ शोभ विरुद बहु छाजवउ ॥६॥
घालैयो नें घाव घणो साहस करी ।
खेसवयों रिण खेत खडग हणी लसकरी ॥७॥
होय छछोहा लोह घणा थे वावयो ।
हल करयो हथवाह अरी दल गाहयो ॥८॥
द्यो मति पाछा पाव मरण भय[1] मति गणो ।
जीवण थी इणि वात सुजस काइ द्यो घणो ॥९॥
भिड़ता भाजै जेह मरै निहचै करी ।
कानि सुणउं एहवात मरुं लाजइ खरी ॥१०॥
सुभटा मांहिं सोभ घणी थे खाटयो ।
नव खंडे करी नाम अरी दल दाटयो ॥११॥
सुभट कहावै नाम सहू ही सारिखो ।
पण रिण माहिं तास लहिज्यें पारखो ॥१२॥

1 जउ ।

तिम करयो जिम हुं मन माहिं गहगहूँ ।
छल बल करयो काम घणो कासुं कहूँ ॥१३॥
जीवन मरणे साथ तुमारो मइं कियो ।
हिव करयो हथवाह करी करडो हीयो ॥१४॥
भूखा घर नी नार पूछी[1] कुमतो कहे ।
तिण सगलें संसारि बहुत अपजस लहे ॥१५॥
उत्तम राजकुमार सदा सुमतउ दियइ
धीरज कुलवट रीति रहइ जग जस थियइ ॥१६॥
हिव साची मुझ नार जिणें सुमतो कह्यो ।
निज कुल राखण रीत हिवै मन गहगह्यो ॥१६॥
सुभट तणो सिणगार करायो[2] नारीइं ।
बंधाया हथियार भला निज करि लीइ ॥१७॥
निज माता रा चरण नमी चित हरखीयो ।
होय घोड़ै असवार गोरिल घर सरकीयो ॥१८॥
करी जुहार कहि राज रहो ता लगै घरै ।
जाय आउं एक वार कटक पतिसाह रै ॥१६॥
कहै गोरो मुझ बात सुणो तुम बादला ।
तुम जाओ मुझ छाड रहै किम मुझ कला ॥२१॥
काकाजी मन माहिं न तुम चिंता करो ।
रिणवट एको साथ हुसी आपा खरो ॥२२॥

१ पूठी कुमतइ २ सजाओ ।

कौल करु छुं दक्षिण हाथ देई करी ।
हु जाऊ छु चास भास देखण करी ॥२३॥

मेवाडी सुभटों की सभा में

चादल ले आदेश गौरा रावत तणो ।
सुभट मिल्या तिहा जाय साहस मन मे घणो ॥२४॥
देखि सभा सगली मनमइ विस्मय थई ।
आवइ नहिं दरवार कदे क्यों आवई ॥२५॥
सुणिज्यइ गाजन नंदण सूर महावली,
सही विचारी वात कोइक रिण री रली ॥२६॥
बैठा राजकुमार सुभट सहू एकड़ा ।
धसि आयो तिण ठाम (सुभट) सहु हुओ खडा ॥२७॥
दे आसण सनमान प्रीयोजन पूछ ही ।
आया चादल राज कहो ते किम सही ॥२८॥
आलोची सी वात वादल विहसी कहै ।
जिण थी थी सुभटा लाज राज कुसले रहै ॥२६॥
आलोची निज वात माडी नै सहु कही ।
राणी देई राय छुडावण री सही ॥३०॥
आलोच्यो आलोच अम्हारो ए अछै ।
कीज्यें तेह विचार कहो जे तुम पछे ॥३१॥
वादल बोले वारु कीयो ए मन्त्रणो ।
पिण इक माहरी वात सुणि आलोचणो ॥३२॥

सगतें सुभट संग्राम करै मन गहगही ।
पिण नवि मूके माण बात जें संग्रही ॥३३॥
मान विना नर कण विण कुकस जेहवो ।
'लालचंद' नर टेक न[1] छंडै तेहवो ॥३४॥

कवित्त

अंगीकृत अनुसरइ होइ सापुरिस जु साचा,
अंगीकृत अनुसरइ होइ कुल जातै जाचा ।
अंगीकृत ईस्वरइ जहर पीधउ दुख हंतइ ,
वारिध वाड़व अग्गि वहैं पाणी सोसंतइ ।
काछिवउ कंध वहु धावही, अजहु भार एवड सहइ ।
मुनि लाल वयण आदरि जके, सो सज्जन वहु जस लहइ ॥१॥

दूहा

काया माया कारमी, जात न लागइं वार ।
सूरपणें कायरपणै, मरणो[2] छै एक वार ॥१॥
तउ ढांढा हुइ किम मरौ, मरउ तउ मरण समारि
पत जास्यै पद्मणि दीया, अमचउ एह विचारि ॥२॥
राय लीइं राणी दीइं, जाण्या यद्रि जूझार ।
मस्तक केस न को रहइ, अपकीरति संसार ॥३॥
नाक मुंकिजो ऊवरया, केहो जीवन स्वाद ।
देश विदेश छाडो[3] पडो, तजीइ किम कुल मरजाद ॥४॥

---

१ बात निवाहइ २ कोई मरण न टालणहार ३ छाँटो मरु इम रहइ

वीरभाण वलतउ कहइ, बोल्यंइं घणे पराण ।
वादल बात भली कहउ, पिण समझ्ता नहीं तिलमान ॥५॥
बादल बात भली कहो, अनेन समझ्ता मोड़ ।
रखे राणी राजा लीयो, तो पति राखो चितोड़ ॥६॥

ढाल १४ म्हारी सुगण सनेही अतमा, ए देशी

आलिमपति अलावदी, ईश्वर नो अवतार रे भाई ।
मुगल महाभड जेहनै, लाख सतावीस लार रे भाई ॥१॥आ०॥
एक हुकम करता थका, उठै एक हजार रे भाई ।
सगले थोके सावतो, पहुंचीजे किम पार रे भाई ॥२॥आ०॥
कलै कलै पदमणी राखसु', राय छंडी हजूर रे भाइ।
पतिसाह प्रति लोपी ने, घूक अंध नित घूर रे भाई ॥३॥आ०॥
कहि बादल सुण कु'वरजी, स्यउ आपा ए सोच रे भाई ।
काइ आलोचइ केहरी, मारता मदमोच रे भाई ॥४॥आ०॥
इम करता जो को मरइ, तउ जगि कीरति होई रे भाई ।
कन्या साटइ पामता, सु'हगी कीरित सोई रे भारे ॥५॥आ०॥
कुमर कहै इण बात री, कीज्यैं ढील न काई रे भाई ।
सोई अरजून जाणीइं[1], जे वेवो वालै गाय रे भाई ॥६॥आ०॥
रहै पदमणी आपणै, नइ वलि छूटइ' राण रे भाई ।
इण वातइ कुण नहिं हुवइ, सुप्रसन मनहि सुजाण रे भाई ॥७॥
वादल कहै[2] सहू भलो, हुइ आवीसीइ तुम नाम रे भाइ ।
करज्यो वासइ कुमर जी, सवलो ऊपर सामि रे भाई ॥८॥आ०॥

१ समझ्िइ, जि कोइ २ बोलइ

पहिली मति ऊँधी करी, आलम तेड्यो माहि रे भाई।
तेड्यो तो मारण तणो, कीधउ दाव सु नाहि रे भाई ॥६॥आ०॥
जहर कहर मुगल मिल्या, गढ में तीस हजार रे भाई।
छल बल करि नवि छेतस्या, तौ स्यौ सोच हिचार रे भाई ॥१०॥
लसकर माहि जाइ नै, ले आवु छुं बात रे भाई।
इम कहि नै अश्वै चढ्यो, साहस एक सघात रे भाई ॥११॥आ०॥
ऊतरीयो गढ पोलि थी, निलवट निपट सनूर रे भाई।
अँगै आऊध अति भला, प्रतपै तेज पडूर रे भाई ॥१२॥आ०॥
एकलमल अश्वे चढ्यो, अभिनव इन्द्र[1] कुमार रे भाई।
आलिम देखी आवतो, पूछायो तिण वार रे भाई ॥१३॥आ०॥

सीह न जोवइ चंदवल न जोवइ वर रिद्धि।
एकलड़उ वहुआ भिड़ा ज्यां साहस त्यां सिद्धि ॥

पूछ्या थी बादल कहै, मेलि करण रै मेलि रे भाई।
जाइ कहउ हुँ आवियउ, पदमिणि तुम नइ गेलि रे भाई।१४।आ०
तुम उपगार करु वड़ो, मानै जो मुझ बात रे भाई।
सेवक आवी इम कहै, हरख्यो आलिम गात रे भाई ॥१५।आ०।
तेड़ायो आदरि करी, दीठो अति बलवंत रे भाई।
वैसाण्यो दे वैसणो, मान लहै गुणवंत रे भाई ॥१६॥आ०॥

हंसा जहाँ जहाँ जात है, तहाँ तहाँ मान लहत।
कग्गा वग्ग कग्ग वग, कग वग कहा लहंत ॥

---

१ अग्नि।

बुद्धिवंत बादल राइ ने, पूछै श्री पतिसाहि रे भाई।
सलाम करी बैठो तिसै, आलिम हूओ उच्छाहि रे भाई।१७।आ०।
'लालचन्द' कहै बुधि थकी, दोहग दूर पुलाइ रे भाई।१७।आ०।

दूहा

नाम तुमारा क्या कहो, किसका है तूँ पूत।
क्या महीना रोजगार क्या, किसका है रजपूत॥१॥
किण भेज्या किण काम कु, आया है हम पास।
तब वलतो बादल कहै, बुद्धिवंत हीइं[1] विमास॥२॥
बोली जाणइ अवसरइ, माणस कहीइ तेह।
बादल इण परि बोलीयउ, जिम वधीयो आलम नेह॥३॥
बल थी बुध अधिकी कही, जउ ऊपजइ ततकाल।
बानर बाघ विणासियो, एकलडइ सीयाल॥४॥
नाम ठाम कहि वीनवैं सुभट चल्या अभिमान।
तिण मुकियो छानों मनै[2], पदमणीयें परधान॥५॥

ढाल (१५)—सइमुख हु न सकुँ कही आडी आवे लाज

जिण दिन थी तुम देखीया जिमवा मउसरि साह।
तिण दिन थी पदमिणि मन वसिउ तुम्ह माहो रे॥१॥
सुण आलिम धणी। विरह विथा न खमायो रे,
वात किसी घणी॥आकणी॥
ते धनि नारी नारी जाणीइं जेहनिइ ए भरतार।
इण थी रूप अवधि अछै, काम तणो अवतारो रे॥२॥सु०

१ मनइ २ पद्मनी।

राति दिवस झूरती रहैं, मूकें मुखि नीसास।
नयणे नीझरणा झरें, नारी अधिक उदासो रे ॥३॥सु०॥
जिण दिन थी थे वीछार्या, नयणे नेह लगाय।
सुख जाणइ यम सारिखो, भुवन भाठी सम थायो रे ॥४सु०॥
तरुणापउ विस सउ लगइ, सोल शृंगार अंगार।
अगनि झालि सम चादलउ, जालण वालण हारो रे ॥५॥सु०॥
भूषण जाणि भुजंग सा, चउकी चाक समान।
वीछु सम ए विछीया, सिज्या अगनि समानो रे ॥६॥सु०॥
वारु जेह विछावणा, तीखा वरछा जाणि।
पड़दउ तेह पहाड सउ, अन्नण आवइ खाणो रे ॥७॥सु०॥
देह गई सब सूकि नैं, नयने नींद हराम।
राति दिवस रटती रहें, साहिब जी तुम नामो रे ॥८॥सु०॥
भूख प्यास लागै नहीं, चिन्ता व्यापी देह।
कीधी का तुम्ह मोहिनी, निवड़ लगायो नेहो रे ॥९॥सु०॥
मास लोही नामइ रह्यउ, छाती पड़ियउ छेक।
दुक्ख दुसह किम करि सहइ, तुम्ह विरह सुविवेको रे ॥१०॥सु०
पलक गिणें एक मास सउ, घड़ीय गिणें छम्मास।
वरस समान दिन नइ गिणइ, इम विरह पींडइ तास रे ।११।सु०।
तुम्हसु लागउ नेहलउ, जाण मजीठउ राग।
पट्टकूल फाटे थकें, रहें त्रागा सुँ लागो रे ॥१२॥सु०॥
तूं जीवन तू आतमा, गत मति प्राण आधार।
सासें सासें संभरइ, पदमिणि वार हजार रे ॥१३॥सु०॥

मुख करि किम कहतइ वर्णों, जे तुम्ह सेती राग।
ते मन जाणै तेहनो, लागो जिण विधि लाग रे ॥१४॥सु०॥
विगति लहै विरहा तणी, विरही माणस तेह।
'लालचन्द' कहइ मोवतइ, कहियइ न जावइ तेह रे ॥१५॥सु०॥

दूहा

चीठी दीधी चूपस्युं, वाची देखें साहि।
समाचार विगतें सहित, सगला ही इण माहि ॥ १ ॥

वइत हजार दरवदिल मेर सजिइरिया रु चिहुँ नमसु
बुइ कुनम् आदिल फेवद रद हजार ॥ १ ॥
तन रार वाव साजिम् रंग हाजितार तार दीगर,
सरोजनें स्तेव जुज वार योर् यार ॥ २ ॥

मइ मन दीनो तोहि, जा दिन तो दरसन भयो।
अव एती वीनति मोहि, प्रेम लाज तुम निरवहाँ ॥२॥
मइ मन दीनो तोहि, सकइ तो ऊडि निवाहीयं।
नातरि कहीइ मोहि, हु मनि वरजउं आपणउ ॥३॥
निसि वासर आठउं पहर, छिण नहिं विसरूं तोहि।
जिहि जिहि नइन पसारहुँ, तिहि तिहि देखुं तोहि ॥४॥
आठ पहोर चोसठि घड़ी, जबही न देखुं तुझ।
न जाणुं तइ क्या कीया, प्राणपीयारे मुझ ॥५॥
दोवैता दूहा सहित, चीठी एक उपाय।
बादल दीधी साहिनै, अकलि थकी उपजाय ॥६॥
बले कहै आलिम तणा, यदि आया परधान।
सुभटा मरणो आगम्यो, पिण न तजै अभिमान ॥७॥

वीरभाण राजा सहित, सुभटा नैं समझाय ।
ज्युं ज्युं कान ढेराई नैं, हुं आयो तुम पाय ॥८॥
राणी मूँक्यो मो भणी, घणी वीनती कीध ।
हिव हुं जाणुं तुम तणी, होसी मनोरथ सिद्धि ॥६॥

ढाल (१६)—वदणा करुं वारवार-ए-देशी-प्राहुणारी

वालेसर हो वली परभातै वात, कहस्युं आइ होसी जीसीजी ।
दिलीसर हो वांची चीठी वात, सीख करा जावा घरे जी ॥१॥
जोती होसी वाट, विरह व्यथा पीड़ी थकी जी ।दि०।
जाय टालुं उचाट, तुम सदेश मूधा करी जी ॥२॥
इण परि साभली बोल, पदमणि प्रेमइ वाधियो जी ।
आलिम मन झकझोल, कीधो बादल वाय करै जी ॥३॥
मूँकै मुख नीसास, चीठी वाचै चूंपस्युं[1] जी ।
आलिम मन मृगपाश, पदमणि कागद पाठइयो जी ॥४॥
नयणा रे नीर प्रवाह, विरह अगनि व्यापी घणी जी ।वा०।
ए अचिरज मन माहि, भभकइ अधिकी भीजता जी ॥वा०॥५॥
हृदय समुद्र अथाह, माही विरहानल दहइ जी ।वा०।
नयन वीजलि रइ नाह, वूंठइ न्याय न नीसमइ जी ॥वा०॥६॥
वल घट हलीयो रे जाय, प्रेम सुणी पदमणि तणइ जी ।वा०।
मुख सुं कागल लाय, वार वार चुम्बन करइ जी ॥वा०॥७॥
खूब लिख्या इण माहि, सदेशा साचा सहु जी ।
दिलीसर हो उठे कराहि, काम तणं बाणै हण्यो जी ॥८॥

---

१ प्रीत सूं ।

अहि सम आलिम साहि, साहि न सकतो को सही जी ।
पदमणि मंत्र चलाइ, वादल गारूड वसि कीयोजी ॥६॥
पाहुणउ तूं हम आज, कहुँ ते महिमानी करा जी ।वा०।
सगली तुम्ह नइं लाज, वादल राज हमा तणी जी ॥वा०॥१०॥
सुभटा सहु समझाय, साहि कहै वादल सुणो जी ।
सगली[1] तुम नें लाज, थापैयो एहिज मतो जी ॥११॥
करता तुम उपाय, जो किम ही करि पदमणी जी ।
हाथ चढै हम आय, तो देखे कैसी करुं जी ॥१२॥
इम कहि हय गय सार, लाख सोनइया रोकड़ा जी ।
वारु वले[2] सिरपाव, वकस कीया वादल भणी जी ॥१३॥
रुको द्युं तुम हाथ, प्रीत वचन माहिं लिखुं जी ।
जाइ पडें पर हाथ, आलिम इम[3] वचने नहीं जी ॥१४॥
तुम विरह की बात, वचने करि कहिस्युं घणी जी ।
चिठी आवै न घात, कोई जाणै भाजै मतो जी ॥१५॥
महिर करी हिव मोहि, वीदा करो वेघो घणो जी ।
आलिम साथे होय, पोलि लगे पहुँचावीयो[4] जी ॥१६॥
धन लेइ आयो देखि, हरख्यो माता नो हीयो जी ।
वंछित फल विशेष, "लालचंद" धरमे सहीजी ॥१७॥

दूहा

खुशी हुई नारी खरी, धन दिवस निज जाणि ।
गोरोजी[5] मन हरखीयो, करसी काम प्रमाण ॥१॥

---

१ दूध न डाग दिखाय, २ वस्त्र अपार ३ इलम वच नहीं जी
४ पहुँतो कीयो जी, ५ गोरोपिण मन गरजीयो ।

पदमणी पिण मन गहगही, ए मेलवसी भरतार।
सुभट सहू मन संकीया, ऐ ऐ बुद्धि भंडार ॥२॥
सगत छिपाई नवि छिपइ, सहजइं प्रगटइ तेह।
गाठड़ि इं जोइ वाधिइ, तउही अगनि दहेहि ॥३॥
जइ घट विधना गुण दीपइ, निंदइ मनि मतिमन्द।
जउ कुंडे करि ढाकीयइ, तउ छिप्यो रहत कत चंद ॥४॥
एण समै आया तिहा, जिहा वैठा राय राण।
मांड्यो एहवौ मंत्रणो, वादल बुद्धि प्रमाण ॥५॥

ढाल (१७)—साधजी भलें पधार्या आज ए-देशी

सोवन कलश सुहामणाजी, करी जरी रमझोल।
सहस दोय सावत करो जी, चित्र रचित चकडोल ॥१॥
कुमरजी मानो ए मुझ वात, जिम कारज आवइ धात ।कु०।आ०
तिण माहि दोय दोय भला जी, जे सलह[1] पहरी जुवान।
शस्त्र घणै करि सावता जी, वैसाणो वलवान ॥२॥कु०॥
पदमणि री विच पालखी जी, सखर करें सिणगार।
ढांको पदमिणी वस्त्र स्युं जी, भमर करइ गुंजार ॥३॥कु०॥
गोरो जी वैसाणयो जी, पदमणि जी रे ठाम।
पालखीयां सखीयातणी जी, सुभट करो विश्राम ॥४॥कु०॥
लारो लार लगावयो जी, छेटि म राखो काय।
केलवणी करयो इसी जी, जिम वाहिर न दीखाय[2] ॥५॥कु०॥

---

१ जोसण २ लखाय।

गढ थी मांड सेना लगें जी, करयो हारा डोर।
वार घणी विलंबयो जी, जतन करेयो जोर ॥६॥कु०॥
पातिसाह पासें जाईइं जी, हुं करस्युं जे वात।
रावल जी छोडायस्यां जी, पाछै करेस्यां घात ॥७॥कु०॥
भलो भलो सुभटे कह्यो जी, थाप्यो एहज थाप।
इम आलोच आलोचता जी, प्रात हुओ गत पाप ॥८॥कु०॥
सुभट सहु समझाय नें जी, चढीयो वादल वीर।
तिम हिज पहुंतो लसकरे जी, धरतो तन मन धीर ॥९॥कु०॥
करी तसलीम ऊभो रह्यो जी, हरख्यो आलिम साहि।
पूछे वात कहो किसी जी, काम कीयो के नांहि ॥१०॥कु०॥
वहुत निवाज तुझ[1] कुं करुं जी, वादल बोल्यो साच।
सिरै चढें कारिज सहू जी, साची[2] वादल वाच ॥११॥कु०॥
सुभटा नें समझाय ने जी, नाकैं आई नीठ।
पदमणी नी आणी अछै जी, पालखीया गढ पीठ ॥१२॥कु०॥
सुभट सहु मिलि विनती जी, कीधी छै सुणि सामि।
जोख पदमणी री करो जी, तो राखो हम माम ॥१३॥कु०॥
पेस करा जो पदमणी जी, तुम[3] उपजै वीसास।
विण वीसास किसी पर जी, ह्वै सहु ने रंग रास ॥१४॥कु०॥
कहि आलिम कैसी परैं जी, तुम वीसासउ मन।
'लालचंद' कहै सामलो जी, वादल कहेज वचन ॥१५॥कु०॥

---

१ बहुउ २ अविचल ३ जो।

दूहा

मन माहि संके सुभट, पदमणि दीधी राय ।
जो छूटे नहिं तो रखे, दोन्यु स्वारथ जाय ॥१॥
तिण हेते लसकर तुमे, विदा करावो साहि ।
सहस पच[1] राखो नखें[2] जो डर आणो मन माहि ।
इम सुनि कहइ उच्छक थको, काम गहेलो साह ।
कहो कुण थें हम डरइं, हम सूं जगत डराय ॥३॥
चतुर किहा तू चातर्यो, वकें जु अइसी वात ।
हम सु डरै जो सुर असुर, मानव केही मात ॥४॥
कूच तणो कीधो तुरत, आलिम साहि हुकम ।
लशकर के लोध्यां[3] वणो, पाम्यो सुख परम ॥५॥
सहस च्यार साऊ सुभट, रहो हमारे पास ।
अवर कटक सव ऊपड़ो, ज्युं हिन्दु हुवै वीसास ॥६॥
सहस च्यार पासे रह्या, अउर चल्या ततकाल ।
कहै साहि कीधो फीयो, अच वादल कओल सुपाल ॥७॥

ढाल (१८) वलध भला छे सोरठा रे-एदेशी

लाख सोनइया रोकडा रे लाल, सखर देई सिर पावरे सरागी ।
वादल ने आलिम कहे रे वेगउ पदमिणी ल्याव रे स० १
वुद्धि भली वादल तणी रे लाल, देखी खेलइ दाव रे स० ।
ले लखमी घर आवियो रे लाल, माता हरख अपार रे सरागी ।
वले सकेत वणाइयो रे लाल, सुभटा ने समझाय रे ॥२॥वु०॥

---

१ चार २ सुभट ३ लोके सबइ ।

ले आवयो पालखी रे लाल, लारो लार लगार रे सरागी ।
खत्रीवट राखेजो खरी रे लाल, कमियन करजो काय रे ॥३॥बु०॥
इम कहि आघो चल्यो रे लाल, ले लारें सुखपालरे सरागी ।
आलिम देख्यो आवतो रे लाल, बूलायो दरहाल रे स०॥४॥बु०॥
बुद्धिवत तो अधिको हुंतो रे लाल, राघव चेतन व्यास रे सरागी
सामीद्रोह पणाथकी रे लाल, छल न लखाणो तास रे ॥५॥बु०॥
कहे वादल आलिम भणी रे लाल, पदमणी वीनती एह रे सरागी।
अब हुं आई तुम घरे रे लाल, निवहड करेज्यो मेह रे ॥६॥बु०॥
साची माया मन सुद्ध सु रे, मान महत सोभाग रे स०
मउज एहिज मागु छहु रे लाल राखेज्यो मन राग रे स० ॥७॥बु॥
घरे महल तुम्ह कइ घणा रे लाल, खेल करउ मनखास रे स०
पिण पटराणी मुझ भणी रे लाल, करजो एहअरदास रे स०।८।बु०
आलिम कहे तुम ऊपरे रे लाल, नाखुं तन मन उवारि रे सरागी
जीव थकी पिण वालही रे लाल, भावे तु मारि उगारि रे॥९॥बु॥
नारि एक करइ नहीं रे लाल, तुझ नख एक समान रे स०
तुम सेवक हरमा सवइ रे लाल, मइ बदा सुलतान रे स० ।१०।
तुम कारण[1] हठ मैं कीयो रे लाल, लोपी वचन ग्रह्यो राय रे सरागी
राणी ले आवो वादलो रे लाल, ढील न कीज्यो काय रे ॥११॥
एम कही पहरावियउ रे लाल, ले आयो वकसीस रे स०
प्रमुदित मन परिजन हुओ रे, साहस वसि जगदीश रे।स०॥१२॥

1 काजे ।

धोवत[1] पग थे आवियो रे लाल, इम सुभटा समझाय[2] रे सरागी
आयो वले आलिम कनै रे लाल, वारु वात वणाय रे ॥१३॥वु॥
परगट हुई पालखी रे लाल, सोवन[3] कलस सोहात रे सरागी।
वार वार विचमे फिरै रे लाल, वादल पदमणी वात रे ॥१४॥वु॥
होठ वुद्धि जेहने हुवइ रे लाल, दोहरी केही वात रे सरागी।
लालचंद कहि वुद्धि थकी रे लाल, वादल खेलइ घात रे ॥१५॥

दूहा

फिर फिर पदमणिरै मिसे, करतो वादल वात।
रह्यो पहोर दिन पाछलो, तेहवै पूगी[4] घात ॥१॥

लसकर पिण अलवो गयो[5], जूझण वेला जाणि।
वड़े वेर हम कुंभई, वादल[6] कहें ए वाणि ॥२॥

एक वार रावल ईहा, मुंकी हमारे पासि।
दोय च्यार वातां करी, आवूं तुझ आवासि ॥३॥

हाथें करि परणी हुंती, लोक तणें व्यवहार।
सीख करी पुंसली भली, आवण रो आचार ॥४॥

पदमणी वोल सुणी ईसा, सुणि वादल कहे राय[7]।
भली वात पदमिणी कही, हम खुशी हुआ मन मांय ॥५॥

१ धोमत २ सीखाय ३ देखि आलम दुख जात रे ४ पुहती
५ रहयो ६ सुनि वीनति सुलतान ७ साहि।

ढाल— (१६) सदा रे सुरंगा थे फिरो आज विरगा काय ए देशी

साची कही ए पदमणी, जेहमें एहवो सुविचार रे लाल।
आलिम वले वले इम कहै, धन भगतिवती भरतार रे लाल ॥१
बुद्धि करी रे बादलैं, भलो सामी ध्रम प्रतिपाल रे लाल ॥बु० ॥
तुरकें तुरत हुकम कीयो, जावो बादल आज रे लाल।
रावलजी छोडाय ने, हम मेलो पदमणी राज रे लाल ॥२॥बु०॥
हुकम लेई नें आवीयो, जिहाछै रतनसेन महराण रे लाल।
करी तसलीम ऊभो रह्यो[1], राय कोप चढ्यो असमान रे लाल ३
फिट रे वैरी बादला काई, सामीद्रोही कीध रे लाल।
खत्रीधर्म खोयो तुमे, मो साटै पदमणी दीध रे लाल ॥४॥बु०॥
निरमल कुल मइलो कीयो, मूडी खरीय लगाई खोड़ि रे लाल।
ते निसत्त हुया डर मरणरइ, मुझ लाजगमाई छोड़ि रे लाल ॥५॥
वलतो बादल वीनवैं, ए अवर अछै आलोच रे लाल।
भलो होसी तुम भागस्युं, स्युं आणो मन मे सोच रे लाल ॥६॥
भूप चाल्यो मन समझि नइ, तब आलिम भाखें एम रे लाल।
राय आणो पदमणि मेलि नें, जिम सीख समपुं हेव रे लाल ॥७॥
पदमणी दिशि राय चालीयो, वैठो पालखीया माहि रे लाल।
तब वात सहु साची लखी, बादल री बुद्धि सराहि रे लाल ॥८॥
वेला नहीं वार्ता तणी राय हुउ हुसियार रे लाल।
पालखीया री सेन मे, होय पहुंतो गढ रै पार रे लाल ॥९॥बु०॥

---

१ जिस्यै।

गढ में पहुंचि वजाडयो, जागी ढोल निसाण रे लाल।
थे[1] पहुंता म्हे जाणस्या, साचो ए सहिनाण रे लाल ॥१०॥वु०॥

वात सुणि हरखित थयो, तुरत गयो गढ माहि रे लाल।
कुशले छूटा कष्ट थी, जाणे सूरिज मूक्यो राह रे लाल ॥११॥

आणद मन माहि ऊपनो, मन हरषित पदमणी नारि रे लाल।
गढ में रंग वधामणा, धवल मंगल जय जय कार रे लाल ॥१२॥

पदमणी शील प्रभाव थी, वले वादल वुद्धि प्रमाण रे लाल।
'लालचंद' कहै जस घणो, कुशले छूटा श्री राण रे लाल ॥१३॥

दूहा

सहनाणी पूरण भणी, हरषित तणो सहिनाण।
नोवति[2] ढोल वजाड़िया, घणा घुरइ नीसाण ॥१॥

सुणि वाजा गाज्या सुभट, ऊठ्या योध अनम्म।
नवहथा जित भारथा, माणस रूपी जम्म ॥२॥

राघव मुख कालो हुओ, नवि लिखीयो परपंच।
कूड घणो कीधो हुंतो, सीधो काम न रंच ॥३॥

सामी काम हणमंत[3] जाणयो, गोरो गुणह गंभीर।
अरिदल देखी उलस्यो, सूरातनह सरीर ॥४॥

सुभट धस्या हुइ सामठा, मुखि गोरउ रिम राह।
अंग अंगरखी सजी, वगतर सवल सनाह ॥५॥

१ तब २ जांगी ३ हनुमानसो।

ढाल—(२०) नाथ गई मोरी नाथ गई ए देशी।

दिल्ली का नाथ, हिव तु देख हमारा हाथ मिया ऊभो०।

ऊभो रहें रे ऊभो रहै, ऊभो रहै

ऊभो रहे मत छोड़ पाउ, जो पदमणी परणेवा चाह ॥१॥

मीया जी ऊभा रहो।

अम ऊभा तुम हुंती खति, पदमणि परणेवा वहु भति ॥२॥मी०॥

मैं आणी छै जे तुम काज, ते हिवै तुझ देखाउं आज। मी०।

राणी जाया च्यार हजार, सूर सबल मोटा जूझार ॥३॥मी०॥

दोड़या ले हाथे करवाल, धूम मचायो माड्यो ढक चाल ॥४॥

दीठा ते दिली रे नाथ, सगलो बूलायो निज साथ ॥मी०॥५॥

रे रे बादल कीधो कूड, सगलो लसकर[1] मेल्यो भूड॥मी०॥५॥

रिण रसीयो आलिम रंढाल, हलकारया जोधा जिम काल।

करी किलकी जिम दोड्या देत, कायर प्राण

तजे[2] निकसी जैत ॥मी०॥६॥

कठत करें मीलिया दल होइ, जाणे जलहर[3] घन अति धोइ।

आई जोगणी जाणे आडंग, जुड़सी आलिम बादल जंग ॥७॥

भुजा[4] वले आलिम सुं एम, बोले बादल गोरो जेम[5] ॥मी०।

दिली सुं चढि आयो साहि, हिवैं भिड़तो भागै मति जाय ॥८॥

मुंडीयो तो हिव जासी माम, माटी छै तो करि संग्राम ।मी०।

कहै आलिम क्या करै खुदाय, तें तो हम सुं खेल्यो डाय ॥९॥

---

१ कारिज २ निकास्यइ लेत, ३ जलद कालाहणि होइ ४ मूकि
५ हेव।

माह्हो मांहि माड्यो जोध, ऊछलीयो सूरातम क्रोध । मी० ।
छूटण लागा कुहकबाण, हथनाला करती घमसाण ।। मी०।।१०।।
सर छूटइ करता सणणाट, बकतर फोड़ि करै वे फाट ।।मी० ।
ध्रुव वाजें बरछी धीब, भाजै कायर लेई जीव ।। मी०।।११।।
ऊडी रज आकाशे जाय, रवि जिण थी मालिम न थाय ।।मी०।।
घोर अंधारे जाणे घोर, गाजे वाजै नाचै मोर । मी० ।।१२।।
धड़ धड़ वलय धारू जल धार, चमकै वीजल जिम जलधार ।
तूटै सन्नाहे तलवार, ऊडइ तिणगा अगन सुझाल ।।मी०१३।।
खल हल खलक्या लोही खाल, पावस रित जाणे परनाल ।मी०।।
रुहिर माहि पंपोटा[1] थाय, दोडी[2] जोगणी पात्र भराय[3] ।।१४।।
करवाला धड फूटै घाव, छंछ्उ छलि कीधो भिडकाव ।।मी० ।
रुहिरज[4] प्रगटउ परिकास, नाच्यो नारद कीधो[5] हास ।।१५।।
गुडीया जाणे[6] जेम पहाड़, सूर भिड़ता थाए आड ।।मी० ।
मस्तक विण धड़ जूझइ अपार, करि करवाल करंता मार ।।१६।।
खीजे वाह्यो सुरइ खग्ग, आधउ तूटि रह्यउ सिरि नग्ग । मी० ।
फावइ सिर ऊपरि खुरसाण, सूर लह्यो
जाणइ स्वर्ग विमाण ।।मी०।।१७।।
झड ओझड वाहइ रिणघोर, जूझइ राणी जाया जोर । मी० ।
'लालचंद कहै समझें सूर, दोन्यू दल वीरा रस पूर ।।मी०।।१८।।

---

१ पखोटा २ जाणे उधा ३ तिराय ४ रुधिर ५ हासउ हास
६ गयवर ।

दूहा

ऊभी जय जय ऊचरै, ले वरमाला हाथ ।
अपछर आरतीया करै, घालै सूरां बाथ ॥१॥

डिम डिम डमरू वाजता, साथे भूत बहु प्रेत ।
रुंड (तणी) माला संकर रचै, सिलो करै रिणखेत ॥२॥

जासक पीवें योगणी, भरि भरि पात्र रगत ।
डडकारा डाकणि करै, जिण दीठइ डरै जगत ॥३॥

ढाल (२१) कडखा री—गच्छपति गायइ हो जुगप्रधान जिनचद

जूझै महाभिड़ मुगल हिन्दू सबल सेन सनूर ।
तिण माहि माझि आइ जुडीया नांखि फोजा दूरि ॥१॥
गोरिल्ल गाजियो रे अरि गजा भाजन सिंह ।
वादल वाचिउ हो भारत (में) भीम अबीह ॥२॥गो०॥
आलिमपति अलावदीनह मुगल्ल मीर मसत्त ।
रावत गोरिल्ल वीर वादल जानि मैगल मत्त ॥३॥गो०॥
धूजियो धड़ हड़ मेरु पर्वत चढी धरणी चक्र ।
जम वरुण जालिम डरया दिगपति संकीया मन सक्र ॥४॥गो०॥
है कंप हूआ नाग वासिक ईश ब्रह्मा रूप ।
मुख करै ऊंचो वेलि रै मिस देखि डरइ अकूप ॥६॥गो०॥
वाहइ जलोह छछोह हाथें करइं कंध कड़क
घण घणा हाथें हण्या घण घण पड़े योध पड़क[1] ॥७॥गो०॥

---

१ दड़क ।

विहूं वाथ घाले घाव घालै डला होवै दोय ।
सनाह तूटै रगत फूटै पुरज पूरजा होय ॥८॥ गो०॥

चुचूइं धारा वहै सारा माचीयो झंड झूझ ।
छिन छिन्न धाए लोह लागा रह्या मांहि अलूझ ॥९॥गो०॥

वड वड़ा सामंत योध जालिम भिड़ैं[1] वादो वाद ।
अति अधिक सूरातन वसै आवै न खेड़ा आदि ॥१०॥गो०॥

गुड़ गुडंत गुहीर नीसाण गाजै देखि लाजै मेह ।
घाव पड़ै तिण घाव नाचै धाम धूमी देह ॥११॥गो०॥

रिण चाचरैं रजपूत कूदैं करै हाको हाक
कूट कुटे कीया कण कण मुगल आया[2] नाक ॥१२॥गो०॥

आलिम अरेरे अकलहीणा अंध साचा ढोर ।
इम कही खड खड़ खडग वाहे तडातडि रिण घोर ॥१३॥गो०॥

हुसीयार हुओ हथीयार वाहो रही दिल्ली दूरि ।
किह्या अकलि[3] हीणा एह वभणा अकलि दीधी कूर ॥१४॥गो०॥

गृह मात तात अर भ्रात वंधव नेह नाण्यो कोइ ।
चितारीया नहिं माल मिलकत सुक्ख नारी कोय ॥१५॥गो०॥
होइ लोह गोला मुगल दोला जोर जुड़ीया जंग ।
हैवरा गलि गज गाह वधै रह्या[4] विडद अभग ॥१६॥गो०॥
वाजीया सिंधु राग वारू भलो मारू भेद ।
जिहा भाट चारण डुंब वोलइं विडद मनह उमेद ॥१७॥गो०॥

१ भिडइ, २ आण्या, ३ बुद्धि ४ वह्या ।

साभलें चीला बाप दादा सूरमा न समाय ।
जूझता सुभटा खैंच निज रथ अर्क देखै आय ।।१८।।गो०।।
तिण[1] अओसर गोरिल वीर धसीयो जिहा आलिम साहि ।
वाही वारू घाव[2] घालै खड़ग सबलो ताहि ।।१६।।गो०।।
भागोज भूडो लेय पाघड साहि मुहूडै मूक[3] ।
गोरिल बोलै फिट्ट तुझ नै जाति थारी[4] मे थूक ।।२०।।गो०।।
भाजता नइ घाव घालयउ जाय क्षत्री धर्म
वीनवइ बादल छोडि काका जाण द्यो वेशर्म ।।२१।।
उपरि ऊभा किलो देखै रावल भाण रतन
सहु सिली भाखइ धन बादल गोरिल धन ।।२२।।गो०।।
धन सामीधर्मी वीर बादल कहै पदमणि एम ।
जिण विना माहरो पुरुष[5] इण भव छूटतो कहो केम ।।२३।।गो०।।
तू जीवज्ये कोडाकोडि वरसा माहरी आसीस ।
दिन दिन ताहरो चढत दावो करो श्री जगदीस ।।२४।।गो०।।
खल हण्यो खत्रीवट लीक राखी, जगत साखी नाम ।
गोरिल रावत रिणे रहीयो, कीयो साचो[6] नाम ।।२५।।गो०।।
लूटीयो ल्हसकर आप वसि कर छोडियो आलिम ।
जीत्यो पवाड़ो धर्म आडो आवीयो कृत कर्म ।।२६।।गो०।।
केई न्हासी छूटा मरी खूटा कीया अरीअण जेर ।
जीवतो मूक्यो साहि आलिम घालि सबलं घेर ।।२७।।गो०।।

---

१ इण २ बाथ ३ मुक्क ४ मांहि चक्क ५ दुक्ख ६ साको ताम ।

कहै साहि सुण सामंत बादल कीयो तैं उपगार

जीवीदान दीधो सुजस लीधो झालि गढ रो भार ॥२८॥गो०॥

बादल आगै हारि खाधी सीख मागइ साहि।

एकलो आयो आप असुरा दला बूजत साहि ॥२९॥गो०॥

बीजली[1] मुहें खल खेत्र वेड़ जैत्र पामी जंग।

पूरो पवाडो किलें गोरिल सूर बादल संग ॥३०॥गो०॥

अन्याय मारग जैति न हुवै, जोइ सबलो होई।

एकलै डीलै गयो आलम, एह परतख जोई ॥३१॥गो०॥

नीति मारग जइति पामइ, रहइ राज अखंड।

कह लालचन्द जगत्ति ऊपर, नाम तेज प्रचंड ॥३२॥गो०॥

दूहा

दोय दिना के अंतरैं, आलिम एक खवास।

निसा साम वेला जई[2] पहूंता ल्हसकर पास ॥१॥

ढाल— (२२) वाल्हेसर मुझ वीनती गोडीचा। राग-मारू

ल्हसकर माहि सु कीयो राजेसर

करिवा खबरि खवास रे राजेसर

ऊमराव आया वही दीलीसर

मुगल पाठण उल्लास रे राजेसर ॥१॥ढ०॥

करी तसलीम ऊभा रह्या राजेसर वेकर जोडी ताम रे ढि०।

बूझै आलिम साहि सु रा० कटक गयो किण काम रे दी० ॥२॥

१ विजळी २ गई।

भूखा त्रिसीया एकला रा० दीसे ए कूण हवाल रे दी० ।
किहा पदमणी परणी तिका रे रा० ए तो दीसै छै ख्याल रे दी०।३।
कहै पतिसाह कीधो घणो रा० बादल हम सुं कूड रे दी० ।
सइतानी सबली करी रा० ल्हसकर मेल्यो धूलि रे दी० ।।४।।ल्ह०।।
पदमणी रे मिसि पालखी रा० कीधी पाच[1] हजार रे दी०
तिण में दोय दोय नीकल्या रा० योध करंता मार रे दी० ।।५।।
कहर जूझ हम सुं कीयो रा० कटक कीयो कचघाण[2] रे दी०
हम है या तौ ऊबरे रा० मया करी रहमान रे दी० ।।६।।ल्ह०।।
हम भी भूले मोह[3] तै रा० कछु कीनो पदमणी टौन रे दी०
तोही हम आगइ टिके रे रा० नहिंतर हिन्दू कौन रे दी० ।।७।।
इम कही असवारी करी रा० नाक मुंकीनइ साहि रे दी०
ज्यूं आयो तिणही परइं रा० पहुंतो दील्ली माहि रे दी० ।।८।।
आलिम महल पधारिया रा० आई हरम अनेक रे दी०
विनो करी पाए पड़ी रा० विनती करै सुविवेक रे दी० ।।६।।ल्ह।।
देखावो वे पदमणी रा० हम कु देखण हुंस रे दी० ।
कैसी चतुराई अछै रा० रूप जोवा[4] कैसी रूंस रे दी० ।।१०।।ल्ह।।
पदमणी का मुंह काला किया रा० हम खैर करी है खुदाय रे दी०
करीई खमा बीबी कहै रा० हम लागो तुम बलाय रे दी० ।।११।।

दूहा

कहि[5] ममा बैठो तुमा, धरो मन मइं ग्यान ।
भरा पालो अविहड थे, हीइं खुदाय धरि ध्यान ।।१।।

---

१ दोइ २ कतलान ३ गरब मइ ४ जु ५ कहि मामा बेटा तुर्मा राखउ बहुत गुमान । नारि काज कलमथ करउ धरउ न मन मइं ग्यान ।

इन्द्र चंद्र नागेन्द्र सब, जस सेवै सुर नर राय ।
तिण रावण राज गमाडीयो, नारी तणै पसाय ॥२॥
बेटा काहे कुं फिरो, करते आप कलेस ।
बैठा सौख कहो इहा, दिल्ली गढ निज देश ॥३॥
हिव बादल की वारता, सुणयो देई कान ।
पातिसाह न्हाठा[1] पछै, रिण सोध्यो बादल जाण ॥४॥
जग मे जस पसर्यो घणो, खाट्यो वड़ो विरुद ।
गढनी पोलि उघाडीया, लोक कहै जसवद[2] ॥५॥

ढाल (३३)

करडो तिहां कोटवाल एदेशी राग—खभाइती जाति सोलाकी या मारू

रावल रतन सुजाण, सनमुख आए सामेलो करे ।
सिणगार्या बाजार, हय गय रथ पालखीया बहु परेजी ॥१॥
मिलया श्री महाराज, बादल सेती नेह घणै करी जी ।
ले आया गढ माहि, बैसाणी गज छत्र सिरइ धरी जी ॥२॥
देई देश भंडार, बादल नइ कीधो अधराजीयो जी ।
तैं राखी गढनी लाज, आज पछै ए जीव तुमे दीयो जी ॥३॥
तु जीवे कोड़ि वरीस, धनमाता जिण तुं गरभें धर्यो जी ।
दे पद्मणी आसीस, तैं उपगार अम[3] थी बहु कर्यो जी ॥४॥
मस्तक तिलक वणाय, भरि भरि थाल वधावै मोतिया जी ।
निज बंधव करि थाप, पहुंचावै निज घरि उछव किया जी ॥५॥

---

१ चाल्या २ सद्द ३ वड़ो अमने ।

आवंता निज गेह, चउहटइ च्यारों दिश नारी मिली जी ।
बोलइ कीरति बाल, मोतिया वधावै गावइ मन रली जी ॥६॥
इम आयो निज गेह, सयण संबधी परजन सहु मिली जी ।
प्रणमै जननी पाय, माताजी आसीस दीइं भली जी ॥७॥
सझि करि सोल श्रृंगार, अधर ब्रिंब[1] निज नारिया जी ।
आवी आणंद पूर, धवल मंगल करती सुखकारीयां जी ॥८॥
हिवें गोरिल की नार, पूछै तुम काकौ रिण किम रह्यो जी ।
कहो किम वाह्या हाथ, किम अरियण मार्‍या किम जस लह्यो जी
कहै वादल सुणो वात, केहो वखाण करा काका तणो जी ।
ढाह्या गैंवर वाट, मुंगला सुभटा संहार कीयो घणो जी ॥१०॥
राख्यो आलिम एक, तुरका सकल सेन मारी करी जी ।
तिल तिल हूओ तन, हुओ प्राहुणो अमरापुर वरी[2] जी ॥११॥
राखी गढ री लाज, उजवाल्यो कुल गोरेजी[3] आपणो जी ।
इम सुणी गोरिल नारि, रोम रोम जाग्यो तन सूरापणो जी ।१२
विकसित वदन सनेह, भाखै सुणि वेटा रिण वादला जी ।
वहैलो वारि म लाय, दोहरा वैठा ठाकुर एकला जी ॥१३॥
विच छेटी वहु थाय, रीस करेसी अमने श्री राय जी ।
काकी ठाम लगाय, ढील कीया हिवमइ न खमाय जी ॥१४॥
सुणि कहै वादल वात, धन धन माताजी ताहरो हीयो जी ।
सतवती तूं साच, धन तें आपो आप सूधारीयो जी ॥१५॥

१ आमोपठ ले २ खरी ३ गोरिल ।

खरचै धन नी कोड़ि, तुरंग[1] चढि सिणगार सहू सभी जी।
अगनी कीयो प्रवेश, उचरति मुख श्री राम राम जी ॥१६॥
पहूंती प्रीउ नै पासि, अरध आसण दीधो आणद थयो जी।
जग पसर्‌यो जस वास, 'लालचंद' कहै दुख दूरइ गयो जी ॥१७

दूहा

सूर कहावै सुभट सहू, आप आपणै मन।
दाव पड्यां दुख उधरैं, ते कहीये धन धन ॥ १ ॥
सांमीधर्म वादल समो, हुओ न होसी कोय।
युद्ध जीत्यो दिल्ली धणी, कुल उजवाल्या दोय ॥ २ ॥
रावलजी छोडाईया, नारी[2] पदमणी राख।
विरुद वड़ो खाट्यो वसु, सुभटा राखी साखि ॥ ३ ॥
चैंन राज चितोड़ को, कीधो वादल वीर।
नव खंडे जस विस्तर्‌यो, सामीधर्म रिणधीर ॥ ४ ॥
निरभैं पालै राज निज, रतनसेन महाराव।
सेवक वादल सानिधें, पदमणि शील पसाव ॥ ५ ॥

ढाल (२४)

राग—धन्यासीइ, चाल—लोक सरूप विचारउ आतम हितभणी

सती शिरोमणि साची थई[3] पदमणि लहीयइ रे
सुख लहीइं सिरदार
पाल्यो कष्ट पड्यां जिण शील सुहामणो रे
तन मन वचन उदार ॥ १ ॥

---

१ तुरीय २ राणी ३ सलहीइं ।

श्री रावलजी छूटा मोटा कष्ट थीरे, सुख हुवो गढ़ें जेह।
बड़ो पवाड़ो खाट्यो गोरे बादलैं रे, शील प्रभावैं तेह ॥ २ ॥
शील प्रभावैं नासैं अरि करि केसरी रे, विषधर जलण जलंत।
रोग सोग ग्रह चोर चरड़ अलगा टलै रे, पातिग दूर टलंत[1] ॥३॥
श्रीसुधर्मासामि पाट परपरा रे, सुविहित गच्छ सिणगार।
श्री खरतर गच्छ श्रीजिनराजसूरीसरू रे, आगम अरथ भंडार ॥४॥
तस पाटि उदयाचल दिनकरुरे, श्री श्रीजिनरग वखाण।
रीझवियौ जिण साहजहाँ दिल्लीसरू रे, करिदीधउ फुरमाण ॥५॥
तास हुकम संवत सतर छीडोतरे, श्री उदयपुर जाण।
हिन्दूपति श्रीजगतसिंह राणो जीहा रे, राज करैं जग भाण ॥६॥
तास तणी माता श्री जंबूवती रे, निरमल गंगा नीर।
पुण्यवत षट दरसण सेव करइ सदा रे, धरम मूरति मतिधीर ॥७॥
तेह तणैं प्रधान जग में जाणिइं रे, अभिनव अभयकुमार।
केसरी मत्री सुत अरि करि केसरी रे, हसराज हितकार ॥ ८ ॥
जिणवर पूजा हेतइ जाणि पुरदरु रे, कामदेव अवतार।
श्रेणिकराय तणीपरि गुरुभगता सही रे, सिंह मुकट सणगार ॥९॥
पाट सात पाछइ जिण देस मेवाड़मइरे, थाप्यो गच्छ थिरथोभ।
कटारिया कुलदीपक जग जस जेहनउ रे,
श्रीखरतर गच्छ शोभ ॥१०॥
तसु वंधव डुंगरसी ते पण दीपतउ रे, भागचंद कुल भाण।
विनयवंत गुणवंत सुभागी सेहरउ रे, वड़ दाता गुण जाण ॥११॥

---

1 पुलंत।

तसु आग्रह करी संवत[1] सतर सतोतरे रे, चैत्री पूनम शनिवार ।
नवरस सहित सरस[2] संबंध रच्यो रे, निज बुद्धि ने अनुसार॥१२
श्री जिनमाणिकसूरि प्रथमशिष्य परगडा रे विनयसमुद्र वड गात ।
तास सीस वड़वखती जगमइ वाचियइ रे,
श्रीहर्षविशाल विख्यात ॥१३॥

तास विनेय चवद विद्या गुण सागरु रे, वाणी सरस विलास ।
जस नामी पाठिक श्रीज्ञानसमुद्रजी रे परगट तेज प्रकाश ॥१४॥
साध शिरोमणि सकल विद्या[3] करि सोभतारे,
वाचक श्री ज्ञानराज ।
तास प्रसादे शील तणा गुण संथुण्या रे,
श्रीलब्धोदय हित काज ॥१५॥

सामिधरम ने शील तणा गुण सामल्या रे, पूगै मननी आस ।
ओछो अधिको जे कह्यो कवि चातुरी रे, मिच्छादुकड तास ॥१६॥
नव निधनै वलि अष्ट महा सिद्ध संपदा रे, दूर मिटै दुख दंद ।
लब्धोदय कहे पुत्र कलत्र सुख संपजें[4] रे,
शीयल सफल सुख कंद ॥१७॥

गाथा दूहा ढाल आठ से अतिनद
सीअल प्रभावे संपदा इम जंपइ लब्धानंद ॥१॥

---

१ चैत्र सुकल तिथि पचमी मृगशिरनै बुधवार २ नवउ ३ गुणेकरि
४ सपदा ।

इति श्री शील प्रभावे पद्मिनी चरित्रे ढाल भाषा बंधे
श्री रतनसेन रावल तास सुभट गोरा बादल रिण
जय प्रतापैः तृतीय खण्ड सम्पूर्णम्

सकल पण्डितोत्तम प्रवर प्रधान शिरोवतंस पंडित श्री ५
श्री कल्याणसागर गणि तच्छिष्य पंडित श्री ५ हर्षसागर गणि
तत्शिष्य पंडित श्री सकल सभा श्रृङ्गार शिरोमणि रत्न पंडित
श्री १९ श्री हीरसागर गणि श्री ५ श्री
गुणसागर गणि। तच्छिष्य पुण्यसागरेण लिखितेयं ॥
सं० १७६१ वर्षे आशु वदि १० भोमे दड़ीवा मध्ये लिखितं ॥
श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री भद्रमस्तु ॥ शुभं भूयात् श्री ॥
श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

प्रति नं० ३८१४ (बं० ८२) श्री अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर। पत्र २० अंतिम पत्र १ तरफ खाली। पंक्ति १५ अक्षर ५६-६० प्रति पंक्ति। अंतिम पत्र थोडा नष्ट।

(२) इति श्री पद्मिनी चरित्रे ढाल भाषा बंध उपाध्याय श्री ५ ज्ञानसमुद्र गणि गजेन्द्राणा शिष्य मुख्य विद्वद्राज श्री श्री ज्ञानराज वाचकवराणां शिष्य पं० लब्धोदय विरचिते कटारिया गोत्रीय मन्त्रिराज हंसराज म० श्री श्री भागचन्द्रानुरोधेन श्री गोरा बादल जयत प्रापणो नामस्तृतीय खण्ड.॥ तत्समाप्तौ समाप्तमिदं श्री पद्मिनी चरित्रं तद्वाच्यमान श्राव्यमान चिरं नंदतादाचन्द्रार्कं यावत् लिपि. कारिता च सुश्रावक पुण्यप्रभावक . . . . ॥

॥ संवत् अठारेसै १८२३ वर्षे मिती भाद्रवा वद ८ दिने लिपी क्रतं। वाचणवाला कुं धरमलाभ छै। लिखतं मकसुदावाद मध्ये लपि क्रतं ॥ श्री ॥ श्री ॥ [पत्र ४८ जैनभवन, कलकत्ता

(३) गाथा दूहा सोरठा, सोल अधिक सै आठ।
कवित दूहा गाथा मिल्यां, सुणो सुगुरु मुख पाठ ॥१॥

ढाल सरस गुणचालसुं श्लोक तणी संख्या एकादश शत अधिक छै, पंचासत नइ सात, अनुमाने लालचंद कहइ ॥

इति पद्मिनी चौपाई संपूर्णम्। सकल पंडित शिरोमणि पं० श्री १०५ श्रीराजकुशल गणि शि० ग० ऋषभकुशल लिखितं आमेट नगरे संवत १७५८ वर्षे।

[ओरियण्टल इंस्टीच्यूट वडौदा प्रति नं० ७३३ की नकल गुलाबकुमारी लाइब्रेरी कलकत्ता में]



गोरा बादल कवित्त

गज बदन गणपति नमूं, माहा माय बुधि देय ।
गुण गूंथूं गोरल का, जस बादल जंपेय ॥ १ ॥
चहुआणा कुलि ऊपना, गोरउ अरु गाजन्न[1] ।
चित्रकोटि गढ उदया, राउ रत्नसेन मनि रंग ॥ २ ॥
सउहड सिरोमणि निम्मयउ, गाजन सूअ बादल्ल ।
वरस वीस त्रणि अग्गलउ, भड सूरताणा सल्ल ॥ ३ ॥
दल असंख जिणी गंजीया, असपति मोड्या माण ।
राखी सरण पद्मावती[2], बंध छोडायउ राण ॥ ४ ॥
काका भत्रीजा बिहुं, गोरउ अरू बादल्ल ।
पद्मनी काजि भारथ कीउ, हडमत जिम सर भल्ल ॥ ५ ॥
सोहड सुभट बादल करी, असी न करसीं कोय ।
सोहड़ा सोह चढावीय, गोरा बादल दोय ॥ ६ ॥
गढ डीली अलावदी, चित्रकोट गहलउत ।
पद्मणि कारिज साधीयउ, कहसूं तेह चरित्र ॥ ७ ॥

कवित्त

चित्रकोट कैलास, वास वसुधा विख्यातह,
रत्नसेन गहलोत, राय तिहा राज करंतह ।

---

१ बादल । २ पद्मणि काज भारथ कीयउ ।

तुरीय सहइस पचास, दोय[1] सइं महगल मंता,
राजकुली छत्तीस, सोहड भड सेव करंता।
प्रधान लोक विवहारीया, राजलोक सहुअै सुखी,
च्यार वरण गढ महि वसइ, जती मुनी नहीं कोय दुखी ॥८॥

एक दिवस महलउत, राय वइठउ भूंजाई,
सतर भख्य भोजन्न, मूंधि हस कर लेइ आइ।
के खारा के मीठ, केइ कछु स्वाद न आवइ,
तव पटरानी कह्यउ, वेग पद्मनी क्यों न लावइ।
धरि मछर संघलि सांचर्‌यउ, नेव जीत कन्या वरी,
पद्मनी ज आणि पयज करि[2], राय रत्नसेन अइसी करी ॥९॥

विप्र एक परदेस थी, फिरत आयउ तिण ठायह,
सभा मझि जव गयउ, नयण पेख्यउ तव रायह।
फल कीधो तिण भेटि, वयण आसीस पयासइ,
विद्यावाद विनोद, वाणि अमृत गुण भासइ।
राघव सभा जव रिंजवी, तव राजिन मन भाइयो,
हुउ पसाव कीन्ही मया, आपस पास रहावीउ ॥१०॥

रत्नसेन राघव, रमति कारणि एक ठायह,
जीतो दाण तिहा राव, दाण मंगीउ सूभायह।
चढ्यो विप्र तव कोप, राय मनि मछर कीउ,
छंड्यो ए अस्थान, देव देसउटउ दीउ।

---

१ पच। २ धति।

उचरइ विप्र ऐरिसह वयण, राउ एक प्रतिज्ञा हूँ करू,
पइहराउं लोह तुम्ह पय कमल, तव चित्रकोट बोहड फिरूं ॥११॥
चित्रकोट तब छंडि चित्त एह वयण विचार्‌यउ,
करवि होम आउध,[1] सवद[2] अइसउ सभार्‌यउ।
वीस भवन महसाण, मंत्र योगिनी आराधी,
कहो नइ देव कुण काज, आज ए विद्या साधी।
उचरइ विप्र[3] स्वामिनसूणि, एह भेद मुझ अपीइ,
आगम निगम सहुइ लहूँ, तउ वाचा दे थर थपीइ ॥१२॥
तब तूठी योगिनी, हुई प्रसिद्धि[4] प्रसनी,
ब्रह्म रुद्र करि वाच, वाच निश्चल करि दीन्ही।
जिहा हकारइ मोहि,[5], तोहि साचउ करि जाणइ,
आदि अन्त उतपत्ति, विपति तो सहु पीछानइ।
आस्थान आप जोगिन हुइ, विप्र पंथ आश्रम कर्‌यउ,
आणद अंग ऊलट घणइ, तव डीली[6] गढ संचर्‌यउ ॥१३॥
वचन कला उतपन, पवन छतीस मिल्या तिहा,
राय राणा मडलीक, खान ऊंवरे[7] खडे तिहाँ।
मन सकेत पूरवइ, जेह कछु मन माहि इछइ[8],
जे धन कारन धाय, आय विप्रन कूं पूछइ।
वात सुनी सूलतान एह, चे वजीर सचा कहउ,
दरवेश वेस अलावदी आय पउहतउ विप्र पोह ॥१४॥

---

१ आहुत्त। २ मन्त्र। ३ रांघव कहइ। ४ परतक्ष। ५ सोहि। ६ ढिल्ली। ७ ऊमरा। ८ अच्छइ।

कहइ न वात कछु अवही, कवही कर द्रव्य मिलिही मुझ,
कहइ न वात जनारदार, मइ सवद सुनीय तुझ।
काल कोस फकीर, तीर सायर फिरि आवहि,
निखुता नाहि निलाट, लख्या नहीं कोरी पावहि।
तव कोप कलंदर कहइ, क्या किताव दुनिया दीया,
संक्यउ स विप्र संसहि पड्यउ, एह योगनि तइं क्या कीया ॥१५॥
तव योगिन मन धरीय, करीय सेवा मइ कच्चीय,
वचन सौध नवि लहूं, वाच नह पालइ सच्चीय।
वचन शुद्धि तउ लहइ, भक्ष जउ मोरउ जाणइ,
वेगि जाउ दरवेस कहुं जउ मंखण आणइ
इहा राति किहा मंखण लहुं, तव घीउ लेउ करि संचर्यउ
अल्लावदीन सुरताण को, सीस छत्र तुझ सिरि धर्यउ ॥१६॥

तव कोप किलंदर कहइ, क्या तुफाना उठायउ
तू वोलइ सव झूठ, राज मुझ पइं किहा आयउं
एह वात सुणइं सुरताण, करइ टुकटुक तन मेरा
करइ नहिं कछु विलंव, अउर सिरि कट्टइ तेरा।
उच्चरइ विप्र दरवेस सुं, अलख लिख्या सो पइं कहुं,
जउ सीस छत्र तुझ कउं मिलइ, क्या इंनाम हुं भालहूं ॥१७॥
तव खुसी भयउ दरवेस, कर्म करतार करहि जव
तोहि हइ गइ पाइक, करइ तसलीम तोहि सव
तखत तलइ मेरइ तुं ही, तुं हि दिल्लीवइ जाणू
कहे तुहि सव साच अउरका कह्या न मानु



नयनाभिराम चित्तौड़ दुर्ग

[फोटो—सार्वजनिक संपर्क विभाग-राजस्थान]

अल्लावदीन सुरताण की, सीस छत्र काइम रहइ,
दरवेस वेस कहि विप्र सुणि, तुंहि मुंहि मागइ सोभी लहइ॥१८॥
फेरि वेस सुरताण, ताम निज मंदिर आयउ,
ऊग्यउ सूर परभात, तबही बंभण बुलायउ।
सभा मध्य जब गयो, चित योगिणि समरंतउ,
छत्र सिंघासण सहित, साह नयणे निरखतउ।
संक्यउ सु विप्र असपति सहित, निसचरिज रयणी फिर्यउ।
मंगइ सु मंगि असपति कहइ, वाचा मोहि ऊरण करउ॥१६॥

दूहा

तब सुरताण निवाजीयु, राघव बहुत उछाह,
जे मनि चीतइ सोइ करइ, वसि कीधउ पतिसाह॥२०॥
मल्ल भाट सुरताण पय, आयउ मंगण कज्जि।
मुहुल तलइ जइ द्वा करइ जिहां खडे असपति सज्जि॥२१॥

कवित्त

एक छत्र जिण प्रथीय, धरीय निश्चल धरणि परि,
आण किद्ध नव खंड, अदल किद्धउ दुनि भितरि।
अनिल नलणि विभाड, उदधि कर माल पखालिय,
अंतेवर रही रंभ, रूप रंभा सुर टालीय।
हेतम दान 'कवि' मल्ल भणि उदधि खंध वे वखत गुनि,
दीठउ न कोई रवि चक्र तलि, अल्लावदीन सुरतान धनि॥२२॥
मम पढि भट्ट कवित, बुद्धि खोजुं देइ पूरउ,
सुख सवाद करि रोस, सिद्धहर मजलगि सूरउ।

किहा सुणी पदमिनी सेसधर अंती सोहइ,
सुरनर गुण गध्रव, देखि मुनिवर मन मोहइ।
संखिनी सवे सुरताण घरि, कोप हूउ वेजन कसइ,
लावत मारि खोजा निसुणि, पतिसाह मुरके हसइ ॥२३॥

दूहा

वंदण प्रतइ अलावदी, कहि सु वयण विचार।
कटारी सहिनाण लइ, राघव वेग हकारि ॥२४॥

कुण्डलीयउ

आलिमसाह अलावदी, पूछइ व्यास प्रभात।
सयल परीक्षा तु करइ, स्त्री की केती जाति ॥२५॥
स्त्री की केती जाति, कहि न राघव सुविचारी,
रूपवंत पतिव्रता, मूध सोहइ सुपियारी।
हस्तनी चित्रणी कर संखिनी, पुहवी वडी पदमावती,
इम भणइ विप्र साचउ वयण, आलमसाह अलावदी ॥२६॥

कवित्त

इम जंपइ सुरताण, सुनि वे राघव इक वातह,
जाति च्यार की नारि, केम जाणीइ सुचित्तह।
गध्र रूप सदभाव, केस गति नयण निरत्ती,
वयण वांणि तसु अंग, कहु किशि तखत किसि भंती।
हस्तिनी चित्रणी कइ संखिनी जाति तीन दीसइ घणी,
पातसाह अरदास सुणि, दुनी पियारी पदमिनी ॥२७॥

दूहा

राघव वयण इम उच्चरइ, साभल साह नरेस।
त्रीया लखणे बूझीयइ, कोक तंणइ उपदेस ॥२८॥

सलोक

पद्मिनी पद्म गधाच, अगर गंधाच चित्रणी।
हस्तिनी मद्य गंधाच, खार गंधाच संखिनी ॥२९॥
पद्मिनी पुष्फ राचति, वस्त्र राचंति चित्रणी।
हस्तिनी प्रेम राचंति, कलह राचंति नखिनी ॥२०॥

कवित्त

गहिर महिर अलावदीन, राघव हकारीय,
नयण नारि निरखेवि, देखीइ हरम हमारीय।
हंसगमण गजचलणि, साहिजादी अनुरत्ती,
सुरत्ति सुर नर, स्त्रीया पेखि हस्तीनी,
चित्रणी क संखिनी क, किती साह घरि पद्मिनी ॥३१॥
साह आलिम एक वयण, विप्र उच्चरइ सुमिट्ठउ,
लोयण ते हेतम कीय, जेणि परि रमणि मुह दिट्ठउ।
कहइ एम सुरताण, कहु कइसी परि किज्जइ,
काच कुंभ भरि तेल, मुहुल माही रास रचिज्जइ।
इक संग रग ठाढी रहइ, सजे सिणगार सवि कामिनी,
प्रतिबिंब निरखि राघव कहइ, सो कहुं साह घरि पदमिनी ॥३२॥
पातिसाह राघव, आय तिण ठामि वइठा,
काच कुंभ ढालेइ, भरीय जस तेल गरिठा।

सजे सिणगार सवि कांमिनी, भूयण सिरि छज्जइ ठढी,
के स्यामा के गोर, केइ गुण गाहा पढी।
निरखंति वयण मुख मज्झि नव, एह वात चित्तह गुणी,
दोइ जाति नारि दीसइ वणी, सु नही साह घरि पदमिनी ॥३३॥
रोस भयु सुरताण, खांन अर पान न भावइ,
वे ला इत मारि लवार, वेग पदमिणी दिखलावहि।
ले किताव कर धारि, करइ वदिन वीनत्तीय,
संघलदीप समुद्र, अछइ पदमिण बहु भत्तीय।
हुसीयार होइ अरदास करि, एक अधू पेखइ जिहां,
संभली समुद्र संसइ पड्यउ, कोइ खुदीय खुते तिहा ॥३४॥
असपति कीयउ आरम्भ सु दिन साधीयउ दखिण धर,
पातिसाह कोपीयउ, कुंण छुट्टइ संघल नर।
दल गोरी पतिसाह, जुडइ संग्राम सुहुड भड़,
नव लख त्रिगुण तुरग, चउद सहस मइंगल घड।
सूर्ज खेह लोपवि गयउ, पातालइं वासग डुड्यउ,
त्रिहु चक्ररायसासइ पड्या, पातिसाह किसपरि चड्यउ ॥३५॥
चड्यउ चंचल सुरताण, खेडि दख्यण तटि आयउ,
सेन सहू उत्तरी, तिवही वंभण वोलायउ।
चेतकरी चेतन्न, एम जंपइ खूदालम,
मइं कताव तोही दीयउ, भयु सु दुनीयां मालम।
असपति कहइ चेतन सुनि, अब वेगइं संघल संचरउ,
जिसी भांति पदमिनी कर चढइ, सोइज मित्र चित्तह धरउ ॥३६॥

पातिसाह राघव, आय ऊभा तटि साइर,
करउ मंत्र चेतन्न, कटक लघीइ रिणायर।
सुणि आलम वीनती, नीर कउ अंत न जाणउ,
संघलदीप पदमिनी, घरहि घर अधिक वखाणउ।
भंजउ सु कोट असपति कहइ, देखि दाउ तिसकुं दिउ,
ग्रहे खग्ग सीस राजा हणउ, पकडि ग्राह पदमिणि लिउ ॥३७॥

हठि चड्यउ सुरताण, खणवि धरणि तलि पिल्लउं,
वेगि ल्यावि पदमिणी, सेन सवि साइर घल्लउं।
मिलि वइठा मंत्रवी, कहा हम पदमिणी पावइ,
वे बंभण तूं कूड, झूठ वातइं इहा ल्यावइ।
राघव कहइ तुम्ह मति डरउ, हुं करउं मंत्र मनि भाईयउ,
सुलताण ताम समझाइ करि, बाहुडि डिल्ली लाईयउ ॥३८॥
सलहिदार हथियार, लेइ आगइ अवधारीय,
संभाले सवि सेल, माहि भेजे चिति धारीय।

बीबी तव पूछीयउ, साह पदमिणि किहीं आणी,
च्यारि त्रीया घरि नही, किसी तिस की सुरताणी।
खुणसि भई सुरताण मनि, तब अदेसा किधा बहु,
संघल दल जे पठया हुई, वे राघव पदि्मणि कहु ॥३९॥

तव राघव चिंतवइ, वयर पाछिलउ संभारयउ,
कहुँ जिहा पदमिनी, साह जु चितइ धारउ।
गढ चितोड हिंदुआण, राण गहिलोत भणिज्जइ,
रत्नसेन घरि नारि, नारि सिंघली सुणिज्जइ।

उचरइ विप्र एरिस वयण, लोग त्रिण्हि जीता तिरी,
इसी नही रविचक्र तलि, मइं नव खड देख्या फिरी ॥ ४० ॥

लाख तूल पल्लिंग, सउडि पिणि लख मिलइ तस,
अतह पुड सइ पंच, अवर गिंदूया सहस जस।
तसु ऊपरि ओछाड, रंग वहु मूलइं लीधा,
अगर कपूर कुमकुमा, कुसम चंदन पुट दीधा।
अलावदीन सुरतांण सुणि, चेतन मुख सचउ चवइ,
पदमिणी नारि सिंणगार करि, राय रत्नसेन सेजइ रमइ ॥४१॥

पलाण्यउ अलावदीन, जल थल अकुलाणा,
राय राणा खलभल्या, पड्या दह दिसि भंगाणा।
हय गय रथ पायक, सेन काई अंत न पावइ,
जे मोटा गढपती, तेह पणि सेवा आवइ।
तव कोप करवि वल मुँछ धरि, कहइ साह विग्रह करउं,
मारउ देस हींदुआण कुं, त्रीया एक जीवत धरउं ॥४२॥

वकउ गढ चित्रकोट, सकति सुरताण न लिज्जइ,
ऊठि आई मुसाफ, वोल जस राय पतिज्जइ।
डड डोर नवि दिउं, देस पुर गाम न गाहूँ,
नाही गढ सुं काज, राजकुंअरी न व्याहूं।
राघव कहइ असपति सुणि, कहि राजा मारिन आहुडउं,
रत्नसेन मुझकुं मिलइ, तउ नाक नमिणि करि वाहुडउं ॥४३॥

कुंडलीउ ॥

दल सझवे सुरताण, आय चित्रकोट विलिज्जइ,
भेजउ वेगि विसेट, बात मिलणे की कीजइ।
दीजइ कर की वाच, जेम 'गहिलोत' पतीजइ,
हम तम विचइं खुदाइ हइ, लेइ मुसाफ आदइ धरउ,
चितोड देखि वेगइ फिरउं, वाचा देइ थप्यउ खरउ ॥४४॥

दूहा

वेग विसेट चलाइयउ, पुहतउ गढह मझार।
सभा सहित राय भेटीयउ, बोलइ वयण विचार ॥४५॥

कवित ॥

वात करी तव मिठ, राय तस वयण पतिनउ,
जिण परि कही विसेट, सोइ परि राजा किन्हउ।
राजकुली छत्रीस, सहूति सभा भणिजइ,
असपति आवणु कह्यउ, कहु किणपरि वुधि कीजइ।
मिली प्रद्धान इम चीतवइ, सेन सहु दुरिहिं पुलइ,
जण वीस सहित आवइ ईहां, तु पतिसाह राणा मिलइ ॥४६॥
दिधी पोलि चिटकाइ, डस्या गढ तुरक नभाया,
गोरी गोधउ मंड, साथि लसकरह सवाया।
अव तु मेलु भयो, राय जिमणार कराया,
त्रीस सहस मेली गया, साथ लसकरह सवाया।
खाणाज खाइ जब उठीया, पकड़ि बाह राजा लीया,
वात ज करत लंघीय पोली, तव रतनसेन काठा कीया ॥४७॥

कीयो कूड सुरताण, सामि मोरउ ग्रहि वंध्यउ,
पदमणि द्यु तु जाउ, काजि कारणह समंधउ।
भलो न कीयो किरतार, केम गहिलोत बंधीजइ,
कीयो मंत्र मंत्रीया, राय राखवि त्रिय दीजइ।
तदिन जीभ खंडवि मरउं, योगिणीपुर नवि दिखसउं,
पदमिणी नारि इंम उचरइ, अब कह सरणागति पइठिसिउं ।४८।
दुख भरी पदमिणी. एम परिपंच विचारइ,
कोई संसारि समरथ, सूर मोहि सरणि उवारइ।
जे गढ माही रावत, तेह सवि हीणु भाखइ,
इसउ न देखु कोइ, मोहि सरणागति राखइ।
उचरइ नारि विलखी हूई, सरण एक हरि संभरउं,
पणि राजलोक माहि चंदन रचे, सखी वेगि जमहर करउं ॥४९॥
सखी एक कहुं तोहि, मोहि जउ वयण पतिज्जइ,
मनावउ गोरल्ल, दुख सहु तास कहीजइ।
वरस पंच तस विखउ, राउ सु कुरखे चलइ,
ग्राम ग्रास नवि लीइ, कुंण गुण मोहि उथलइ।
सुणि राउत्त कुलवट्ट तस, जिण सिर सूप्यउ परकज सउं।
पदमिणी नारि इंम उचरइ, तु वादल सरणि पइठसिउं ॥५०॥
चडे सघासण ताम, करह करि कमल उघास्यउ,
जीहां गोरउ वादल, पाउ पदमिणी तांहा धास्यउ।
गंग उलटी पचिम प्रवाह, भणइ इंम गोरउ रावत्तह,
ए तुम्ह कुं चूकीइ, देत आइस हम आवत्तह।

पदमिणी नारि इंम उचरइ, तुम्ह लगइ कीजंति वल,
कर ऊभु करइ ज सामि कज, करउ कित्त जिम हुइ कलि ।।५१।।

तुं ही रावत्त गोरल्ल, तुंहीज दल माही वडउ,
तुं ही रावत्त गोरल्ल, तुंहीज मोरउ भाईडउ।
तुं ही रावत्त गोरल्ल, तु हीज दल वडउ छजइ,
तुं ही रावत्त गोरल्ल, तुं ही देखवि राय गज्जइ।
सुणि गोरल्ल पदमिणि कहइ, मोहि दासी करि सुरताण दइ,
कइ अल्लावदीन सु खग धरि, कै राउ रत्नसेन छोडावि लइ ।।५२।।

सुहुड सुभट गोरल्ल, ताम गहगह्यउ सुचित्तह,
दल भंजउ सुरताण, नाम तु थु रावत्तह।
सामि कजि अणसरउं, नारि पदमिणी उवेलउं,
गढ राखउ भुज प्राणि, मारि असुरा दल पिल्हउं।
कहइ गोरल्ल सुणि सामिनी, जाउ तुम्हे गाजन्त घरि,
अवतार पुरूष विधना रच्यो, सु वीडउ चु वादल करि ।।५३।।
लीन्ह पान बादल्ल, रयण हूँ ते गढ भींतरि।
सत्ति तुम्हारइ साहस्स, साह भजउं खिण अंतरि।
दोइ कुल भेटउं लाज, तु नाम वादल्ल कहाउं।
गोरी दल विन्नडउं, कूटि करि बाधव ल्याउ।
जिम राम कज्ज हनुमत करि, महिरावण वध्यउ तिखिणि।
काटउ ज वंध राउ रत्न के, तु साहस भंजउ साह हणि ।।५४।।
चाड कूड विन्नयउ, मंत्री कउ मंत्र भुलाणउ,
रतनसेन वधेवि लीय, गढह चिहु दिसि अहिराणउ।

कायर झंखइ आल, राणी दे राजा लिज्जइ,
अल्लावदीन सुरताण सउ, केम करि खग्ग धरिज्जइ।
इम कहइ चाउ रावत सुणि, हीइ मंत्रि निचल धरउ।
गढ रहइ राउ छुट्टइ सही, त्रीया देई इतउ करउ ॥५५॥

वयण सुणी रावत्त, रोस करि खरा रीसाणा।
दोय चडीया अति कोप, दोय अति चतुर सयाणा।
रिण माही अणुसरया, सीस वड समुहा वंछी।
मोल मुहुंगा लहइ, चडइ कुंजर सिर तच्छी।
गोरउ गरिष्ट वादल विषम, दोय साहस समुहा सख्या।
फुट्टउ सु हीयो जिह्वा गलउ, जिणि पदमिणि देणा कख्या ॥५६॥

आवि माइ तिणि ठाय, पासि वादल इंम ठढीय,
तोहि विण पुत्र निरास, तुह चल्यु झुम्मण कसीय।
नयण मोरउ वादल्ल, वयण वादल्ल भणावीय,
प्राण मोरउ वादल्ल, वार वारई समझावीय।
आवती माय अग्र पेखि करि, उठि वादल्ल प्रणाम कीय,
वालक पुत्र जगि जगि जयो, किणइं कुमित्र कुमत दीय ॥५७॥

हुं कित वालउ माय, धाइ अचल नहि लगउं,
हुं कित वालउ माय, रोय भोजन नही मग्गउं।
हुं कित वालउ माय, धूरि धूसर नही लिट्टउं,
हुं कित वालउ माय, जाइ पालणइ न घुटउं।
वालउ ज माय मुझ क्युं कहउ, अवर राय रखउं जीउ,
सुलताण सेन विनडउं नही, तव रे माय फुट्टइ हीउ ॥५८॥

रे वाले वादल्ल, मनह अपणइ न बुझिसि,
रे वाले बादल्ल, केम करि साम्हु झूझिसि ।
गढ वीट्यउ सब ठाय, असुर दल देखउं भारी,
तुं नान्हु बादल्ल, केम करि खग्ग संभारी ।
इंम कहइ माय बादल्ल सुणि, वयण एक मोहि चित धरि,
साहण समुद्र सुलताण का, कुण सुबद्ध अगमिसि भर ॥५६॥

हुँ कित वालउमाय, गहिवि गयन्दतउ खेलउ,
हुँ कित बालउ माय, सेसफण विमुहा पिल्हउं ।
बालउ वासिग कान्ह, नाथि आणीयु भुजा वलि,
बलि चाप्यु धर पीठ, वेणि दिधउ स्वामी छल ।
बाली वाला पउरस घण, दुरजोधन बंधवि लीयु,
बादल्ल गयंद इंम उचरइ, तव सुणवि माय पिछित कीउ ॥६०॥

माय जाय पठवी, वेग तिही नारिज आई,
कुच कठोर कटि क्षीण, रूप जण रंभ सवाई ।
कोककला कामिनी, पेखि त्रिभुवन मन मोहइ,
प्रेम प्रीति अग्गली, अगिं लक्षण जस सोहइ ।
बादल देखी जव आवती, तव सुचित विसमु भयु,
लालच्च नारि निरखुं हवइ, तु मोहि सूर साहस गयो ॥६१॥

तव कमलिणि विस तरंग, नयण सूं नयण न मेलिग,
वयण वयण न हु मिली, अहर सुं अहर न पिल्हिग ।
अति भुज पवन प्रचंड, कठिण कुच कमल न भिडिग,
रहिसेन फरसेग अग, त्रीय धाए नह पिठिग ।

सुख सेजन माणी तनउं, कंता वाले फल कीय हुय,
संग्राम सांमि किम झुझस्यउ, कहुन कुंमर गाज्जन सुय ॥६२॥
लोअण तेह खिसि पडउ, केय पर त्रीय उल्हासी,
चरण तेह गलि जाउ, जेण रिण पाछा नासी।
हीयो तेह फुटीयो, जेण मन कीयो दुमन्नउ,
श्रवण तेह सधीइ, जेण हरि सुण्यउ विमंन्नउ।
वादल कहइ रे नारि सुणि, असुर सेन त्रिणवडि गिणउ,
नीपजे न सरवर सेन, जु न साह सनमुखि हणउं ॥६३॥

कुंडलीया

कंता झुझिसि कवण परि, किम करवाल ग्रहंति,
पेखि सागि अणी अग्गला, किम करवर झालंति ॥६४॥
किम करवर झालंति, कुंत अणी अग्गल फुट्टइ,
खग्ग ताड वाजंति, सुहुड अधो धड तुट्टइ।
जु भीय कायर होय, पेखि गय जूह गजंता,
तु मोहि आवइ लज्ज, जु तुं रिणि भजिसि कंता ॥६५॥
हय सू हय नरदलउं, हस्ती सू हस्ति पछाडउं,
कुंतकार सुं कुंत, खग्ग सुं खग्ग विभाडउ।
छत्र छत्र छिनि छिनि, चमर आडवर तोडउं,
तु जायु गाजन्न, साह समहरि चडि मोडउं।
वादल कहइ रे नारि सुणि, तव ही तुझ सेजडं सरउं,
चीतोडि राण पदमावती, हू वादल एकत करउं ॥६६॥
सुणि स्वामी वीनती, कयण एक कहुं सु मिठउ,
मो सिरि चडइ कलंक, वाह ककण नहि छुट्टउ।

पूरि आस पदमिणी, मोहि निरासी किज्जइ,
आप हाणि घरि होइ, अवर कारणि जीउ दिज्जइ।
इम कहइ नारि कंता निसुणि, सेन सहुय एकत हुअ,
गोरल्ल पुठि समहर चडइ, रहु न कुंअर गाजन्न सुय ॥६७॥
अथग पवन जु रहइ, वहइ गंगा पच्छिम मुह,
मेर टलइ मरजाद, जाइ नवखण्ड रसातल हु।
सेस भारजु तजइ, चलइ रवि चन्द दखिण धर,
सुर असुर सहू टलइ, सक नह धरइ अप्पसर।
एतला बोल जउ सहू हुइ, हूँ वयण सच्चउ करउं,
बादल्ल गयंद इंम उचरइ, तुहि न नारि पाछउ सरउ ॥६८॥
गोरउ अर बादल्ल, आय दोय सभा वयठा,
जे गढ माही रावत, तेह सहू मिल्या एकठा।
करउ मंत्र विचार, वुधि छल भेद करीजइ,
देणी कहु पदमिनी, जेम सुरताण पतीजइ।
डोली कीजइ पंचसइं, सुहड सवे सन्नाहीइ,
एकेक डोली आठ आठ जण, इम परिपंच रचाईइ ॥६९॥
रची एम परिपंच, वेगि तब दूत चलायो,
खबरि करउ सुरताण, हुं तु पदमिणी पठायो।
जे दासी अंगरक्ख, हरम सवि डोलइ घल्लउं,
हीर चीर सोवन्न, लेई तुम्ह साथे चल्लउं।
इंम कहइ नारि पदमावती, पातिसाह अरदास सुणि,
जिस घड़ीय राय छुट्टइ सही, हुँ न रहुँ ईहां एक खिणि ॥७०॥

तब खुशी भयउ सुरताण, वेगि फुरमाण चलायउ,
सुणि गोरे वादल्ल, साथि करि पदमणि ल्याउ।
जे तुम्ह कहउ सोई करउ, राउ की वेरी कट्टउ,
वाद गस्त हूं करउं, ईहा रहि नीर न घुट्टउं।
पहिराइ राइ तेजी दिउ, बोल वंध दे पठवउ,
इंम कहइ साह वादल्ल सुणि, तोहि निवाजि दुनिया दिउं ॥७१॥

कीयउ कूड वादल्ल, आय डोले संपत्तउ,
तस माहि रख्यउ बालः, नाम पदमिणी कहंतउ।
हूउ हरख सुरताण, जब ही आवत सुणी नारी,
गोरी तव पूछीउ, वोल वोलीयउ विचारी।
अल्लावदीन सुरताण सुणि, एक वात मेरी साभलउ,
पदमिणी नारि इम ऊचस्यउ, एक वार राजा मिलउं ॥७२॥

वादल्ल तिहा पठ्यु, राय जिहा वधन वधीय,
गहीय राय पय कमल, काज अप्पणउ इंम किधीय।
हूउ कोप राजान, वइर तइं साध्यउ वयरीय,
रे रे कुवुद्धीय कुड, नारि किम आणी मोरीय।
वादल्ल ताम इम उच्चरइ, खिमा करउ स्वामी सही,
मइं वालक रूप पदमिणि करी, राउ नारि निश्चइ नही ॥७३॥

वादल्ल तव लेइ चल्यउ, राउ चकडोल सरसीय,
खगधारी सनमुख, भड्यउ सुरताण सरसीय।
करी पारसी मुगल्ल, हींदू सव कूड कमाया,
लंकामणि उद्धस्यउ, अतुल वल सेन सवाया।

मारि मारि करि ऊठीया, बादल्ल तिहा संमुह सम्बउ,
जब लगइ झूझि दल पति हूउ, तब लग हइंवर पखस्यउ ।।७४।।
हुई हाक दल माहि, भई कलकली बूं बारव,
गय गुडिय हय पखरिय, सुहड सन्नाह करइ तब ।
एको सिर त्रूटंति, एक धड धरिणी लुट्टइ,
खग्ग ताल बाजंति, बाण सींगणि गुण छुट्टइ ।
इम भग्गउ सेन असपति सरस, पातिसाह विलखउ भयउ,
गोरइ गयंद दल कुट्टीयो, बादल्ल राउ तब लेई गयउ ।।७५।।
करी पइज बादल्ल, नारि ऊगारी बलहिं छल,
मनि संक्यउ सुरताण कज्ज करि आयउ भुजा बलि ।
असपति मोडउ माण, सामि आपणउ उवेल्यउ,
भंजे गय घण घट्ट, मीर मुगला सत मेल्हाउ ।
इम सुणवि माइ आणंद कीय, पुत्त परदल भंजीयउ,
उवरी बात बादल्ल की, सो पदमणी कंत उवेलीउ ।।७६।।

कुंडलीया

गोरल्ल त्रीया इम ऊचरइ, सुणि बादल तोहि सत्ति,
मो प्रीउ रिण माहि झूझीयउ, कहि किम बाह्या हत्थ ।।७७।।
कहि किम वाह्या हाथ, वत्थ वइ सुहुड पाछाडीय,
भंजी गय घण थट्ट, पाव दे सीस त्रिभाडीय ।
हय गय रथ पायक, मारि घल्लीयउ वोरिल्लं,
वेग माइ सत्ति चडउ, एम रिण पड्यउ गोरिल्लं ।।७८।।
कहिं धड़ कहिं सिरि कहीं कमंध, कहिंक पंजरही पडीउ,
कहीं कर कहीं करमाल कहिं कहि मरवि छुडीयउ ।

कहीं एकावली हार, कहिंक धरणी धंधोलिय,
कहीं जम्बुक किहीं अंत मंस गिरधण विछोडीय।
गढ छल त्रीय छल सामि छल, त्रिहुँ छल भिड्यउ सुकवि कहइ,
गोरल्ल सूर भेटण चली, सु खिण एक रवि रथ खचे रहइ ॥७६॥
जे सिर पड्यउ धर पिट्ठ, धरा देई इंद्र पठायउ,
इंद्र हथ थल स्यु, सोइ सिरि त्रिधिण उठायउ।
गिरिधण कर छुटेवि, पड्यउ गंगाजल मज्जं,
गंगाजल उत्त ग, हुओ अंमृत सिरि छज्जं।
इम अमीय गाह नयण चंदण चूउ, तव कंदल मंड्यउ घणउ,
गलि रूंडमाल गुंथेवि लीय, तो सर सिद्धि गोरल तणउ ॥८०॥
जे बादल्ल जंपंति, विरद बादल अरि गंजण,
संकडि स्वामि सन्नाह, असुर भारथ अरि गंजण।
कीयउ जुद्ध सुरतांण हण्या हसती मय मत्तह,
आयउ मोरउ कत, तहिज दिट्ठउ अहि वातह।
पदमिणी नारि इंम ऊचरइ, तोहि धन्य धन्य अवतार हूअ,
आरती ऊतारउ हो वर तुरिणि, जे बादल्ल जपंति तूअ ॥८१॥
अचल कीर्ति श्री राम, अचल हनुमन्त पवन सुअ,
अचल कीर्ति हरिचंद, अचल वेली पुहवी हुअ।
अचल कीर्ति पाडवा, जेण कइरव दल खंडीय,
अचल कीर्ति अहिवन्न, जेणि चकावहु मंडीय।
विक्रम कीर्ति जिम अचल हूअ, भोज अचल जुग जाणीइ,
तिम अचल कीर्ति गोरल तूय, बादल कीर्ति व्रखाणीयइ ॥८२॥

॥ इति श्री गोरा बादल कवित्त सम्पूर्ण ॥

रत्नसेन-पद्मिनी गोरा बादल संबन्ध
खुमाणो रासो

षष्ठ खण्ड

॥ श्री माऊ अबाय नम. ॥

गाहा

ओंकार मंत्र अंवा, जगज्जननी जगदंबा ।
लच्छ समप्पो लबा, दलपति तुह चरण अवलबा ॥२५॥

दूहा

कमला मात करो मया, मुझ उर वसिइं वास ।
आपो दोलत ईश्वरी, वाणी वयण विलास ॥२६॥

कवित्त रांणां री वंशावलिका

राण प्रथम (ह) राहप, पाट नर सुर नरपत्ति ।
दिनकर हर सुरदेव, रतन जसवंत नृपत्ति ॥
अनतो अभयो राण, प्रबल पथवीमल पूरण ।
नाग प्राणग जेंसिंघ, जेंत जगतेश उधारण ॥
जयदेव राण जो नंगसी, भारथ पारथ भीमसी ।
गढ़पति मुगट गढ गंजणो, गाहड़मल गढ लखमसी ॥२७॥

जग असपति जसकरण, नवल विजपाल नरेसुर ।
नागपाल नरसीह, राण गिरधर राजेसुर ॥
पीथड पुंनोपाल, मल्ल मोहण मय मत्तह ।
सीहडमल भीमक्क, राण भाखर रण रत्तह ॥
लुंणग्ग करण लाखा दला, मोड मंडल श्री लखमसी ।
अरसी हमीर खेतल खगा, अवनी सहु लीधी इसी ॥२८॥

चौपाई

राणो रतनसेन गहिलोत, देसपती मोटो देशोत ।
राज करें नृप गढ़ चीतोड, राजकुली सेवें कर जोड़ ॥२६॥
एक दिन नृप वैठो वेसणें, पटराणी सुं पेमे घणें ।
भोजन माहें स्वाद न कोय, चतुराई तुम माहें न कोय ॥३०॥
राध न जाणां भोजन भणी, परणो थे सींघल पदमणी ।
अंजस करे राणो नीसर्यो, गढ़ चीतोड थकी ऊतर्यो ॥३१॥
अश्वें चढ़ीयो रांण उलास, सार्थे लीधो खान खवास ।
राणा ने सेवक पूछियो, आपें केथ पयाणो कियो ॥३२॥
आपा जास्या सींघल देश, तिहा जाए पदमण परणेस ।
अगुवो लीधो सार्थे भाट, ते सींघल री जांणे वाट ॥३३॥
रांणो दरियारें तट गयो, जालिम सिद्ध जोगी दरसियो ।
जोगी जंपें रतन नरेश, थे किम आया कवण विसेस ॥३४॥
आयस सूँ अधिपति वीनवें, पदमणी वरण जाऊँ हिवें ।
पार उतारो मुझ गुरदेव, सींघल ले जावो सुज हेव ॥३५॥

कर ऊपर दोई असवार, नृप सींघल मुंक्यो तिणवार।
आयस कीधो ए उपगार, परणण रो मुशकल व्यवहार ॥३६॥
बहिन अछें सींघलपति तणी, परतिख आप अछें पदमणी।
अभिग्रह लीधो एहवो नार, जीपें मुझ थी पासा सार ॥३७॥
अधिपति खाधी हार अनेक, जीपें तस परणुं सुविवेक।
रमवा वेठो रतन नरेश, हारवी पदमणि नें लघुवेश ॥३८॥
सींघल नृप व्याही पदमणी, दीधी परिघल पहिरावणी।
रह्यो केताइक दिन सासरें, चालणरी सीझाई करें ॥३९॥
सीख माँग चाल्या घर भणी, साथें लीधी नृप पदमणी।
घणे भाव बहु प्रीतें घणी, पहुंचाया सींघल रे धणी ॥४०॥
अनुक्रमें आया गढ चीतौड, रतनसेन मन अधिकें कोड।
राणी सु जंपें राजान, म्हें परण्या पदमणि करि मान ॥४१॥
थे मोसो मानुं वाहियो, बोल कह्यो सो निरवाहि [इ] यो।
अहनिस गेंर महिल आवास, पदमण सु सेझें करें रजास ॥४२॥
एक दिन आयो राघव व्यास, पदमणि नृप वेठा सुविलास।
राणो रतनसेन कोपिओ, पदमणि रूप ब्रामण पेखियो ॥४३॥
आँख कढ़ावू राघव तणी, इण दीठी निजरें पदमणी।
जीव लेइ नें भागो नींठ, अधिपति कोप्यो आकारीठ ॥४४॥
माणस लेइ गढ़ थी उतर्यो, दिल्ली नगर राघव संचर्यो।
वाचे राघव शास्त्र अनेक, वात वखाण करें सुविवेक ॥४५॥
जस विसतरियो दि [ल्] ली माँह, तेडाव्यो पंडित पतिसाह।
आलम ने दीधी आसीस, द [ल्] लीपत कीनी बगसीस ॥४६॥

राघव आलम पासें रहें, असपतिरी बगसीसा लहें ।
राघव कुवधि कियो मंत्रणो, काढु वैर हवें चोगणो ॥४७॥
रतनसेन ऊपर रिम राह, ले जाऊं चित्रगढ पतिसाह ।
कोइक करस्यु हुं कलि चाल, रतनसेन भाजुं भूपाल ॥४८॥
भाट एक सुं भाईपणो, तिण सुं कहीयो ए मंत्रणो ।
अंब खास बेंठो असप [त] त, हंस पाँख ग्रही सुविग[त]त ।४६।
यारो इस सु भी मकशूल, प्रथवी माँहें काइ अमूल ।
हजरत इस सुं मेहरी खूब, महिला पदमणी हें महबूब ॥५०॥

गाहा

मान सरोवर मज्झे, निवसे कलहंस पंखिया वहवे ।
ताणंतो सुकमाला, इसा पंखी मम हत्थे ॥५१॥

चोपाई

पूछें आलम पदमणि जेह, सोही वतावो हम कुं तेह ।
अदर हुरम परिक्खा करो, पदमणि हो सो आगें धरो ॥५२॥
हजरत दीधा खोजा साथ, देख्यो हुरम तणो सहु साथ ।
हस्तणी चित्रणी ते सखणी, इसमे कोई नही पदमणी ॥ ५३॥
किस थानिक हैं कहो हम भणी, सींघलद्वीप अछें पदमणी ।
जास्युं सींघल लेस्युं हेर, जिहा हुवें जिहा ल्याउं घेर ॥५४॥
सींघल ऊपर थया तियार, आलिमसाह हुआ असवार ।
ल्हसकर लाख सतावित लार, उदधि पास आव्या तिणवार ।५५।
दीठो आगें उदधि अथाग, मानव कोइ न लाभें थाग ।
उदधि ऊपर ह [लू]लां करें, आलिम को कारिज नवि सरें ॥५६॥

जिहा जे वेसाड्या जूझार, चूडा उदधी में तिण वार ।
जंपें आलम राघव व्यास, कीधो कटक तणो सहु नाश ॥५७॥

ओर बताओ कोई ठोड, कहें राघव पदमण चितोड ।
लेत्ता ते मुसकल अतिघणी, सेसतणी दुरलभ जिम मणी ॥५८॥

रतनसेन वाको रजपूत, महा सुभट माझी मजबूत ।
आलिम कहें हिन्दू का क्याह, गढ़ चीत्तोड चढु उच्छाह ॥५९॥
पदमणि गहि बाधु हिंदवाण, तोहुँ तखत वडो सुलताण ।

दूहा

सुण राघव आलिम कहें, कह पदमणि सहिनाण ।
करु ह(ट्) ठ तस ऊपरें, गढ़ घेरु घमसाण ॥६१॥
सुण हजरत राघव कहें, नवरस महि सिणगार ।
नाम च्यार हें नायका, वरणव कहुं विचार ॥६२॥

कवित्त

सुन हो साह कहें व्यास, धरहु रस पेम उकत्तह ।
वाखानहुँ सींगार, सुन हो चित होय सुरत्तह ॥
किती भात नायका, कोन गुनरूप विलासह ।
भाँत भाँत कहि भेद, करिहु निज बुध प्रकासह ॥
आलिम साह सुनीइं अरज, च्यार जात त्रिय के कहें ।
नायका तीन सबके घरे, वखत वार पदमणि लहें ६३॥
कहें साह सुनि व्यास, करहो सबके वाखाणह ।
रूप लच्छन गुन भेद, तुम हो सब वात सयाणह ॥

तनवि चित्रणी विचित्र, हस्तनी मस्त हसती।
संखनि कुचित सरीर, नार पदमणी छत्रपती ॥

संखनी पांच हस्तनी दसह, पनरह रूप सु चित्रणी।
कहें राघव सुलतांन सुंन, वीस विशवा पदमणी ॥६४॥

दूहा

सुनि सब त्रिय के रूप गुण, इम जंपहि सुलतान।
अब चित पाई पद्मनी, करहुं विशेष वखाण ॥६५॥

पदमनि निरमल अंग सब, विकसत पदमणि [सुं] हेज।
प्रेम मगन ऐसी खुलें, ज्युं पंकज रवि तेज ॥६६॥

छप्पय

चित चंचल वय स्याम नैंन मृग भ्रोह अलिंगन।
तिल प्रसून तस समन सिहासन मुख अधर विद्रुमन ॥

अति कोमल सब अंग वयण सीतल अति हंस गति।
तन सूछिम कटि छीन प्रगटी दामनि देह द्युति ॥

आनंद चंद पूरण वदन, मन पवित्र सब दिन रहें।
आहार निमख इच्छित अमल, विमल ठोर पदमनि लहें ॥६७॥

दूहा

पदमणि चंपक वरण तन, अति कोमल सब अंग।
चिहुं ओर गुंजित भमर, निमखन छारत संग ॥६८॥

सवैया

बालस वेस रहें सबही दिन, मान करें न कछू दिन लाजें।
सेत सरोज सुं हेत धरे, अति ऊजल चीर सरीरहि छाजें।
वारिज कोस वन्यो मदन ग्रह वीरज नीरज वास विराजें।
देह लही मनमत्त निरंतर रंभा के रूप पदमणी छाजें ॥६९॥

कवित्त

रूपवत रतिरभ, कमल जिम काय सकोमल।
परिमल पुहप सुगंध, भमर बहु भमें विलावत।
चंप कली जिम चंग, रंग गति गयंद समाणी।
ससि वदनी सुकमाल, मधुर मुख जंपें वाणी ॥
चचल चपल चकोर जिम, नयण कंत सोहें घणी।
कहें राघव सुलतान सुण, पुहवी इसी ह्वे पदमणी ॥७०॥
कुच युग कठिण सरूप; रूप अति रूडी रांमा।
हसत वदन हित हेज, सेझ नित रमें सुकामा ॥
रूसें त्रूसें रंग, संग सुख अधिक उपावें।
राग रंग छत्तीस, गीत गुण ग्यान सुणावें ॥
सनान मंजन तंवोल सुं, रहे असोनिस रागणी।
कहें राघव सुलतान सुण पुहवी इसी ह्व पदमणी ॥७१॥
वीज जेम झलकंत, काति कुंदण जिम सोहें।
सुरनर गुण गंधर्व, रूप तृभुवन मन मोहें ॥
त्रिवली, मयतन लंक, वंक नहु वयण पयंपें।
पति सुं प्रेम अपार, अवर सुं जीह न जंपें ॥

सांम धरम ससनेहणी, अति सुकमाल सोहामणी ।
कहें राघव सुलतान सुण, पुहवो इसी हें पदमणी ॥७२॥
धवल कुसुम सिणगार, धवल बहु वस्त्र सुहावें ।
मुत्ताहल मणि रयण, हार हिदयेस्थल भावें ॥
अलप भूख त्रिस अलप, नयण बहु नींद न आवें ।
आसण रंग सुरंग, जुगति सुं काम जगावें ।
भगति हेत भरतार सुं, रहें अहोनिस रागणी ।
कहें राघव सुलतान सुण, पुहवी इसी हें पदमणी ॥७३॥

चौपाई

पदमणि रा गुण सुणिया एह, जंपें असपति सुंण अबेह ।
करुं चढ़ाई गढ चीतोड, अब हींदू कुं नाखुं तोड ॥७४॥
पोरस आण लेऊं पदमणी, रतनसेन पकडुं गढ धंणी ।
दोडाया कासीद सताव, तेड़्या मुगल पठाण नवाव ॥७५॥
निरमल जोधा जें सम्भ किया, आधी राति दमामा दिया ।
सबल सेन सुं आलिम चढ्यो, धर धूजी वासिग धड़हड्यो ॥७६॥

कवित्त

हसि बोल्यो सुलतान, मोंण कर मुछ मरोड़ी
रतनसेन कु पकड़, चित्रगढ़ नाखुं तोड़ी ।
हय कंपें चक च्यार, थरकि जलनिधी अकुलाणों ।
सरग इंद खलभल्यो, पड़्यो दस दिसींह भगांणों ॥
फरवाण देस दिसहिं फटें, सब दुनियाण असी सुणी ।
मारिहें रतन हिंदुआंणपति, साह पकड़िहें पदमणी ॥७७॥

चौपाई

गढ चीतोड तणी तलहठी, इण पर आयो आलिम हठी।
लाख सताविस लसकर लार, डेरा दीधा अति विसतार ॥७८॥

धूस नगारें धूजें धरा, गाजें गयण अनें गिरवरा।
हठियो आलम साह अलाव, गढ़ भंजण चित मन में दाव।
रतनसेन पण रोसें चढ्यो, पींधो आलम आवी पंड़्यो।
सुभट सेन तेडाया सहू, वह से बलवंत आया बहू ॥७९॥

रतन सझ्यो गढ़ अवली बाण, छोडें नाल गोला नें बाण।
रतनसेन बोले गजखंभ, हींदू धरम तणो उत्तंभ ॥
पतिसाही रणवट पाहुणो, भोजन जीमाडा खगतणो ॥८०॥

आ [व] ध नाना विध पकवान, आतस गोला खाग विधान।
खाठी भगत जिमाडो इसी, खग व्रत मद धारा [ना]
मोजसी ॥८१॥

इसो चखावो अजरोरु [क्] क, फिरें न लागें रणवट भु[क्] ख।
आपें पाखें अवर कु ण इस्यो, झेलें पाहुण आलिम जिस्यो ॥८२॥

उत अलाव इत रयण नरेश, हींदूपति ने पति असुरेस।
माहो माहे करें सग्राम, मुगल पठाण बहु आव्याकाम ॥८३॥

असपति कोइ न चालें जोर, रतनसेन राणो सिर जोर।
धे ऊपर थी भिड मारिका, असपत्ति सहिवें फाटा बका ॥८४॥

कोइक तोत तणा करि मता, रतनसेन पकडा जीवता।
वचन तणा दीजें वेंसास, विण फदे पाडीजें पास ॥८५॥

मू कीजें पक्का परधांन, एम कहावें द्यो हम मान।
तेडी माह खवावो खांण, निजर देखावो आहीठाण ॥८६॥
पदमणि हाथें जीमण तणी, खॉत अछें म्हानु अति घणी।
कांई न मागें आलमसाह, छडा साथ सु आवें मांह ॥ ८७ ॥

कवित्त

हमहि पठाए साह, कहण कु कथ अवल्ली।
जो तुम मानों वाच, साह फिर जावें द [ल्] ली।
दिखलावो पदमनी, और सब गढ दिखलावो।
विग्रह को नवि करही, बाँह दे प्रीत वधावो।
गढ़ देख मिलहि सिरपाव दें, बहुत मया आलिम कर (ही)।
रतनसेन सुण (हो) वीनती, सुहर माह दुतर तरही ॥ ८८ ॥

चौपाई

बोल बंध द्यो साचा सही, वाच हमारी विचलें नही।
नाक नमण करि कोट दिखाय, पदमणी हाथें मुझ जीमाय ॥६०॥
माहों माह करे संतोष, हिव मेटो अति वधतो रोष।
वलता कहें रतन राजांन, मा [ह] रा कथन सुणो परधान ॥६१॥

कवित्त

सुणि वजीर कहें राव, राम सिर पर राखीजें।
वाको गढ़ चीतोड़, सगत सुलतान हलीजें।
म करहो हठ गुमांन, तुमहुं साहिब तुरकाणे।
रजधारी रजपूत, हमही साहिब हिंदवांणे।

क्यु कहें बहुत श्री मुख वयण, हम रखही घर अप्पणो।
किरतार कियो न मिटें किण ही, त्याग खाग हिंदू तणो ॥ ९२ ॥
कहें वजीर सुनिराव, तुमही क्या ओपम दीजें।
तुम सूरज हिंदवाण साह कही एती कीजें।
दड द्रव्य नहिं पेस देस तेरा नहिं चाहु।
नहिं हम गढ री प्यास, राजकुमरी नहिं व्याहु।
करिहो न तुझ करहि फरक्क, राज महल नहिं आहडुं।
करि नाक नमण करीइं रयण, देख कोट फिर बावडुं ॥ ९३ ॥
सुण हो बहुरि राजान, इह हरजत फरमाया।
पूछें ग्यान कुरांन, तिहा एता दिखलाया।
रतनसेन अ [ल्] लान, पुव्व जन्मंतर भाई।
म्हे तप किया असोच, तिण पतिसाही पाई।
तें किया पवित्र दिल पाक तप, हीं दूपत पायो जनम।
हम तुम तेरो समा कुल ही, करत प्रीत रहीइं धरम ॥ ९४ ॥

चौपाई

खेमकरण वेधक परधान, इम कही सघलि मेलीधान।
हिंदू सदा निरमल दिल हुवें, धोलो सहु दूध ज लेखवें ॥ ९५ ॥
तेडी रांण तणा परधान, पुहतो जई पासें सुलतान।
दीधा बोल बाह सुलतान, हम तुम विचें ए छें रहमान ॥ ९६ ॥

श्लोक

मुख पय दला कारं, वाचा चंदन शीतलं।
हृदय कर्तरी तुल्यं, त्रिविधं धूर्त लक्षणम् ॥ ९७ ॥

चौपाई

राघव व्यास कियो मंत्रणो, रतनसेन ने झालण तणो ।
नृप मन कोय नहीं छल भेद, खुरसांणी मन अधिको खेद ।।९८।।

घरभेदू विण घर नवि जाय, घरभेदू थी घर ठहराय ।
घर भेदें लंकागढ़ गयो, राघव घरभेदूं हम कियो ।।९९।।

साह माहें पधारो राज, रतनसेन तेडें महाराज ।
आलिम साथ किया असवार, सलह संपूरित तीस हजार २५००

कवित्त

चढ़यो गढ सुलतान, खान निवाब लीया सग ।
तीस सहस असवार, सिलह नख चख ढ़कें अंग ।
पडें धुंस नीसाण, गिरंद चीतोड गडक्कें ।
सहिर लोक खलभलें, धीर छूटे चित्त धडक्कें ।
विड्डरें रयण मेल्यो कटक, ठोड ठोड सांमंत कसें ।
सनुख देख गयंद मेमत घटा, मयंद कपोरिस ढलसें ।।२५०१।।

चौपाई

आवि माहें हुआ एकठा, तव सगलें दीठा सामठा ।
रतनसेन मन खुणस्यो सही, आयो आगण आलिम चही २५०२
नृप पण सेना सगली सार, असवारे मिलिया असवार ।
तुंगे तुंग हुआ एकठा, जाणक बादल उत्तर घटा ।। २५०३ ।।
... .आलिम पिण न सकें आगमी ।
आलिम तांम कहें सुण भूप, क्युं मेलत हो कटक सरूप ।। ४ ।।

में लडणे कुं आया नहीं, गढ़ देखण की हें दल सही ।
न धरो मन में खोटा खेद, मेरे मन नाही छल भेद ॥ ५ ॥

कवित्त

कहें रतन सुण साह, चूक करि लाह न खटी हुं ।
रूक वाच वज्जही, बादल जिम तुम फट्टिहुं ।
तन गुमान मग धरहु ,करहु जिण कोइ कपट्टह ।
आए चली आंगणें, तास हम लाज निपट्टह ।
गज गाह बाँध ऊभें सुहड, मूंछ मरोडी मगज भरि ।
हम हुकम होत सम फोज सिर, पड़िही कंस सिर बीजड़ि ॥ ६ ॥

चौपाई

आलम जंपें सुण राजान, घर आया बहु दीजें मान ।
थोड़ा होवें होवें घणा, भेली लीजें निज पाहुणा ॥ ७ ॥
धान तणो छें आज सुकाल, घणा घणा काइ करें भूपाल ।
हम मिलवा आवें ऊमही, लडवा कुं हम आवें नही ॥ ८ ॥
राय कहें साभल पतिसाह, भलें पधारो आलिम साह ।
वलि तेडावो जाणो जिके, पिण लघु बोल म बोली वके ॥ ६ ॥
बोलें बोल बिहुं हुआ खुसी, हाथें ताली दीधी हसी ।
माहो माह हुओ संतोप, राय तणें मन मिटियो रोप ॥१०॥
करि दरगह बेंठो सुलतांन, आगें ऊभा सवे राजान ।
फेरवीजें घोडा गजराज, रुपक भेंट करें कविराज ॥११॥
रतन गया तव महिलां भणी, भगत करावण भोजन तणी ।
पदमणि प्रति राजा इम कह्यो, आलम सुं जिम तिस रस रह्यो ॥१२॥

भोजन भगत करो हिव इसी, जिम दल्लीपति होवें खुसी।
पदमणि नार कहें पिय सुणो, हुं हाथें न करूं प्रीसणो ॥१३॥
खट रस सरस करें रसवती, प्रीसेसी दासी गुणवती।
सणगारो सघली छोकरी, खात अछें जो तुम मन खरी ॥१४॥
पदमणी पास रहें सावधान, वीस सहस दासी रूप निधांन।
रूप अनोपम रंभातिसी, काम नि सेना होवें जिसी ॥१५॥
आसण बेंसण नें विध किया, ऊपर छाया डेरा दिया।
गादी मुंडा माहें अनूप, जरी दुलिचा अति हें सरूप ॥१६॥
ठोड ठोड ऊभा हुसियार, छडीदार प्यादा पडिहार।
सवे महिल सिणगारी करी, चिग पडदा नाखी झालरी ॥१७॥
त्यारी हुई रसोडा तणी, माहे तेड़्या दल्ली धणी।
देखी साह महिल सत खणा, जाण विमान अछें सुर तणा ॥१८॥
खुस खांणें बेंठो पतिसाह, बेठें खान निवाव दुव्वाह।
पदमणि माहें अधिक पंडूर, दासी आय देखावे नूर ॥१९॥
इम मंडे पत्रावलि थाल, माडें एक कचोली थाल।
इक झारी भरि हाथ धोवाव, ढोलें चंमर वीजें वाव ॥२०॥
इक मेवा प्रीसें पकवान, साल दाल सुरहा घृत धान।
विंजन विध विध प्रेम सुवास,
सुर पिण मोती [दा] ण कविलास ॥२१॥
भूलो साही कहें अल्लाह, यह हींदूवाण के पतिसाह।
देखी दासी रूप विलास, आलिम चित में हुओ उदास ॥२२॥

देख देख सूरत सब तणी, कहें साह यह सब पदमणी।
ऐंसी महिरी एक अलाह, हमकु एक न दीधी नाह ॥२३॥

कवित्त

कहे व्यास सुण साह, हें तारीफ पदमनी।
आफताब महिताब, जिसी वद [ल्] ल दामनी॥
सोवन वेल समान, मानसर जेही हँसनी।
जिन (ज) तन कमल सुवास, तास गुन सेवही
सुरधेन कलपवृछ जेहवी, मोहनवेल चितामनी।
कवि लघु अक लिइक हें रसन, क्युं ब्रनही सोभा घणी ॥२४॥
लख दस लहें पलंग, सोड सत लख सुणीजें।
गालमसूख्या सहस, सहस गीदूआ भणीजें।
तस ऊपर दुपट्टी, मोल दह लक्ख लद्धी।
अगर चंदण पटकूल, सेभ कुकम पुट दीधी।
अलावदीन सुलतान सुण, विरह विथा खिण नवी खमे।
पदमणी नार सिणगार सभ, रतनसेन सेझें रमे ॥२५॥

चौपाई

अवर न देखें पदमनि कोय, जे देखें तो गहिलो होय।
पदमनि पुन्य पखें किम मिलें, जिण दीठे अपछर ग्रव गले ॥२६॥
इम ते व्यास अनें सुलतान, वात करें छें चतुर सुजान।
तिण अवसर पदमणी चिंतवें, आलिम केहवो जो इम चवे ॥२७॥
तितरें दासी जंपें एक, गोख हेठ वेंठो सुविवेक।
तसुमुख देखण तव गजगती, आवी गोखें पदमावती ॥२८॥

जाली माहें जोवें जिसें, व्यासें पदमणि दीठी तिसें।
ततखिण व्यास इसुं वीनवें, स्वांमी पदमिण देखो हिवें ॥२९॥
रतन जडित जे छें जालिका, ते माहें बेंठी बालिका।
आलिम उंचो जोवें जिसें, पदमणि परतिख दीठी तिसें ॥३०॥
वाह वाह यारो पदमनी, रंभ कि ना ए छें रुकमणी।
नाग कुमा [रि] र किना किन्नरी, इन्द्राणी आणी अपछरी ॥३१॥

कवित्त

कहें साह सुनि व्यास कहा मेरी ठकुराई।
मे मदहीन गयंद में बलहीन मृगपति।
मे बद्दल जलहीन, (में हूँ) विजन विन लुहन।
में हीरा विन तेज, में हुं योगी विन मोहन।
विन तेज दीपक विण सूर दिन, कहा बहुत फिर फिर कहुं।
नही जाऊं दल्ली विन पदमनी, फकीर होय वन में रहुं ॥३२॥

चौपाई

व्यास कहें साभल सुलतान, फोगट काय गमावो माण।
धीरज धरि साहस आदरो, अवर उपाय वली को करो ॥३३॥
रतनसेन जो पानें पडें, तो ए पदमणि हाथें चडें।
इम आलोची मेली घात, धीरपणा विण न मिलें घात ॥३४॥
इम करता जीम्यो सहु साथ, भगत घणी कीधी नरनाथ।
श्रीफल देइ धात तंबोल, माहो माह किया रंग रोल ॥३५॥
हिवें इम जंपें आलिम साह, माहो माह झाली बाह।
परिघल दीधी पहिरावणी, जरकस नें पाटंबर तणी ॥३६॥

हाथी घोडा दीधा घणा, संतोष्या सगला पाहुणा ।
तुम महिमानी कीधी घणी, कोट देखावो तुम इम भणी ॥३७॥
रतनसेन नृप साथें थया, आलिम गढ़ दिखलावण गया ।
विषम विषम हुंती जे ठोड़, फरि देखाड्यो गढ़ चीतोड़ ॥३८॥
विखम घाट अति वाको कोट, माहें न[ही] देखें कांई खोट ।
गोला नाल वहें ढीकली, कदही कोइ न सकें नीकली ॥३९॥
गढ़ देख्या गढ़पति ग्रव गलें, एहवो कोट कही नवि भलें ।
इम जंपें ही आलमसाह, तुम हो रतन हमारी बाह ॥४०॥
कांम काज केजो हम भणी, तुम महिमानी कीधी घणी ।
आलिम रीझ दीइं गहगही, सीख दीए वलि ऊभा रही ॥४१॥
अधिपति कहें अघेरा चलो, मे दर्दार देखां रावलो ।
एम कही आवो संचर्यो, रांणो गढ़ बाहिर नीसर्यो ॥४२॥
नृप मन मे नहि को(इ) छल भेद, खुरसांणी मन अधिको खेद ।
व्यास कहें ए अवसर अछें, इम मत कहियो न कहियो पछे ॥४३॥

यतः

खड सूका गोड मूआ, वाला गया विदेश ।
अवसर चूका मेहडा, तू ठा कहा करेश ॥४४॥

चौपाई

असपति हलकार्या असवार, माहो माहें मिल्या जूझार ।
रांणो रतन झाल्यो ततकाल, विचली वात हुई असराल ॥४५॥

दूहा सोरठा

असपति अंव सरीख, रुंखा पुरखा राजवी ।
मुह मीठा उर वीख, कहो दई केम पतीजिइं ॥४६॥
नरपति अरि नाहर तणा, को विस्वास करेह ।
जे नर क [चू] चा जाणीइं, आलम एम कहेह ॥४७॥
वेंरी विसहर वाघ नृप, ग्रासी गढ़पति आप ।
छलवल ग्रहीइं दाव सही, कोइ न लागें पाप ॥४८॥
तुम हम महिमानी करी, अव तुम हम महिमांन ।
द्यो पद्मणि छोडुं परा, रतनसेन राजांन ॥४६॥

चौपाई

सुहड़ हुंता जे साथ सवेह, तिया चढ़ाई रजवट रेह ।
आण्यो पकड़े लसकर मांह, रवि नें ग्रहियो जाणें राह ॥५०॥
वेडि घालि वेसाड्यो राण, जुलम अन्याय कियो सुलतांण ।
रांणो रतन हुंतो वलवत, पकड्यां निवल हुओ ए तंत ॥५१॥

यतः

अंगा गमु गते शत्रु, किं करोति परि [चू] छद[ः] ।
राहुणा ग्रहते चद्रे, किं किं भवति तारके ॥५२॥

चौपाई

सुणी सहू गढ़ माहें वकी, वात तणी विनठी वानकी ।
हलवल हुई सेंहर वाजार, पकड़ाणो राणो सिरदार ॥५३॥
तेड्या सुहड दशो दिश वली, सेन्या सघली गढ़ में मिली ।
कटक सइया घण हील किलोल, मचलज ढाई गढरी पोल ॥५४॥

कुमती रतन कहीए राण, तेड्यो गढ़ माहें सुलताण ।
गढ़ उतरे पहुँचावण गयो, करे तोत रतन पकडीयो ॥५५॥

राजा तो पडिया तिण पास, असुर तणो केहो विसवास ।
पकड्यो नृप पदमणि पिण ग्रहें, गढ़ चीतोड हिवें नहीं रहें ।५६।

जसवंत बेंठा जुडि दरबार, जालिम तेड्या सह जुझार ।
मांहो मांहें करें आलोच, गढ़ में हुओ सबलो सोच ॥५७॥

एक कहें लडां झूझांगढ़ माह, एक कहे द्यो राती वाह ।
एक कहें अधिपति साकड़े, लडता जेहनें भारी पडें ॥५८॥

एक कहें नायक नहि माह, विण नायक हतसेन कहाय ।
एहवो कोइ करो मंत्रणो मान रहें हींदु ध्रम तणो ॥५६॥

इम आलेचे सामंत सहू, चित उपजी चित में बहू ।
तितरें आयो इक परधान, हुकम करें छें इम सुरतान ॥६०॥

तेड्यो माहें नीसरणी ठवी, मंत्री माहें बुध जाणंग कवी ।
इम जंपें छें आलम साह, तुमे कहो तेहनें चू वाह ॥६१॥

हमकु नारि दीयो पदमणी, जिम म्हें छोडु गढ का धणी ।
एम कहेनें गयो प्रधान, सवि आलोच पड्या असमान ॥६२॥

कहो हिवें पर कीजें किसी, विसमी बात हुई या जिसी ।
जो आपां देस्या पदमणी, तो रिणवट न रहें आपणी ॥६३॥

विण दीधां सवि विगसें वात, पदमनि विन न मिलें कोइ घात ।
ऐतो जोरें लेसी सही, जे आया छें इण गढ़ वही ॥६४॥

कवित्त

कहें कुंअर जसवंत, सुनहो उमराव प्रधानह।
रख्खहुं गढ की सोभ, धरा रख्खहुं हिंदवाणह॥
हूं राजा परवसें, नहें चल देखें भली।
देहुं नारू पदमनी, साह फिर जावें दिल्ली॥
गढ़ आय रांण वेंठही तखत, चमर ढलाव हीतूक धर॥
सिल हेठ हाथ आयो सु तो, छल हिकमत काढही सीपर॥६५॥

चोपाई

सुभटे सघले थापी वात, हिवें पदमणि देस्या परभात।
इम आलोची ऊठ्या जिसें, पदमणि सवि साभलिया तिसें।६६।

कवित्त

कहें पदमनि सुनि सखी, वात यह कुमर विचारें।
हम देई पतिसाह, धरा गढ़ राण उगारें।
मे सींघल उपन्नी, राजपुत्री कहेंवानी।
गढ़पति रतन नरेश, भई ताकी पटरानी।
अब बहुरि नामह किण विध करहुं, म्हे कुळवती कांमनी।
हिंदवाण वंश लछन लगें, थूक थूक कहीइ दुनी॥६७॥
गढ़पति पकड्यो साह, राह जिम चद गरासें।
विनु दोषे उगहेन, सुभट कहा ओर विमासें [ह]
भवति जोग कछु सु वो मिटे नही अभीतह
आप मुओं जुग वुड़िहें, दुनीयां नह उकत्तह।

मेर मरंत सबही रहीइं धरम, धर रक्खहि रक्खहिं धनी।
छूटहैं हठ सुलतान चित, जब मृत्यु सुनिहैं पदमनी ॥६८॥
कहैं पदमनि सुन स्याम, राम रघु सीता वल्लभ।
दशरथ सुत हो तु[ज्]झ,, तुमहि ल[ज्]जा कें ओठंभ।
औरन कोई इलाज, आज संकट दिन आयो।
धरही चितन में दया, करहुं सतन को भायो।
असुराण राण पकड्यो रयण, चाहैं मुझ मन में चहू।
अनाथ नाथ असरण सर[ण्]ण, राख राख एती कहुँ ॥६६॥

सवैया

कैसें तुम मृगणी के गन निगणें भरथ,
कैसें तुम भीलणी कें झूठें फल खाये थे॥
कैसें तुम द्रोपदी की टेर सुनि द्वारिका में,
कैसें गजराज काज नाग पर धाए थे॥
कैसें तुम भीखम को पण राख्यो भारथ में?
कैसें राजा उग्रसेन बंध थें छोराए थे॥
मेरी वेर कान तुम कान बंद वैठ रहें,
दीनबन्धु दीनानाथ काहि कु कहाए थे ॥७०॥

दूहा

पंखी इकलो वन्न में, सो पारधी पचास।
अबके जळहो उगरें, अ[ल्] ला तेरी आस ॥७१॥
सुभट भए सतहीन सब, आलिम पकड्यो राज।
साईं तेरे हाथ हैं, म्हो अबले की लाज ॥७२॥

चौपाई

अवसर इण हुओ छें जेह, थिर मन करिनें सुणज्यो तेह ।
तिण गढ़ गोरो रावत रहें, खित्रवट तणी विरुद भुज वहे ॥७३॥
तास भतीजो बादलराव, सर तानें भरिया दरियाव ।
ते बेवे छल बल रा जांण, बेवे रावत बे कुल भान ॥७४॥
पिण तेहनें नहि सुनिजर स्वाम, रोकड़ ग्रास नही को गाम ।
घरे रहें न करें चाकरी, रतनसेन सु क्या परहरी ॥७५॥
रावल बे जाता था जिसें, गढ रांह्यो मंडाणो तिसें ।
रुंधेगढ़ नवी जाइंतेह, जाता खत्रवट लागें खेह ॥७६॥
तिण [रे] कारण ग्रहिरहिया टेक, हिवें जास्या काइ हुआ एक ।
अंग तणो न तजें अभिमान, सूर महाबल जोध जुवान ॥७७॥
खत्री सोहि खत्रवट चलें, मरण हीए पिण नवि नीकलें ।
भुंडा भला पटातर जाम, खार्या जेम हुवें खगजांम ॥७८॥
पिण तेहनें नवि पूछें कोय, जो पूछें तो इम काइ होय ।
जाणहार हुवें धरती जांम, सभ जोचंता राखे जाण ॥७९॥
चिंते चितमांहें पदमणी, गोरो बादल सुणीजें गुणी ।
त्यांसु जाय करु वीनती, बीजा माहि न दीसें रती ॥८०॥
इम आलोची पदमणि नार, सुखपालें बेंठी तिणवार ।
आवी गोरल रें दरबार, साथें सयल सखी परवार ॥८१॥
गोरो सामो धायो धसी, विनय करी नें आयो हसी ।
मात मया बहु कीधी आज, भले पधास्या दाखो काज ॥८२॥

सुभटें सगलें दीधी सीख, दया धरम री नहिं आरीख।
सीख दियो हिवें तुमें पिण सही, जिम असुरां घर जाऊं वही ८३
सुभट सबें हूआ सतहीन, प्रथवी खत्रीवट हुँई खीण।
सुभटे सगलें दाख्यो दाव, पदमनी दे नें लेस्या राव ॥८४॥
हिवें तुमें सीख दिइयो छो किसी, कहोवात अधिकाई किसी।
गोरो जंपें सुण मुझ मात, होसी सघली रुडी वात ॥८५॥
जो तुम आया मुझ घर वही, तो असुरा घर जास्यो नही।
रजवट तणो नहीं संकेत, नारी देई कीजें जैत ॥८६॥
वलि मत्वो रजपूतां भलो, आमों सामो करवो कलो।
स्त्री देइ ने लीजें राव, सकज न थाइ एह कुदाव ॥८७॥

कवित्त

तुं रजधर गोर [ल्] ल, तु ही सामंत सक [ज्] जह।
तु ही पुरस हिंदवाण, राण घर सहु तुज भु [ज्] जह ॥
वीरधीर वडवीर, तुँ ही दल वीडो झलें।
तुं मुझ दें अहेंवात, नारि पदमणि इम बोलें।
सुहडा अवर सतहीण सवे, यह जस तो भुजे हेंकिलो।
अलावदीन सुंखगावलों, हींदूपति छोडाविलो ॥८८॥

चौपाई

गोरो जपे सुण मोरी वात, गाजण हुंता वडा मुझ भ्रात।
तस सुत वादल छें वलवत, तेहने पण पूछों ए मत्र ॥८९॥
तव पदमणि गोरल ससनेह, पोहता जइ वादल रें गेह।
देख आवती थयो मन खुशी, वादल सामो आयो हसी ॥९०॥

विनयवंत करि पग परिणांम, काका नें वलि कीध सलांम ।
गोरो जंपें बादल सुणो, सुहड़ें थाप्यो ए मंत्रणो ।।६१।।
पदमणि देई लेस्यां राव, अवर न कोई चिंतें दाव ।
पदमणि आया आंपण पास, आणी आम्हो मन विशवास ।६२।
हवें तुं जेम कहे ते करां, नीचो देता लाजें मरां ।
आपें डीलें छा दो जणा, आलम साथे लसकर घणा ।।६३।।
कहो जीपेस्या किम एकला, किला न होवें कदही भला ।।६४।।
तिण कारण तो पूछण भणी, आव्यों साथें ले पदमणी ।
हिवें करवो रणवट नें ठाह, आपें बेहु भुजें गजगाह ।।६५।।
पदमणि बादल सुं इम कहें, सरणें आवी हुं तुम तणे ।
राखि सको तो राखो मुज्भ, नहि तर तेहिवो दाखो मुझ ।।६६।।
खांड़ुं जीह दहुं निज देह, पिण नवि जाउं असुरा गेह ।
लाखां जुंहर करिनें वलुं, पिण नवि कोट थकी नीकलुं ।।६७।।
सील न खंडुं देह अखंड, जो फिर उलटें देह अभंग ।
सुहड करावें वलि भरतार, मुझ कुल नहीं हें ए आचार ।।६८।।
सील प्रभावें होमी फते, रिपुदल लागो झुंबों मते ।
रहें [अ] गढ़ नें छूटें राय, हुं पिण रहुं सुजस जग थाय ।।६९।।
परमेसर पिण साहस साथ, अंत हथा करसी जगनाथ ।
लहो सोभाग दीधी आसीस, जीवो बादल कोड वरीस २६००

कवित्त

कहें पदमनि आसीस, अखें बादल अजरामर ।
तुं मुझ पीहर वीर, धीर चित मोर बराबर ।

खग भाजइ खुरसाण, माण रक्खहुँ हिंदवागह ।
घुरें जेत नीसाण, करें दुनीयाण वखाणह ।
संनाह स्याम सरणं सुहड, एह विरुद तुम्क भुज लहैं ।
कर घालझ्यो समु छा सुहड, तुज्झ अंक माथें वहें ।।२६०१।।

दूहा

अद धर वादल बोलियो, मरद जोस मयमत ।
गहकें केहरी गाजियो, दूठ महा दुरदंत ।।२६०२ ।।
काका सुग वादल कहैं, केहो कायर काम ।
रहो वे न सारा सुहड, एह अमीणो नाम ।।२६०३।।
काका थे [का] चिंता म करो, अग धरिहो उलास ।
तो हुं वादल ताहरो, भत्रीजो स्यावास ।।२६०४।।
आलम भाजु एकलो, पोउ पिसुण खग रेस ।
कुलवट उजवालुं किलो, आणुं रतन नरेश ।।२६०५।।
बीडो झाल्या बादलें, बोले इम बलवत ।
तुं सत सीता दूसरी, हूँ दूजो हनुमंत ।।२६०६।।
सती तुहारी सामिनो, मिलु महोदल माण ।
घडि माहें आणु घरें, रतनसेन राजांन ।।७।।
घरे पधारो पदमणि, मकरो आरत माय ।
बादल बोल्या बोलड़ा, ते नवि झूठा थाय ।।८।।
प [च्] छिम सूर न ऊगमे, मेर न कंपें वाय ।
सापुरसा रा बोलडा, फिरे न झूठा थाय ।।९।।

गोरो साभलि गहगह्यो, सूरिम चढ़ी सरीर ।
कायर पूता कापवें, सूर धरावें धीर ॥१०॥

चौपाई

पदमणी घरें पधारी जिसें, बादल माता आवी तिसें ।
सुणज्यो सगलो ते संकेत, हिवड़ा मांह न मावें हेत ॥११॥
नयण झरें मुंकें नीसास, माता दीसें अधिक उदास ।
इण पर आवी दीठी मात, विनय करें पूछें सुत वात ॥१२॥
किण कारण तू माता इसी, कहो वात मन मानें तिसी ।
आरत केही छें तुम तणे, क्युं छो चित्त आमण दुमणे ॥१३॥
मात कहें सुग बादल बाल, माडै कांय लीयो जजाल ।
दूध दही तुं माहरे एक, तुझ विण कोई नहिं मुझ टेक ॥१४॥
घणा खाए मेगलिया ग्राह, सुहड रह्या छें तिके विमाह ।
मासन वास नही नृप तणो, खरच खावाछा निज गाठनो ॥१५॥
रिण विध किम जाणेस्यो सजी, घर विध वात न जाणो अजी ।
कहि कीधा छें तें संग्राम, अणजाण्या किम कीजें काम ॥१६॥
आलिम किण पर गज्यो जाय, आटें लुण किसा नें थाय ।
बादल पूत अछें तुं बाल, रिण संग्राम तणो नहि ताल ॥१७॥
अलगा डुंगर रलियामणा, हुंस हुवें अण दीठा तणा ।
जुद्ध तणा मुख भला अदीठ, वात करंता लागे मीठ ॥१८॥

यतः दूहा

डुंगर अलगा थी रलियामणा, दीसें इसरदास ।
नेडा जाय निरखिजें जदी, काटा भाठा नें घास ॥१९॥

चौपाई

सीह सबद सुण मेयगल घटा, नासें सगला तेपिण कटा।
जिम आलम भाजुं एकलो, गढ चीतोड़ दिखाउं भलो ॥२०॥

दूहा

एक संहेस एकलो, एक एकला घणाह।
सींघ सहेसें बींटियो, जोखे जणा जणाह ॥२१॥

कवित्त

रे बादल कहें मात, बात तुं बीछ करारी।
परिहर मन अभिमान, बोल बोलहुं विचारी।
सुभट होयें दसबीस, तास वलि आरंभ कीज्यें।
आलिम साह अथाह, समुंद किम बाह तरीज्यें।
बालक गत ओछंछलि, जूझ बूझ जाणें नही।
मुझ वयण मान सुपसाय कर, तो सुपूत बादल सही ॥२२॥
हुं कित बालो माय, धाय आचल नवी लगु।
हु कित बालो माय, रोय नही भोजन मग्गूं
हु कित बालो माय, धूलिढिग माँहि न लोटुं
हु कित बालो माय, जाय पालणें नही पोढुं।
जा जुल नाग आलम जुवन, जास जुद्ध छोड़ ग्रहें।
रण खेल मचाऊं बाल जिम, नही माय बालो कहें ॥२३॥
तव फिर जंपें माय, बात सुन पूत अधीरह।
गढ़ रोक्यो असुराण, सुभट सबल ए अधीरह।

पकड्यो राव परहत्थ, कत्थ न हुं झूठ करीजें
नहि सामंत तुझ भीर, झूझ कहा सोभ लहीजें।
रढ़ चढ़ हुं लहुं बालक जिम, कहैं बालक दुख क्युं धरुं।
साह ए समुंद सुलताण दल, भुजबलि जिम दुतर तरहुं ॥२४॥
कहैं बादल सुण मात, कहा फिर फिर बाल (क) कह।
जेठी नट जूझार, दास गायण हैं पायकह।
वस्त्र सस्त्र कवि रुप, गयंद त्रिय गाह कवित्तह।
एते सब बालक्क [ह], मोल मुंगा जिन तन्नह।
बालुए कान काली दिख्यो, बाले गज देसीस दिय।
अरि सेन चाब बालक्क जिम, देखि ख्याल करी दृढ़ हिय ॥२५॥
कहैं बादल सुण मात, देखी एह घात विचारी।
प्रथम सांमी साकडें, कष्ट भुगतहिं तन भारी।
असपती गढ विग्रह्यो, रह्यो न सुहडा धीर [ज्] ज।
राजकुमार बाल [क्] क, तास निज नाही स वीरज।
पदमणी मुझ पयठी सर [ण्] ण पेख्ख विचख्खन बात सब।
निज वंस अंश ऊजल करण, इह अवसर फिर मिलहि कब ॥२६॥

चौपई

सुतनो सूरपणो साभली, माता मन माहें कल मली।
बरज्यो वचन न मानें रती, तब गई मेली मेठलवती ॥२७॥
बात सहू बहूअरनें कही, जई राखो निजपति नें ग्रही।
म्हारी सीख न मानें तेह, रहेंसी भेट तुमारो नेह ॥२८॥

सवी शृंगार सझै साभ्रता, पहिरी वस्त्र भला भावता ।
हाव भाव करें वचन विलास, जिण पर तिण पर पाडें पास ।।२६।।
एम सुणि वहूअर नीकली, झबकती जाणें वीजली ।
सकुलिणी सझ सोल शृंगार, आवे वेगि जिहा भरतार ।।३०।।
रूपें रंभ जिसी राजती, मृगनयणी सुन्दर गजगती ।
नयणें निरमल देख्यो नेह, सामधरम दाखें ससनेह ।।३१।।
कोमल वदन कमल कामनी, दीपें दंत जिमी दामनी ।
हस्त वदन बोलें हितकरी, स्वामी वात सुणो माहरी ।।३२।।
आलिम दूठ महा दुरदंत, कहीनें किण पर जूझो कंत ।
अरि वहुला ने तु एकलो, इसें मतें नवी दीसें भलो ।।३३।।
ते हुं पुरख नही बादलो, जोए जिण पर माडुं किलो ।
वलती अरज वली [छें] इसी, जात नहीं छें जावा जिनी ।।३४।।
हींसे खेंग सींधुर सारसी, गलवल डूगल करें पारसी ।
सोखें खिण इक माहें तलाव, मुख मंकड चित दुष्ट सुभाव ।३५।
भुरज उडावें दे दे ढ़ला, मास भखें वाणें अलगला ।
ऊडंता पंखीया हणें, वालें वांधी कोडी चुगें ।।३६।।
बादल बोलें वलतो हसो, तें ए वात कही मुझ किसी ।
हेंवर गेंवर पायक पूर, एकण हाक [क] रुं चकचूर ।। ३७ ।।

दूहा

इह त्रिय सुणि बादल वयण, जंपें तीय जुवान ।
त्रिया सैझ गंजी नहीं, किम गंजसी सुलतान ।। ३८ ।।

चौपाई

खडग युद्ध विसमों छें सही, कूडी रीस न कीजें कही।
मुझ तन हाथ न घाली सको, भोगी स्वाद लहें जे थको ॥३९॥
असपति घडि विसमा वींदणी, भमुह चढावें मेलें अणी।
जरह कंचुकी भीडत अंग, विलकुलियो मुख रातो रंग ॥४०॥
मलपें मयमत नारी जेम, वचन विरस चित न धरे पेम।
अमंगल सींधू नद गावती, छल धर ती डा कुल वावती ॥४१॥
पोरस तणो देखालिस तेज, तिण दिन आविस ताहरी सेज।
जालिग पिसुण वखाणें नही, गुणीयण विरुद न द्यें उमही ॥४२॥
तां लग केहा सूर सधीर, वल्लभ मानें जेह सरीर।
लोही साटें चाढ़ें नीर, ते कुल दीपक बावन वीर ॥४३॥
जब नारी जंपें कर जोड, अवर नही को ता [ह] रें जोड।
भलो भलो कहेंमी संसार, सामधरम रहेंसी आचार ॥४४॥
जिम बोलें छें तिम निरवहें, मत किण वातें जाए ढ़हें।
लाज म आंणो कुल आंपणें, सामी साहस जूझें घणें ॥४५॥
जीवन मरण सदानु नाथ, हुं नवी मुंकुं प्रीतम साथ।
घणो घणों हिवें कासु कहुँ, जिम करज्यो तिम हुं गहगहुं ॥४६॥
कंत कहें साभल सुंदरी, मोटा वंश तणी कुंअरी।
वोल्या वोल भला तें एह, हित वाछें सोही ससनेह ॥४७॥
ओछा वर की आवें नार, कुमत दीए पूछ्या भरतार।
तें कुलवंती नारी तणों, महीयल सुजस वधाव्यो घणो ॥४८॥

अस्त्री आंण दिया हथियार, सभी आऊध ऊठ्यो तिणवार।
विनय करी माता पग वंद, चंचल चढि चाल्यो आणंद ॥४६॥
गोरा पासें आयो गहगही, काका धीरप राखो सही।
एक वार देखु ं पतिसाह, देखु ं कुंअर तणो पिण माह ॥५०॥
कहें गोरो वादल सुण वात, मुझ तुझ एक अछें संघात।
तु ं जावें हुं पाछें रहुं, ए वातें किम सोभा लहुं ॥५१॥
काका न कीजे काची वात, हुं जावु ं छु ं मेलण घात।
रिणवट्ट मुझ तुज्झ हें साथ, इण वातें मुझ देखण हाथ ॥५२॥
गोरो रावत राखें घरें, वादल चालो साहस धरें।
सुभट सहु मिलिया छें जिहा, वादल रावत आवें इहा ॥५३॥
सांमधरम सरणें साधार, रिम दल गाहण सवल अपार।
जाणें कुल कीरत धन धस्यो तेज-पूज सूरज अवतर्‌यो ॥५४॥
सभा सहू देखी खलभली, सूरातम सामंत अटकलि।
वादल कवहि न आवें सभा, त्रास न लाभें नहि घर विभा ।५५।
सकें तो काइ विमासी वात, गाजण सुत ए सूर विख्यात।
सुभट राय सुत वेठा जिहा, कियो जुहार आवी नें तिहा ॥५६॥
उठ सुभा सहू आदर दिए, वेंठा वादल तव दृढ हिए।
पूछें सुभा प्रयोजन आज, कहो पधार्‌या केहें काज ॥५७॥
वादल वोलें वहिसे इसो, कहो तुमें आलोचो किसो।
सुभट कहें वादल सभलो, सवल मंडांणा इण गढ़ किलो ॥५८॥
अढियो आलम अवलीवाण, गढ़पति ग्रहियो रतनीम राण।
गढपिण लेस्यें हिवडा सही, द [ल्] ली पत वेंठो हठग्रही ॥५६॥

पदमनि द्या तो छूटें पास, नहितर गढ़री केही आस ।
गढ जाता कोई नवि रहें, वले करां जें तु कहें हिवें ॥६०॥
बादल बोलें भलो मंत्रणो, तुम आलोच कियो छें घणो ।
पदमणी आपं देस्यां नही, गढ़पति नें छोडावा सही ॥६१॥
इम करता जे आवा काम, कुलवट रहसी नामो नाम ।
काया साटे कीरत जुडें, [तो] मोले मुंहगी नवी पडे ॥६२॥

दोहा

सींह न जोवे चंदबल, नवि जोवें घर रिद्ध ।
एकलो ही भाजें किलो, जहा साहस तिहा सिद्ध ॥६३॥

चौपाई

सूरातन चित धीरज अथाह, परमेसर त्या आवें वांह ।
तिवें आदरज्यो सतध्रम तणो, सुहडां धीरज दीज्यो घणो ॥६४॥
हुं जाउ छु लसकर माह, आवु वात सहू अवगाह ।
करि जुहार बादल अश्व चढ्यो, साहस नूर सूरातम चढ्यो ॥
गढ़री पोल हुंती ऊतर्यो, बुद्धिवंत नें साहस भर्यो ।
निलवट दीपें अधिको नूर, प्रतपें तेज घणो घट पूर ॥६५॥
सलहें अंग सझ्या सावता, पहिर्या वस्त्र भला फाबता ।
आव्यो एकल मऊ असवार, जाणे अभिनव इन्द्र कुंआर ॥६६॥
आवत दीठो आलम जिसें, ए आवें हें कारण किसें ।
पूछण मुंक्या सामा दूत, क्युं आवत हें ऐ रजपूत ॥६७॥
आयन किमें पूछ्यों तेह, बोलें बादल अती सनेह ।
आव्यो एक कहेवा वात, पदमणि आण देऊ परभात ॥६८॥

आलिम माने मुझ मन्त्रणो, तो उपगार करुं हुं घणो ।
जाय न किम आलम सुं कह्यो, इम निसुणि असपति गहगह्यो ६९
माहें तेडायो देइ मान, दीठो असपति भिड असमान ।
तेज तेख दिनकर थी वणी, हुकम कियो खुस वेंसण भणी ।।७०।।
वेठो बादल बुद्धि निधान, असपति पूछें करि बहुमान ।
क्या तुम नाम कसी का पूत, अब किसका है ते रजपूत ।।७१।।
क्या तुमको हैं गढ़ मे ग्रास, को अब आए हो अत्र पास ।
बोलें बादल वलतो हमी, रोम राय घट सहू उगसी ।।७२।।
अवसर बोली जाणें जेह, मांणस माहें जणावें तेह ।
विनय करें कर जोड प्रमाण, करिहुं अरज पाऊ फुरमाण ।।७३।।
नाम ठाम सहू विगतें कह्या, महरवान तब आलम थया ।
बादल बोल्यो साहस धरी, स्वामी वात सुणो माहरी ।।७४।।
पदमणि मुक्यो हुं परधांन, सुहड न मेलें निज अभिमान ।
पदमणि देख्या तुम कुं हेठ, भोजन करता लागी देठ ।।७५।।
तिण दिन थी ते चिंते इसो, कामदेव वलि कहीइं किसो ।
धन तस नारि तणो अवतार, जिसकें आलम हैं भरतार ।।७६।।
विरह विथाकुल वेंठी रहे, अहनिस सुहिणें आलम लहें ।
निपट घणा मुके नीसास, अबला दीसें अधिक उदास ।।७७।।
आलम आलम करती रहें, मुख करि वात न किण सुं कहें ।
मुझ तेडी ए दाख्यो भेद, मुंक्यो करवा विरह निवेद ।।७८।।

दूहा

सुण साहिब आलम अरज, में पद्मणि का दास।
यह रुक्का हमकुं दिया, हें इसमें अरदास ॥ ७६ ॥
जो में देखुं वदन छब, मेरे कुछु न चाह।
इंन्द्रपुरी किह काम की, प्रीत नहीं जिस माह ॥ ८० ॥
रुक्का आलम हाथ सुं, वाचत धर ऊछाह।
ताती बाती विरह तें, मेटत ही जल दाह ॥ ८१ ॥
निस वासर आठो पहर, छिन ही न विसरें मोह।
जिहा जिहा नयन पसारहुं, तिहां निहा देखें तोह ॥ ८२ ॥
साह तुमारे दरस कुं, अरध रह्यो जिव आय।
कहो क्या आग्या देत हो, फिर तन रहें के जाय ॥ ८३ ॥
प्रीत करी सुख लेण कु, सो सुख गयो दुराय।
जेसें साप छछूंदरी, पकर पकर पछताय ॥ ८४ ॥
वाती ताती विरह की, साहिब जरत सरीर।
छाती जाती छार हुइ, ज्युं न वहत द्दग नीर ॥ ८५ ॥

कवित्त

कहें पदमनि सुन साह, वाह तुम रूप वडाई।
[अहो] काम रूप अवतार, अहो तेरी ठकुराई ॥
मुझ कारण हठ चढे, आप ग्रही खग उनंगें" ।
पकडयो राण रतन्न, वचन विसवास उलंघे ॥
अव वेंठा है करि मोन मुख, कहा तुमारें दिल वसी ॥
जेही काज एतो कियो, सो क्युं न कग्हो खुशी ॥ ८६ ॥

में तेरी पग दास, में (हूं) तेरी गुण वंदी।
तुम रहिमान रहीम, मे हुं त्रिय आब मगी दी।
मे तो यह पण किया, सेज आलम सुख माणु।
ना तर तजिहुं प्राण, अवर नर निजर न आणु।
अब करिहुं [वहु] राज मानहुं अरज, हुकम होय दरहाल इह।
में आय रहुं हाजर खडी, छोडि देहो हिंदवाण पह ॥ ८७ ॥

चोपाई

जब भेजें आलिम परधान, चो पदमणि छोड़े राजान।
सुहड कहें वलि मरसा सही, पिण पदमणि को देस्या नहीं ॥८८॥
में समझाय सुभट सामंत, वीरभाण कुंअर जगजंत।
क्यु क्यु आज ठवें छेकान, तिण जाणु छू त्रिणसे वान ॥ ८६ ॥
पदमणि मुंक्यो हुं तुम भणी, विनय भगत विनवें घण घणी।
वलें जिका होवें छें वात, आवे कहेस्युं ते परभात ॥ ६० ॥
सीख दियो पत्री पढि सही, पदमणि पासें जाऊं वही।
जोती होसी म्हारी वाट, करती होस्यें अति उचाट ॥ ६१ ॥
विरह विथाकुल [न ख] मे विरहणी, काम पीड दाहें पदमणी।
तुम संदेस सुधारस जिसा, पाउं जाइ कहुं तिहा तिसा ॥ ६२ ॥

दूहा

असपति इण पर साभली, पदमणि प्रेम प्रगास।
वयण वाण वेध्यो घणो, मुंकें सबल निसास ॥ ६३ ॥
पत्री वाची प्रेम सुं, चतुराई सु- विचार।
कागद कर मुंके नही, नयण लगाई तार ॥ ६४ ॥

कामण वाण कुण सहि सकें, दाझें सारी देह।
सुन्दर तणा संदेसडा, निपट वधारें नेह ॥ ६५ ॥
वार वार चुंबन करें, रुक्का कुं मुखलाय।
अजब पढ़ी है पदमणी, खूब लख्या ए माह ॥ ६६ ॥
असपति थो अहि सारिखो, सहीन सकंतो कोय।
'खील्यो बादल गारुडी, पदमणि मंत्र परोय ॥ ६७ ॥

चौपाई

असपति बोलें बादल सुणो, तुं मेरें वल्लभ पाहुणो।
भगत जुगत केती कहजीइं, तेरी अकल वसी मुझ हीइं ॥ ६८ ॥
पदमणि सुं कहियो मुझ प्रीत, रुडी पर भाखें सहु रीत।
जो हम हाथ आई पदमणी, तो तुझ कुं द्युं धरती घणी ॥ ६९ ॥
सुभट सहू समझावें घणा, थिर कर थापै ए मत्रणा।
तुझ नुं करस्यु देशज धणी, दूध डांग दिखलावे घणी ॥२७००॥
इस कही कर सुती निज नाह, पहिराव्यो बादल पत्तिसाह।
लाख सोनिया दीधा सार, हेंवर गेंवर देश अपार ॥ २७०१ ॥
रुक्का लिख देहुं तुम हाथ, माहें लिखहुं प्रीतम गाथ।
रुक्का ल्युं नहि आलम तणा, कोइ वाचें तो भाजें मत्रणा ॥ २ ॥
मुख सुं वात करुंगा घणी, विरह वात सहु आलम तणी।
मुझकुं सीख दीयो सुपसाय, आलम साह दीयो पहोचाय ॥३॥
सोवन पोट हमाला सिरे, हय हीसें घेंसारव करें।
इण पर आयो चित्रगढ़ माह, पूछें वात सहू परचाह ॥ ४ ॥

रींझ मोकली निज घर ज्यार, माता हरख थई तिणिवार।
देखी साह तणो सिरपाव, देखी सूरातम दरियाव ॥ ५ ॥
गोरो रावत मन गहगह्यो, करसी वादल सगलो कह्यो।
हरखिन नार हुई पद्मणी, ए मेलवसी सही मुझ धणी ॥ ६ ॥
सुभट सहू चमक्या मन माह, वादल माहें अधिको आह।
सगत न छानी राखी रहें, बाधी अगन होवें तो दहें ॥ ७ ॥

दूहा

विधना ज्या वुहि गुण दियो, नित दो मति मन मद।
जे कुंडे किम छाइए, छिप्यो रहें कित चंद ॥ ८ ॥

चौपाई

वादल वम कीयो मंत्रणो, कहुं वात तें सहु को सुणो।
वीस सहम मझ करो पालखी, वात न किणही जाई लखी ॥ ६ ॥
ऊपर अधिक करो ओछाड, पाखतिया वाधो पतिवाड।
दो दो सुभट रहो सा माह, वांधी सस्त्र सलह संन्नाह ॥१०॥
लागे लार करो पालखी, कह्मा माहें छें तसु सखी।
विचें पालखी पद्मणि तणी, परठी मोम करो तिण धणी ॥११॥
साचो पद्मणि रो स्निगार, ऊपर थापो भवर गुंजार।
तिण मे रावत गोरो रह्यो, वात रखें कोई वारें कह्यो ॥१२॥
छेटी विचें न राखो रती, लारो लार करो पागती।
गढरी पोल समीपें वार, सेन समीपें आणो पार ॥१३॥
एम करी हिवें तुम आवज्यो, वेला वहुली पडखावज्यो।
हुं विच जाय करुं छुं वात, मिलस्या जिम तिम धातोधात ॥१४॥

हुं ले आवेसुं राजान, पोहचावेस्युं नृप निज थान।
पछे करेस्या सबलो कलो, ए आलोच अछें अति भलो ॥१५॥
सुभटे सगले मानी वात, परठ करता थयो प्रभात।
भेद सहू समभावी घडी, चाल्यो बादल चचल चडी ॥१६॥
पोहतो जाय लसकर माह, जहा बैठो छें आलमसाह।
जाए बादल करी सलांम, हरखित बोलें असपति ताम ॥१७॥
बादल साचा कह सदेश, बगसुं बोहला तोनें देस।
बादल अरज करें परगडीं, स्वामी बात सिराडें चढ़ी ॥१८॥
कटक सहू समभावें नीठ, पदमणि आंणी गढ़रें पीठ।
सुहड सहू भाखें छें ऐह, निसुणी स्वामी विनती तेह ॥१९॥
पदमनि सुं ज्यो छें तुम काम, तो हिवें राखो मामो माम।
अतरो हुवें हमकुं [वे] वैसाम, पदमणी आणुं जिम तुम पास ।२०।
असपति बोले वलतो एम, कहो विसवास हुवै तुम केम।
बादल कहें श्री आलम सुणो, विदा करो लसकर आपणों ॥२१॥
सुहड सहू बोलें छें मुखें, वेही स्वारथ चूको रखें।
पदमणि लेइ न छोडें राव, रखे उपावो असपति दाव ॥२२॥
पहिली पण कीधो छें कूड, तिण वैसास मिल्यो छें धूड।
तिण कारण कहुं आलम साह, लसकर सबही करो विदाह ॥२३॥
जो वलि वीहो तो असवार, पासें राखो सहस वे च्यार।
अवर द्यो सहुं आगें चलाय, जिम विसवास अमा मन थाय २४
इम सुणीनें थयो उतावलो, बोलें आलम अति बावलो।
हम अबीह वीहें किस थकी, बादल एसी तें क्या कथी ॥२५॥

हुकम कियो असपति हुंसियार, कूच कराव्यो लसकर लार ।
सहस वे च्यार रहो हम पास, हींदू कुं होवें वैसास ॥२६॥
लसकरिया जब लाधो दूदुओ, हरख घणो मन माहें हुओ ।
लसकर कूच कियो ततकाल, चाल्या सुभट विकट विकराल ॥२७॥
मीर मुगल को [इ] खांन निबाब, मुगल पठाण घणी जस आभ ।
पदमणी सनस करें जे भणी, आगें चलाए दल्ली भणी ॥२८॥
बिया बिया जे जो रण कट्टा, एकेला भाजें गज घटा ।
डाईल साह नाणें विस्वास, तिण कारण राखण भिड पास २६
सूरा सूरा सहस वेच्यार, अस्पति पास रह्या असवार ।
आलिम बोले वादल सुणो, कहियो कीधो हैं तुम तणों ॥३०॥
वेग मंगावो अब पदमणी, पालो वाचा आपापणी ।
लाख महोर तब रोकड दिया, पहिरावणी वागा समपिया ३१
ते लेई बादल आवियो, हरख्यो माय तणो तब हियो ।
तब सुहडा सुं कही संकेत, हवें जगदीस दियो ं जेंत ॥३२॥
तुमे संकेत रूडो राखज्यो, पालखी तुमे लेई आवज्यो ।
मत किण बात हुओ आखता, रखे लगावो काई खता ॥३३॥
इम कहीनें आगो संचर्यो, पालखिया पूठें परवर्यो ।
राघव व्यास जे बुद्धिनिधान, स्वामिद्रोह थी नाठी सान ॥३४॥
छलबल एन लिखाणी काइ, लूंण हरांम तणो परभाइ ।
अस्पति दीठो आवत वली, वादल वात करो निरमली ॥३५॥
साहिब साभल मुझ वीनती, पदमणि एम कहें गुणवती ।
आवुं छुं हजरत तुम गेह, आलिम धरज्यो अधिक सनेह ॥३६॥

पण मोहागण मुकत्त करें, एह अरज मन माहें धरें ।
एम सुणि ने आलिम कहें, पदमणि आपें आदर लहें ॥३७॥
पदमणि नारि तणा नख एक, तिण सरीखी नहि नारी एक ।
पदमणि कारण म्हें हठ कियो, वयण लोपि रांणो ग्रहि लियो ३८
मुझ मन खात अछें तिण तणी, मानीती करस्युं पदमणि ।
अवर हुरम करसी पग सेव, पदमण कुं पधरावो हेव ॥३९॥
एम कही वलि बादल भणी, परिवल दीधी पहिरावणी ।
ते लेइ बादल आवियो, पदमणि नारी वधावियो ॥४०॥
सुभटा नें सहु भाखी वात, जई मेलावस्युं घातो घात ।
तुम म्हुं बाह रहेज्यो इहा, वात रिखे को [इ] काढो किहां॥४१॥
आयो बादल असि पर चढी, नव नव वात कहें मन घडी ।
होठें बुद्धि वसें तेहनें, कसी उणारथ छें जेहनें ॥४२॥
वात कहंता लागें वार, फिरि बादल आयो तिणवार ।
परगट आण धरी पालखी, आलिम देखें सहु सारिखी ॥४३॥
बादल विंच विच में वलि फिरें, पदमणि [नें] मिस वातां करें ।
रह्यो पहर दिन एक पाछलो, लसकर दूर गयो आगलो ॥४४॥
किला तणी जब वेलां भई, तब तिहां बादल बोलें सही ।
हजरत एम कहें पदमनी, मुझ ऊभा थई वेला घणी ॥४५॥
म्हारी एक सुणो अरदाश, जिम हुं आवुं तुम आवास ।
रतनसेन मुंको इकवार, तिससें वात करुं दोय च्यार ॥४६॥
ले राजा आवु दरबार, जेम रहें कुलनो आचार ।
आलम बोले सुण बादला, पदमनि बोल कहया ते भला ॥४७॥

यह बोलें हम होवें खमी, पदमणि न्याय कहीजें इसी ।
हुकम दियो आलम ततकाल, छोड्यो रतनसेन भूपाल ।।४८।।
वादल माहें छुडावण गयो, राणो रूस अपूठो थयो ।
फिटरे वाद ल] मुह म दिखाल, सबल लगाबी मुझनें गाल ।।४६।।
वेंरी वेंर घणो तें कियो, पदमणि माटें मोनें लियो ।
खत्रीवट माहें नाखी खेह, खत्री निसत थया सवी गेह ।।५०।।

कवित्त

फिट वादल कहे राव, वाच चूको हिंदवाणह ।
खत्री ध्रम लजीयो, मिट्यो सिड मान गुमानह ।
साम ध्रम लोपीयो, लूण तामीर न कीनी ।
जीवत शसलें खाल, नारी असपति कुं दीनी ।
कहा करुं म्हें परवस पड्यो, वाच लोप आलिम भयो ।
सत छोड कितो अव जीवहे, तवहीं नीर उतर गयो ।।५१।।
कहें वादल सुनि राव, वाच हिंदवाण न चुक्कहीं ।
खत्री ध्रम ऊजलो, सुहड धीरज न मुक्कही ।।
साम ध्रम रक्खहें, जस सवहीं कु प्यारो ।
भुगतिहो गढ चितोड, इला कीरत विसतारो ।।
मकर [हो] सेव असपत्तरी, असपति साहिली मेलियो ।
महिमांन मांन दीजें सदा, करहुं आद पुव्व कह्यो ।।५२।।

दूहा

महिल अगनीत गढमधर, ग्रही तस राज गहिल्ल ।
उस आलम कित हीर मुं, सव विध होय सहल्ल ।। ५३ ।।

राख रजा सिर राम की, धरि मन उमग उछाह।
राज पधारो चित्रगढ़, सब विध होसी [स] लाह ॥५४॥

कवित्त जात आदि अक्खरो

राव करहुं मन ग्यान, जवनपती हठ हमीरह।
गुमर किए रस नहीं, ढ़लकी अजलियह नीरह ॥
परा लेखयो कछू धात, निम्यो निस छति रोस छंडिइं।
डाव विन घाव होवें नही, वाचहुं पढ़मख्खर हीइं ॥५५॥

चौपाई

भूप प्रीछ्र उठ्यो तिणवार, असपति बोलें चित्त अपार।
पदमणि ने मिल आवो जाय, पीछें सीख दीए हित भाय ॥५६॥
राजा चाल्यो पदमणि भणी, सुखपाला देखी घण घणी।
पेंठा मांहि जिसें पालखी, वाच सहू साची तव लखी ॥५७॥
वादल बोलें राणा सुणो, अवसर नही ए वाता तणो।
एक थकी वीजी अवगाह, गढ़ लग पहुंचो सविका मांह ॥५८॥
स्वामी थाज्यो घणु सजेत, माहें जई कीज्यो सकेत।
साचो कीनो ए सहिनाण, दीज्यो डाका जेंत निसाण ॥ ५६ ॥
रतन तुंहारें वखतें सही, मंत्र भेद पिण हुओ नही।
सामधरम नें सत परिमाण, गढ़ रहियो नें छूटो राण ॥ ६० ॥
एम सुणी राजा रंजिओ, साई सफल मनोरथ कियो।
कुसल खेम पोहंता गढ़ माह, जाणक सूरज मुक्यो राह ॥६१॥
कुसल तणा वाजा वाजिया, तव ते सुभट सहू गाजिया।
नीसरिया नव हत्था जोध, माण दुसासन वेंर विरोध ॥६२॥

राघव तणो हुओ मुख स्यांम, कूड कियो पिण न सर्यो काम
सामद्रोह पातिक परगट्यो, अकल गईनें पोरस मिट्यो ॥६३॥

साम काम समरथ अतिसूर, गोरो रावत अतिहें गरूर ।
अरीदल देखी तन उलसें, सुभट सहू मन माहें हसें ॥ ६४ ॥

सूरातन चढ़िया सिरदार, ऊँचा खग जलहल जूझार ।
दलां विभाडण दूठ दुबाह, रुक हत्था दीपें रिम राह ॥ ६५ ॥

च्यार सहस निसरिया सूर, एक एक थी अति करूर ।
आगुवाणें बादल गेह, पूठें सामंत थाट सबेह ॥ ६६ ॥

बाघट दीसें भिड घणां, सिलह टोप करी रुद्रामणा ।
धसिया छूटी ले तरवार, हलकारे लागा हलकार ॥ ६७ ॥

रे रे असपति ऊभो रहें, हिवें नासि मत जाघो वहें ।
म्हें पदमणि आणी छें जिका, तोनें हिव देखाडा तिका ॥ ६८ ॥

तोनें खांत अछें तिण तणी, पदमणि नार निहालण तणी ।
हठ हमीर जाणो तो सही, लडे अमां सु अवसर ग्रही ॥६९॥

इम कहंता भिड आया जिसें, आलिम दीठा अरियण तिसें ।
एहवी वात कहें पतिसाह, रिण रसियो उठियो रिम राह ॥७०॥

रे रे कूड कियों बादलें, हिंदू आय वाल्या माकलें ।
हलकार्या असपति निज जोध, धाया किलकी करि करि
क्रोध ॥७१॥

माहों मांह मंडांणो किलो, बोलें असपति सु बादलो ।
पातिसाह मत छाडो पाव, तेरा कूड अमीणा घाव ॥ ७२ ॥

कवित्त

सुणि वादल कहैं साह, वाह तुम बोल भलाई।
मुख मीठा दिल कूड, इहैं हींदू न कराई।
पदमण करी कबूल, तुम्हें सिरपाव दराया।
छोड़या रांण रतन्न, सवे दल दूर वलाया।
अब लडिहां खग वुलहू अकथ, काफर गुंडाई धरहुं।
हम सरिस चूक देखहुं सुतो, मुरख अण खूटी मरहुं ॥७३॥
कहैं वादल सुण साह, राह पहैंली तुम चूकें।
दे वाचा गढ़ देख, वहुर तुम राव ही रुक्के।
हम हींदू के मीर, निरख रखही कुलवट्टह।
पदमणी दे ल्यें धणी; इहे हम लाज निपट्टह।
अब करहुँ जुद्धि जूठा न कहुं, कहा रह्यो रस हम तुमह।
ग्रही खग लडहुं म धरहुं गरब, वर तस नहि अवसान इह ॥७४॥

चोपाई

आलम ताम हुआ अमवार, जोधा मुगल पठाण जुम्फार।
भिड्या खाग रिण मचियो द्रुठ, सुभट न दाखें कोई पूठ ॥७५॥
खेहाडंबर उड्यो इसो, सूरज जाणें वद्दुल्या जिस्यो।
बाण विछूटें चिहुँ दिश घणा, रुड्या नगारा सींधू तणा ॥७६॥
खडग भलक्क उ[ज्] जल धार, जांणक वि[ज्]जल घण अंधार।
संन्नाहें तूटें तरवार, जागें भाल अगनि अण पार ॥७७॥
कुंत अणी फूटें सूमरा, तूटें कालज नें फेफरा।
उडें वूर वहें रत खाल, गुंजें सी घा[म] घण असराल ॥७८॥

वहें तीर चणणाट पंखाल, झड मातो तातो वरमाल।
पडें मार गूरज गोफणी, फोजा फूटें तूटें अणी ॥७६॥
मार मार कहि वाहें लोह, रण लूथा सामत छंछोह।
खान निबाव गडू थल खाय, हजरत करें खुदाय खदाय ॥८०॥
नारद कलकी करि करि हाम, गीरध माश तणा ले ग्रास।
धड ऊपर धड ऊछल पडें, केता सामत सिर विण लडें ॥८१॥
रिण चाचर नाचें रजपूत, धुंकल माचवियो रण धूत।
धन धन कहें सूरज धीरवें, अपछर माला कंठें ठवें ॥८२॥

दूहा

उत असपति तोबा वकें, इत हलकारें राण।
तिण वेला वादल तणा, अडिया भुज असमान ॥८३॥
कुण तोलें जल सायरा, कुण ऊपाडे मेर।
वादल तो विण सामरें, (हसु) कुण झालें समसेर ॥८४॥
दला विभाडण साहरा, ऊपाडे गज दंत।
तु (जू) झ भुजा गाजण तणा, वलिहारी बलवंत ॥८५॥
जावें असपति रीझियो, सुहडा खमी सवाव।
खागें खान निवाव ने, ते उतारी आब ॥८६॥
हसियो आलम जाम सुणि, खग खसियो खत्रि सार।
तुं वेधालक वादला, अंगद रो अवतार ॥८७॥
वावा खान निवावरा, फाटा ऊभा फेह।
वाका सुणिया जग सिरें, वाजंतें डाकेह ॥८८॥
महि डोलें सायर सुसें, प(च्) छिम ऊगें भाण।

बादल जेहा सूरमा, क्या चूकें अवसाण ॥८६॥
रिण डोहें फिर फिर खला, धडा धपावें धार।
पारीसें पिडहार ज्युं, नह भूलें मनुहार ॥६०॥
घड पति साई बींदणी, मद जोवन मयमंत।
मुझ मन परणेवा तणी, खरी विलग्गी खंत ॥६१
सुण गोरा बादल कहें, तुं सामंत सकज्ज।
तुं दल नायक हींदुआ, तुज(झ) भुंजें रिण लज्ज ॥६२॥
तु सीध चाढ़ण सूरमा, उजवालण कुलवट्ट।
तुं बांधें पतिसाह सुं पेतों डर रणवट्ट ॥६३॥
वांधे मोड महावली, बाधें असि गज गाह।
सिर तुलसी दल घालिया, डहिया खाग दुबाह ॥६४॥
केसरिया वागा किया, भुज ऊवाणे खाग।
जाणक भूखो केहरी, जुड़वा नाखैं खाग ॥६५॥
सूरज हुंत सलाम कर, वलि मुंछा वल घाल।
सु पतीसाहा सम चढ़ें, आयो रणवट जाल ॥६६॥
भरे डाण दईवान भति, राम राम मुख रट्ट।
अकल तें रण ऊरियो, माभी लोह मरद्द ॥६७॥
रुडें नगारा सिधूआ, रिण सूरातन र[स] स।
मढ आयो गोरो मरद, अडियो सीस डरस्स ॥६८॥
आवें असपति आगलें, इसो उडायो खाग।
पायर पाखल पाधरें, जांणें हणुमत वाग ॥६६॥

हाका करि किलकी हसें, डसें रिमा जिम नाग।
तिण वेला त्रिजडा हथो, करें पकंदा घाव ॥२८००॥

आडा खल भाजें अनड, फुरलंतो गज भार।
आयो असपति ऊपरें, मुख कहतो हुँसियार ॥२८०१॥

तोलें खग तारा लगें, गोरे कीधो घाव।
असपति जीव ऊवेलंता, पाछा दीधा पाव ॥२८०२॥

कहें वादल गोरा सुणो, सकजा एक सुभाव।
आयोआम गिया पछें, कुण राणों कुण राव ॥२८०३॥

तोनें रिण वाही तणी, वदसी जगत विसेख।
दल्लीसर परमेसरो, त्या सु केहो तेख ॥२८०४॥

घण घट नेंजा घाव करि, लडें भडें लें बाह।
गोरो रणवट पोढ़ियो, वाही वाह ए लोह ॥२८०५॥

खमा खमा कहि अपछरा, डर उडें सीर हाथ।
गिलें डए भग ग्रीध ज्यु, जाव वहें दिन नाथ ॥२८०६॥

आवें वादल ऊपरें, करे हथेली छाह।
दल पतिसाही डोलियां, भागी तुज भूजाह ॥२८०७॥

अइयो सूरातम तणा, अजे अथमाण अथाग।
भुज त्रे वे रुंधा भला, इक मुंछा इक खाग ॥८॥

मुख देखे काका तणो, वार्दे मुंछा वाल।
वादल आयो साह सु, चोरंग वर्धे चाल ॥९॥

हलकारें भिड आपणां, वाकारें रिम थाट।
पडिया कोसें त्रीस पर, झाडंतो खग झाट ॥१०॥

लोह छकारें ऊडवें, इसा लगाया हाथ।
पाधर खेत पछाडियो, सारो असपति साथ ॥११॥
रह चवीं सारा कद [सु]; ऊभो असपति आप।
जा नवि खेस्यो वादलें, करी गुजाहल ताख ॥१२॥
खल गलिया वादल खगें, पूर हसम खुरसांण।
सामंद जाणउ तान सुत, पीधा चळू प्रमाण ॥१३॥
पकड्यो असपति वादलें, एकल म [ल्] ल अबीह।
मेगल हदा मग दलें, गाल वजावें सीह ॥१४॥
फिर छोडें पकडें फिरें, नाच नचावें तेम।
रस लागो रामत रमें, भोला बालक जेम ॥१५॥

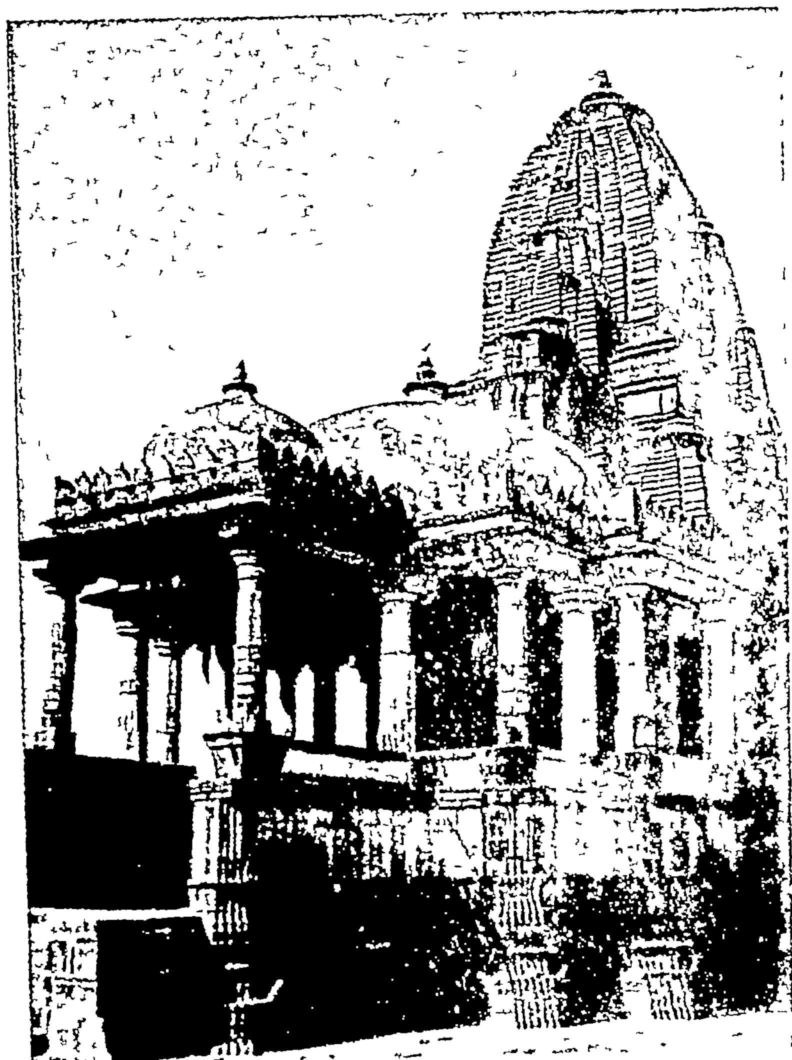
कवित्त

सुण वादल कहें साह, राह हीदू ध्रम रख्खो।
सामधरम सुरतांन, अकल उसताद परख्खो ॥
तुं सामंत सकज्जह, वुद्धि बल अकल दुबाहो।
तुं ही ढाल हींदवाण, तुं ही रावत खग वाहो ॥
गोरिल सरगि अपछर वरी, तुम दुनी मे यस सुनहुं।
पतिसाही दला लाइछरा, बहू भई जव वस करहुं ॥१६॥

दूहा

ध्रम राख्यो राख्यो घणी, र(ख्)खी पदमणि पूठ [मे]।
अव रख्खहुं मेरी अदब, कहें आलिम सुण दूठ ॥१७॥
मेरे लाल [तू] भूमें वरो, ए दुनियाण एकत्त।
भातीजें काको भिडें, दीधो न्याव विगत्त ॥१८॥

पद्मिनी चरित्र चौपई—



मीरा मन्दिर, चित्तौड़

[फोटो—सार्वजनिक संपर्क विभाग-राजस्थान]

चौपाई

ऊभो रतनसेन राजान, दीठो जुद्ध महा असमान ।
जोया वादल गोरा तणा, हाथ महावल अरिगंजणा ॥१६॥
पदमणि ऊभी द्ये आसीस, जीवो वादल कोड वरीस ।
सामधरम साचव्यो सवेह, राखी वादल खत्रीवट रेह ॥२०॥
गोरो रावत रण में रह्यो, आलम सेन सावें खग लह्यो ।
लूटाणो लसकर जूजुवो, साका वादित भारथ हुवो ॥२१॥
पातिसाह ग्राहें मु किओ, एह वले मोटो जस लिओ ।
साह कहै साभल वादला, किया पवाडा तें ही भला ॥२२॥
दीवत दान दियो म्हो भणी, किसी करा हिवें कीरत घणी ।
आलिम नीसर गयो एकलो, गोरो वादल जीत्यो किलो ॥२३॥

दूहा

करि कागल वादल सची, हजरत राखी पास ।
इक तेरें मुख मुंछहें, अइ हींदू स्यावास ॥२४॥
पातसाह दिल्ली गए, भई दुनी सरवात ।
वादल भिड रण सोभियो, उवारी अखीयात ॥२५॥
हसम खजीनो लुटियो, ग्रह मु क्यो पतिसाह ।
वोल्यो तु निरवाहियो, अइयो भीचं दुवाह ॥२६॥
उघाड्यो चित्रकोट गढ, सामा आया राण ।
मलियो वादल रतनसी, करें वखांण खुमांण ॥ २७ ॥
सामेलो आया सकल, घुरिया जेंत निसांण ।
वधायो गज मोतीया, गुनियन करें वखांन ॥२८॥

चौपाई

महा महोछव माहैं लियो, अरध राज वादल नें दियो ।
पदमणि नार लिया वारणा, राख्या पण अम दंपति तणा ॥२६॥
इण पर आव्यो महिल मझार, वंदीजन बोलें जयकार ।
आवी लागो माता पाय, मात आसीस दिइं असवाय ॥३०॥
निज नारी ओढ़ी नवी घाट, सझि शृंगार कर तिलक ललाट ।
अरघ अभोखों देंई करी, मोती थाल भरी संचरी ॥३१॥
कीधा विविध वधावा घणा, कुसले खेमें आया तणा ।
तव गोरिल री अस्त्री कहैं, काको किण विध रण में रहैं ॥३२॥
कहो किसी पर वाह्या हाथ, केता मार्या आलम साथ ।
वादल बोलें माता सुणो, किसु वखाण काकाजी तणो ॥३३॥
असपति पिण पग पाछा दिया, जेंत तणा वाजा वाजिया ।
वीछाया सब खान निबाब, के उसीसें कें पयताव ॥३४॥
ऊपर गोरो भिड पोढ़ियो, अवर सुजस तणो ओढियो ।
तन विखरायो तिल होय, मुंछा मरट न मिटियो तोह ॥३५॥
कुल उजवाल्यो गोरें आज, सुहडां सीधा चढ़ावि राज ।
रिण खेती गोरें भोगथी, में तो सिलो कियो पूठथी ॥३६॥
घटा वींदणी गोरें वरी, वाधे मोड महा रिण करी ।
में तो जानी थकेह भुंत्रिया, विरुद भुजा छें गोरल लिया ॥३७॥

कुंडलियो

गोरल त्रिय इम उ [च्] चरें, सुण वादल समर [न्] थ ।
पिउ मुझ रिण में झूझतें, किम करि वाह्या ह [त्] थ ॥

किम करि वाह्या हत्थ, ब [त्] थ भरि सुहड पिछाड़्या ।
भागा हय गय थट्ट, जाए नेंजें असि चाढ़्या ।
गिलिया खान निबाब, सीस असपति झोरिल ।
कहें वादल सुण मात, रिण ही इम जुझ्या गोरिल ॥३८॥

चौपाई

इम सुणि नें कामनी तेह, विकसित वदन हुई ससनेह ।
रोम रोम सूरिम ऊछली, मुलकी महिला बोलें वली ॥३६॥
साबल वेटा हिवें वादला, ठाकुर दोहिला हुवें एकला ।
पछें पडें छें छेटी घणी, रीस करेसी मारो धणी ॥४०॥
वहिली होय म लावो वार, भेला होय काकी भरतार ।
एम सुणी वादल हरखियो, धन धन मात तुमारो हियो ॥ ४१ ॥
दान पुन्य तव बहुला करी, करि शृंगार चढ़ी भल तुरी ।
श्रीफल लेई हाथें धरी, जैं जैं राम कही नीसरी ॥ ४२ ॥
ढ़ोल घुरो गूजें चीतोड, वाध्यो सुजस तणो सिर मोड ।
इण पर आसा उछालती, आवी खेतें रिण मलपती ॥ ४३ ॥
पूजी गवरी करी सनांन, पहिरी धवल वस्त्र परिधान ।
खमा खमा कहें धन भरतार, रिण समंद हिलोलण हार ॥४४॥
खट मंदिर पिय खोलें धरी, अगनिसरण कीधो सुंदरी ।
पति पासें जई पोहती विसें, अरध सिखासण दीधो तिसें ॥४५॥
अमरापुर वसीया उछाह, जय जयकार हुओ जग माह ।
चंद सूरज वे कीधा साख, गढ चीतोड दल्ली दल साख ॥४६॥

करी मृतक्रत देही संसकार, आयो वादल निज घर बार।
रजपूता ए रीत सदाइ, मरणैं मंगल हरखित थाइ ॥ ४७ ॥

दूहा

रिण रहचिया म रोय, रोए रण भाजे गया।
मरणें मंगल होय, इण घर आगा ही लगें ॥४८॥

चौपाई

विरूद बोलावें वादल घणी, सांम सनाह सुहडाई तणी।
इसो न को वलि हूओ सूर, कमधज वंश चढ़ायो नूर ॥४६॥
पदमणि राख राण राखियो, गढ़रो भार भुजें जालियो[1]।
रिण भिडता राखावी रेह, वसो वसो[2] वादल गुण गेह ॥५०॥

कवित्त

जय वादल जयवंत, विरुद्द वादल अरिगंजण।
संकट सांमि सनाह, भिडें पतिसाहां भंजण।
मलण मलींका माण, हणण हाथी मय मत्तह।
सांम वंद छोडणो, दियण वहिनी अहि वंतह।
पदमणी नार श्री मुख कहें, इस्यो अवर न कोई हुअ।
आरती उतारें वर तणी, जें वादल जेंवंत तुह ॥५१॥
कहें मात वादला, भलें मुझ उअर उपन्नो।
कुल दीपक कुल तिलक, रंक घर रयण संपन्नो।
ग्रहि मोखण पतिसाह, रुक बल गंजण अरी दल।
जेंत हत्थ जग जेठ, भुज वलिहार भुज बल।

१ लाजियो २ नमो नमो

मुख मुंछ तुम्फ कुल लज्ज तुही, सारी वेल किया भडां ।
चीतोड मोड वाध्यो सिरें, दल्लीपति छाडें तडा ॥५२॥
राम तणें भिड्या जिम हणुमांन, तेम वादल रतनसी राण ।
पदमणि सत सीता सारिखी, वादल भिड लंघाया रखी ॥५३॥
सेवा कीधी अपछर तणी, तिण सोभा वाधी घण घणी ।
करी दिखावें इसीक कोय, अवरा सुहडा आदर होय ॥५४॥
गोरा वादल नी ए कथा, कही सुणी परंपर यथा ।
साभलता मन वंछित फलें, राज रिद्ध ल [छ] मी वहु मिलें ॥५५॥
सामधरम सापुरसा होय, सील दृढ कुलवंती जोय ।
हींदू ध्रम सत परिमाण, वाज्या सुज [स] तणा नीसांण ॥५६॥

इति श्री चित्रकोटाधिपति वापा खुमांणान्वये राणा रतनसेन पदमणी गोरा वादल संवंध किंचित् पूर्वोक्त किंचित ग्रंथाधिकारेण पं० दोलतविजयग विरचितोऽयं अधिकार सपूर्णम्

इति श्री पष्ठ खंड सम्पूर्णम्

जटमल नाहर कृत

गोरा बादल चउपई

सोरठा

चरण कमल चितलाय, कें समरूँ श्री शारदा ;
मुझ अख्खर दे माय, कहिस कथा चित लायकै ॥ १ ॥
जंबूदीप-मझार, भरतखंड खंडा-सिरै ,
नगर भलो इक सार, गढचितौड़ है विखम अत ॥ २ ॥
रतनसेन जिहां राय, पाय कमल सेवै सुभट ,
सूरवीर सुखदाय, राजपूत रजकौ धणी ॥ ३ ॥
चतुर पुरस चहुवाँन, दाँन माँन दूनूँ दियै ,
मंगत जिन को माँन, आवै मंगत दूर तै ॥ ४ ॥

कवित्त

एक दिवस नृप-पास आस करि मंगत आए,
च्यार चतुर वेताल, दृष्टि भूपति दिखलाए।
दे आसिका-असीस, वीस दस विरद सुनाए,
नरपति पूछत भट्ट, कौन देसा तै आए।
हम आए सिंघलदीप तै, कीरति सुनिकर तुम-तणी,
राजा रतनसेन चहुवाँण है, गढ चितोड़ केरो धणी ॥ ५ ॥

राय देय सनमाँन, पास अपने बैठाये,
कहो दीप की बात, जहाँ तें तुम चल आये।
क्या-क्या उपजत उहा, दीप सिंघल है कैसा,
कहै भाट सुनो राय, कहूँ देख्या है जैसा।
उदध-पार अदभुत नगर, सोभा कहि न सकू घणी,
ऐरापति उपजत उहाँ, अवर नार है पदमणी ॥ ६ ॥

दूहा

पदमावति नारी कसी, कहो! भाटजी, वात,
भाट कहै, नरपति सुणो, च्यार रमण की जात ॥ ७ ॥
इक चित्रनि, इक हस्तनी, एक सखनी नार,
उत्तम त्रीया पदमनी, तस गुण अपरंपार ॥ ८ ॥

चौपई

कहो भाट, पदमावति-लख्खन, गुणी सरस तुम वड़े विचख्खन,
रंग-रूप-गुण-गति-मति दाखो, भाखा सकल मधुर-सुर भाखो।९।

कवित्त

पदमावति मुखचंद, पद्म-सुर वास ज आवै,
भमर भमत चिहुं फेर, देख सुर असुर लुभावै।
अंगुल इकसत आठ, ऊँच सा सुन्दर नारी,
पहुली सत्तावीस, ईस चित लाय सँवारी।
म्रगनैण, वैण कोकिल सरस, केहरि-लंकी कामनी,
अधर लाल, हीरा दसन, भुँह धनुप, गय गामनी ॥ १० ॥

दूहा

पद्मावत के गुण सुणे, चढी चूँप चित राय,
विन देख्यां पद्मावती, जनम अख्यारथ जाय ॥ ११ ॥

चौपई

वसी चित्त-अंतर पद्मावत, निसा नींद दिन अन्न न भावत,
इम रहताँ इक जोगी आयो, राजद्वार परि धूही पायो ॥ १२ ॥

कवित्त

सिद्ध बड़ो जोगेंद्र, देख राजा चित हरस्यौ,
ज्यूँ सरोज सर माँझि, सूर देखत ही विकस्यौ।
भगत-भाव बहु करी, जुगत कर जोग संतोख्यौ,
निसा वैठ नृप पासि, पत्र पंचामृत पोख्यौ।
संतुष्ट होइ रावल कहै, मांग जु तुझ, कछु चाहिये,
राजा रतनसेन चहुवाँण कह, इक पद्मण मोहि व्याहिये ॥१३॥
कहै ताम जोगेंद्र, दीप सिंघल पद्मावत,
राज पाट तजि चलौ, भूप ! जे तुझ मन भावत।
कहै राय, करि कृपा, वेग यहु कारज कीजै
जो कुछ कहो सो नाथ, साथ सामग्री लीजै।
मृग त्वचा विछाई सिद्ध तब, पढ़ो मंत्र तव वैठ करि,
उड गये सिंघलद्वीपकों, (राजा) रतनसेन जोगेंद्र वरि ॥१४॥

दूहा

सुण रावत, जोगी कहै, करि रावल को वेस,
इक-सबदी भिख्या करो, यह मेरा उपदेस ॥ १५ ॥

कवित्त

दियो भेख' जोगेंद्र, कान मुद्रा पहिराई,
कंथा सिंगी गले, अग बभूत चढाई।
कपट जटा, करदंड, मोरपॅख विइभण झोलै,
वज्र कछोटो पहिर, अलख अगचर मुख बोलै,
कर-पंकज पात्र अनूप ले, राज द्वार जब आवियो,
नृप सुता निरख पदमावती, तब सु राज मुरझाइयो ॥ १६ ॥

दूहा

मन मोह्यो पदमावती, देख रूप अति राइ,
कहै सखी सुं नीर लै, रावल छंट उठाइ ॥ १७ ॥

कवित्त

छंट उठायो जोग आय, तिहाँ सखी विचख्खण,
रावल-रूप अनूप, अंग बत्तीसे लख्खण।
तब पदमावति हार, तोड नवसर दी भिख्या,
मुकताफल भरि थाल, नाथ पै लाई सिख्या।
कर जोड़ि गुरू आगें धरे, देख नाथ अैसे कहै,
जो जिस लायक होय सो, तैसी ही भिख्या लहे ॥१८॥
चल्यौ आप जोगेंद्र, चलित राजा-गृह आयो,
देख राय हरखियौ, सीस ले चरण लगायो।
आज पवित्र भया गेह, नेह धरि गरू पधारे,
आज सफल मुझकाज, वड़े है भाग हमारे।

तब सुनि आई पदमावती, गुरू चरण ले सिर धरे,
आसीस देह रावल कहै, पुत्री तुम कारज सरै ॥१६॥
कहे ताँम राजान, पदम पुत्री सुखदायक,
वर प्रापत अब भई, नहीं कोई वर लायक।
हूं ल्यायो वर, राय, तोहि पुत्री के कारण,
गढ़-चितोड़-राजान, दुष्ट-दुरजन-विड्डारण।
राजा रतनसेन चहुवाण है, तिस समवड़ नहि अवर नर,
परणाय देह पदमावती, मान वचन तू सत्तकर ॥२०॥
गुरू-वचन राजान, माँन पुत्री परणाई,
रतनसेन के साथ, भई है भली सगाई।
दीन्हो बहु दायजो, लाल मुकताफल, हीरे,
पाटवर, पटकूल, थाल भर कंचन नीरे।
रावल कहै राजान को, पदमावति मुकलाइयै,
चीतोड़-लोक चिंता करै, राजा रतन चलाइयै ॥२१॥
राघव दीयो संग, वेग पदमनी चलाई,
रोवत माता भ्रात, कुंवरि कों कंठ लगाई।
उडन-खटोला चढे राय, पदमावति, जोगी,
राघव चेतन संग, उडवि आये गढ भोगी।
नीसाण बजे पंच-सबद तहाँ, गोरी मंगल गाइयो,
राजा रतनसेन पदमावती, ले चितोड़गढ़ आवियो ॥२२॥
तजी रानि सब और, राव पदमावति रातो,
रैन-दिवस रह पास, अंग आणंद मदमातो।

नेम नीर को लियो, वीन देख्याँ पद्मावत,
महा-मोह-वस भयो, रहै अैसी विध रावत ।
जब निसा रही इक-दोय घड़ी, तव सिकार-उद्दम कियो,
राजा रतनसेन असवार हुय, राघव चेतन सँग लियो ॥२३॥

दूहा

वन के भीतर खेलताँ, तृखा वियापी तेम,
विन देख्याँ पद्मावती, जल पीवण को नेम ॥२४॥

कवित्त

तव राघव चित लाय, सरस पूतली सँवारी,
त्रिपुरा की कर कृपा, रूप पद्मावति नारी ।
भेख भाव वहु करी, जंध पर तील वनाया,
देख राय भयो रोस, पाप मन भीतर लाया ।
विना रम्याँ पद्मावती, तील स क्यूकर जाणियो,
मारूँ न विप्र, काढ़ू नगर, यह सुभाव मन आणियो ॥२५॥
घरि आयो राजान, विप्रकु दिया निकारा,
राघव तिसही समै, वेस वैरागी धारा ।
भगवें वेस सरीर, नीर भर लिया कमंडल,
जंत्र वजावै जुगत, जोग-तत रहै अखंडल ।
दिल्ली सु आय प्रापत भयो, रह उद्यान वन खंड सिर,
पातसाह तिहा अलावदी, करै राज सिर नर सुथिर ॥२६॥
एक दिवस सीकार साह खेलत तिहाँ आयो,
राघव तिसही समै जुगत कर जंत्र वजायो ।

म्रग सब तज वनवास पास राघव के आए,
सुणे राग धर काँन साह म्रग कहूँ न पाए।
आयो सु तहाँ अल्लावदी, देख चरित अचरज भयो;
उतर तुरंग से साह तब, राघव के आगे गयो ॥२७॥

दूहा

रीझ्यौ साह सुराग सुनि, राघव को कह ताँम,
दिलिपति हम तुम सों कहैं, चलो हमारे धाम ॥२८॥
हम वैरागी, तुम ग्रही, अर प्रथवी पतिसाह,
हम तुम ऐसा संग है, जैसा चंद कु राह ॥२९॥
हठ कीनो पतिसाह तब, राघव आन्यौ गेह,
राग रंग रीझ्यौ अधिक, दिन दिन अधिक सनेह ॥३०॥

कवित्त

एक दिवस नर काइ, ससा जीवत ग्रह ल्यायो,
पातिसाह ले तब्ब, गोद ऊपर बैठायो।
ता पर फेरै हाथ, अधिक कोमल रोमावल,
यातैं कोमल कछु, कहो राघव गुण-रावल।
तब हाथ फेर राघव कहै, यातैं कोमल सहस गुण,
पदमावति-देह, विप्र उचरै, पातसाह धरि कान सुण ॥३१॥

दूहा

व्यास बुलाए अलावदी, पूछत बात प्रभात,
सास्त्र विधि जाणो सकल, त्रियकी कितनी जात ॥३२॥

राघव कहै नरिंद सुन, त्रीय जाति है च्यार,
चित्रन हस्तन संखनी, पदमनि रूप अपार ॥३३॥

(अथ पदमनी वर्णनम्)

पदमनि के परस्वेद सें, कसतूरी की वास,
कमलगंध मुख तें चलै, भमर तजत नहिं पास ॥३४॥

कवित्त

पदमगंध पदमनी, भमर चहुंफेर भमत अत,
चद वदन, चतुरंग, अंग चंदन सो वासत।
सेत, स्याम अरु अरन, नयन-राजीव विराजत,
कीर चुंच नासिका, रूप रंभादिक लाजत।
गुणवत दंत दाडिम कुली, अधर लाल, हीरा दसन,
आहार पान कोमल अधिक, रस सिंगार नव सत वसन ॥३५॥
पान हुते पातरी, पेम-पूरण सू लाजत,
भुज म्रणाल सुविसाल, चाल हंसागति चालत।
चंपावरण सुचंग, सूर ऊजासी भालै,
पदम चरण तल रहै, निरख सुरनर मुनि भालै।
हर लंक, अग चंदन-वरन, नार सकल-सिर मुगटमणि,
अल्लावदीन सुरताँन सुण, पदमन लच्छन एह भणि ॥३६॥

(अथ चित्रणी वर्णनम्)

चपल चित्त चित्रणी, चपल अति चंचल नारी,
कंवल-नंन कटि भीन, वेण जू नागन कारी।

पीन पयोहर कठिन, वचन अमृत मुख बोलै,
जंघा कदली-खंभ, गिडत गैवर गति डोलै।
संभोग-रीत जाँनत सकल, नित सिंगार-भीनी रहै
अल्लावदीन सुलतान सुन, कवि चित्रन-लच्छन कहै ॥३७॥

(*अथ हस्तनी वर्णनन्*)

हेत वहुत हस्तनी, केस अति कुटिल विराजत,
द्रिग देखत मृग नैन, चपल अति खंजन लाजत।
कनकलता कामनी, बीज दाड़िम दसनावत,
पहुप वेस पहरंत, कंत अति हेत सुहावत।
अति चतुर, कुच्च कंचन कलस, काम केलि कामिन करै,
अल्लावदीन सुलतान सुण, ए लच्छन हस्तन धरै ॥३८॥

(*अथ सखनी वर्णनम्*)

जटा जूट जोखता, वदन विकराल विकल अति,
सुकर देह, सरोस, स्वाँन जूं सदा घुरक्कति।
गर्दभ-गति, गुनहीन, परै ढरि पीन पयोहर,
मंछ-गंध, तन मलन, चुल्ह समतूल भगंदर।
अति घोर निद्र, आलस अधिक, अति अहार, गज अंखनी,
अल्लावदीन सुलतान सुण, ए लच्छन त्रिय संखनी ॥३९॥

श्लोक

पद्मिनी पद्म मध्येषु, कोटि मध्येपु चित्रणी,
हस्तनी सहस्र मध्येपु, वर्त्तमानेपु संखनी ॥४०॥

पद्मिनी पान राचंति, मान राचंति चित्रणी,
हस्तनी हास राचंति, कलह राचंति संखनी ॥४१॥
पद्मिनी पद्म गंधेन, मद गंधेन चित्रणी,
हस्तनी पुहप गंधेन, मच्छ गंधेन संखणी ॥४२॥
पद्मिनी पोहर-निद्रा च, द्वै पोहर निद्रा च हस्तनी,
चित्रनी चमक निद्रा च, अघोर निद्रा च संखनी ॥४३॥

(अथ पुरप जात च्यार वर्णनम्)

दूहा

अथ सिसा लखण

मूख सकोमल, तन, वचन, सीलवत, सुर ग्याँन,
रति विनोद अति रुच नहीं, ससा करत वहु साँन ॥४४॥

अथ मृग लछन

मधुर-वचन, मृग मध्य-तन, चपल वुद्धि अति भीर,
चतुर, साध, अति हसत मुख, कामी, कनक-सरीर ॥४५॥

अथ वृपभ

वृपभ जात भारी पुरुप, दाता, क्रूर-सुभाव,
कपटी कछ लंपट हठी, काम केल वहु चाव ॥४६॥

अथ तुरग

तन दीरघ दीरघ चरन, दीरघ नख सिख अंग,
सुभर-तरुनि-सँग रति-रवन, आलस अधिक तुरंग ॥ ४७ ॥

कवित्त

ससिक पुरुष-संयोग, नारि पद्मावति लोडै,
मृग नर सुं चित्रणी, प्रेम पूरण सूं जोड़ै।
वृषभ पुरुष हस्तनी, भोग अत ही सुख पावै,
अश्व पुरुष संयोग, नार संखनी सुहावै।
मृग ससिक वृषभ अरु अश्व पुनि, जाति च्यारि पुरुषा तणी,
अल्लावदीन सुरताण, सुणि, जात च्यार नारी तणी ॥ ४८ ॥

दूहा

नारि जाति सुण पातिसाह, रावव लियो बुलाय,
दोय सहस मुझ हुरम है, देखि महल में जाय ॥ ४६ ॥
राघव कहै नरिंद सुनि, गरमहल में न जाय,
छाया देखू तेल में, नारी देऊँ बताय ॥ ५० ॥

कवित्त

हुकम कियो पतिसाह, नारि सिंगार बनावहु,
तेल-कुंड भर धरो, आय दीदार दिखावहु।
हुरमा सकल निहार, तवै राघव यूं भाखै,
हंस गमन, मृग नैन, रूप रभा कों राखै।
चित्रन, हस्तन, संखनी, पातसाहजादी घणी,
सरस त्रिया में सुन्दरी, नहीं साह घर पदमणी ॥ ५१ ॥
कहै ताम सुलतान, वेग पदमनी वतावहु,
जहाँ होइ तहाँ कहो, जो कछु मागो सो पावहु।

पदमन सिंघलदीप, उदध-पै-पार, पयंपै,
देख समुद्र, सुलतान, हिया कायर का कंपै।
यू सुनवि चढ्यौ सुलताँन, तव आय उदध ऊपर पड्यौ,
पदमनी कहाँ राघव कहो, पातसाह अत हठ चढ्यो ॥ ५२ ॥

सोरठा

राघव लह प्रस्ताव, पातसाहपै यूं जपै।
पदमनि नैड़ी ठाँव, रतनसेन चहुवाणपै ॥ ५३ ॥

दूहा

सुणवि चढ्यौ सुलताँन तब, चलियो गढ चीतोड़।
दिया दमामा दिल्लिपत, भई राय पर दोड़ ॥ ५४ ॥
काँपे सगले राण, चिहूँ चक्क खलभल भई।
खुर-रज छायो भाण, चोट नगारै जव दई ॥ ५५ ॥

छद जात रेसालू

चढे चिहूँ दिसि साह के दल, धरै धीरज कौन ? ।
अभिमान-आणंद अंग उपजौ, गिणै लगन न सौंन ॥ ५६ ॥
असवार त्रय लख साथ अदभुत, पाखरे ज तुरंग।
ताजी स तुरकी औ अराकी, सवज नीले रंग ॥ ५७ ॥
कम्मेत, काले, हासिले, सामुद्र, अर तवरेस।
अवलक, सुजॉम, सुवाहिरे, सवज नीले नेस ॥ ५८ ॥
सारंग, केहर अरु सरौजी, भले पंच कल्याण।
नाचंत पातर ज्यूं तुरंगम, रतन-जड़ित पलाँण ॥ ५९ ॥

लगाम सोवन मुक्ख सोहै, जेर बंध सु पाट।
अव रेसमी कसि तग ताणे, लटकणा के थाट ॥ ६० ॥
गजगाह घूघरमाल चमकै, तबल बाज वणाव।
कलंगी भली जरकसी पाखर, भलौ परचौ भाव ॥ ६१ ॥
हलकै पचावन साथ हाथी, ढलक नेजा ढाल।
अति घटा सावण मास जैसी, झरै मद परनाल ॥ ६२ ॥
वग-क्रांति कांति सपेद सुदर, गाजते गजराज।
पहिराय पाखर साह राखे, फोज आगे साज ॥ ६३ ॥
रथ अर पयादे अवर असवार, गनि सकै कह कोण।
उमड़ी चली आतस्सबाजी, खलभले त्रय भौण ॥ ६४ ॥
डेरा पडै दस कोस ताँई, करै नाहि मुकाम।
आइकै गढ़ चीतोड उतरे, दिया डेरा ताम ॥ ६५ ॥
ताणे तहाँ पंचरंग तबू, फरहरे नीसाँण।
फूले पलास वसत आगम, वदे कविजन वॉण ॥ ६६ ॥

दूहा

गढ-रोहौ करकै रह्यो, अलावदीन सुलतान।
रतनसेन मानै नहीं, चलै गढनसू प्रॉन ॥ ६७ ॥
अंब लगाये ठौर तिहँ, फल पाके तब जान।
वारा वरस बैठो रहौ, अलावदीन सुलतान ॥ ६८ ॥

कवित्त

कहै ताम सुलतान, कह्यो रावत्र क्या कीजै ?,
गढ़ चितोड़ है विषम, जोर तें कबहु न लीजै।

राघव कहै, सुलताँन, सुनो इक फंद करीजै,
उठाइयै मूसाफ, जेण कर राय पतीजै।
भेज्यो खवास सुलतान तव, रतनसेन-द्वारै गयौ,
ले हुकम-राय दरवाँन तव, खोलि प्रोलि भीतर लियौ ॥६९॥

कहै ताम सुलताँन, मान तू वचन हमारा,
कहै फेर सुलताँन, करूं तुझ सात हजारा।
वहिन करूं पदमनी, तुझै भाई कर थप्पूँ,
देखू गढ चीतोड़, अवर वहु देस समप्पूं।
गल कठ लाय, ठहराय कै, नाक नमण कर वाहुड़ौं,
राजा रतनसेन, सुलताँन कह, पहुर एक गढपरि चढौं ॥७०॥

मान वचन सुलताँन, आन मूसाफ उठायौ,
महमानी वहु करी, गढ्ढ सुलताँन वुलायौ।
लिये साथ उमराव, बीस दस सूर महावल,
वहुत कपट मन माँहि, गए सुलताँन वहाँ चल।
वहु भगत-भाव राजी करी, साह कहै भाई भयौ,
पदमनि दिखाव ज्यू जाँह घर, दुरजन दुख दूर गयौ ॥७१॥

दूहा

रतनसेन चहुवान कहि, वहिन करी सुलताँन।
वदन दिखावो वीर कौं, दिया साह वहु माँन ॥७२॥
चेरी एक अति सुदरी, दे अपनो सिणगार।
वदन दिखायौ साह कू, गिरयौ सीस कै भार ॥७३॥

राघव कहै, सुण पातसाह, यह पदमनी न होय।
कहा देख के तुम गिड़े, अति सुंदर है सोय ॥७४॥

कवित्त

लाख लहै ढोलियो, सवा लख लेह तुलाई,
अर्ध लाख गीदुवौ, लाख त्रय अंग लगाई।
केसर अगर कपूर, सेझ परमल पर भीनी,
ता ऊपर पदमनी, रामरस-रूप-नवीनी।
अल्लावदीन सुलताँन सुण, पदम गंध है पदमनी,
चन्द्रमा वदन, चमकंत मुख, रतनसेन-मनभावनी ॥७५॥

दूहा

बोल्यो तब, अल्लावदी, पकड़ राय कौ हाथ।
दिखलावत हो और त्रिय, कपट कियो मुझ साथ ॥७६॥

कवित्त

कहै ताम सुलतान, कहो पदमन्न-प्रति ऐसो,
मुख दीखावो वेग, कपट मांड्यो है कैसो।
मुख काढ्यौ पदमनी, ताम बारीकै बाहिर,
निरख गिर्‌यौ सुलताँन, थंभ लीयौ तसु थाहर।
खिन एक संभालें आपकू, साह कहै, डेरैं चलौ,
क्या सिफत करू मैं राव की, रतनसेन भाई भलौ ॥७७॥
फिर्‌यौ ताम सुलताँन. प्रोल पहिली जव आयौ,
रतनसेन भयो साथ, लाख वकसीस दिवायौ।

चल्यौ ताँम सुलतान, प्रोल दूजी जब आयौ,
और दिये दस गड्ड, राय अति वहुत लोभायौ।
इम लेवै वगसीस, तवह कपट कर फंदियो,
राजा रतनसेन अति लोभकर, ग्रहि सुलतान सुवंधीयो ॥७८॥

सोरठा

रहे प्रोल जड़ लोक, सोर सकल गढ में भयौ।
राजा ले गयो रोक, कपट कियो सुलतान तव॥७९॥

कवित्त

सदा मरावै साह, राय कोरड़े लगावै,
कहै, देह पदमनी, जीव तव ही सुख पावै।
गढ के नीचे आँण, सहस भूपति दिखलावै,
लै राखै लटकाय, लोक सवही दुःख पावै।
मारतें राय कायर भयौ, पदमावत देऊँ सही,
भेजौ खवास मारौ न मुझ ले आवै जव लग ग्रही ॥८०॥

सोरठा

भेज्यो राय खवास, कहै, देय पदमावती।
मुझ जीवन की आस, विलम न कीजै एक खिन ॥८१॥

कुंडलियो

कह राँनी पदमावती, रतनसेन राजाँन,
नारि न दीजै आपणी, तजियै, पीव, पिराँन।

तजियै, पीव, पिराँन, और कू मारि न दीजै,
काल न छूटै कोय, सीस दै जग जस लीजै।
कलंक लगावै आपकों, मो सत खोवै जाँन,
कह रानी पदमावती, रतनसेन राजाँन ॥८२॥
पाँन लियो पदमावती, गई बादल के पास,
राखणहार न सूझही, इक बादल तोहि आस ॥ ८३ ॥
बार बरस को बादलो, हाथ ग्रहे चौगान,
ले आई पदमावती, बादल खावौ पान ॥ ८४ ॥
कह बादल सुन पदमनी, जा गोरा के पास,
पान लियो मैं सीस धर, न करि चिंत, विसवास ॥ ८५ ॥

कवित्त

भई आस, तब लियो सास, गोरा पै आई,
पड्यौ स्याँम संकडै, करो कछु अब्ब सहाई।
मंत्र कियौ मंत्रिया, नारि पदमावति दीजै,
छूटाइयै नरेस, विलम खिन एक न कीजै।
अवस तिहारे आप हूँ, ज्यूं भावें त्युँ राय करि,
वीड़ो उठाइ गोरो कहै, जाइ, बहन, अब बैठ घरि ॥ ८६ ॥

दूहा

गोरा बादल वैठ के, दिल में करै विवेक,
साह साथ कैसे लड़ाँ, लसकर अमित अनेक ॥ ८७ ॥

कवित्त

बादल बोल्यौ ताम पाँचसै डोला कीजै,
तिन में बैठे दोइ च्यार कै काँधै दीजै।
तिन में सब हथियार अश्व कोतल करि आगै,
कहे, देह पदमनी, तुरक नेड़े नहिं लागै।
कटियै बन्धन राय के भुजबल परदल गाहिजै,
दीजिय न पूठ द्रढ़ मूठ करि खग्ग साह-सिर वाहिजै॥ ८८॥

दूहा

वादल मत्र उपाइयौ, सबके आयो दाय,
याहि वात अब कीजिये, बोले राणाँ राय॥ ८६॥

कवित्त

तुरत बुलाये सुत्रहार, डोले सवराए,
तिन ऊपर मुखमली, गुलफ आछे पहिराए।
बेठाये विच सूर, सूर कै काँधै दीजै,
तिन-मह सब हथियार, जरह अर जोर न ईजै।
अँराकी साज, सवार कै, वादल मंत्र उपाइयौ,
वक्कील एक रावल मिलन, पुह सुलताँन पठाइयौ॥ ६०॥

दूहा

रावल देवत पदमनी, आज तुम्हे, सुलताँन,
भेट इसी वहु भाँति सों; खुसी भयो सुलताँन॥ ६१॥
कहै ताम अल्लावदी, सुणि वकील, चित लाय,
वेग ले आवो पदमनी, बादल सु कहो जाय॥६२॥

आयो हुकम ज साह को, बादल भयो तयार,
सुनो, रावतो, कान धर, ऐसी करियो मार ॥६३॥

कवित्त

प्रथम निकस चकडोल, तुरत चढि तुरी धसावो,
नेजा लेकर हाथ जोर, दुसमन सिर लावो।
जब नेजा तुट्टवै, तबहि तरवार उठावो,
जब तूटे तरवार, तवे तुम गुरज उड़ावो।
जब गुरज तूट धरणी पड़े, कट्टारी सनमुख लड़ो,
बादक कह हो रावताँ, स्याँम काम इतनो करो ॥६४॥

दूहा

बादल जूझन जब चल्यो, माता आई ताँम,
रे बादल तैं क्या किया, ए वालक परवाँन ॥६५॥

कवित्त

रे बादल बालक, तुंही है जीवन मेरा,
रे बादल बालक, तुझ विन जुग अंधेरा।
रे वादल बालक, तुझ विन सब जग सूना,
रे वादल बालक, तुझ विन सवहि अलूना।
तुझ विन न सूझै कछू, तूटि बाँह छाती पडै,
छुट्टंत तीर वंका तहाँ, केम साह-सनमुख लडै ॥६६॥

दूहा

माता वालक क्युं कहो, रोइ न माँग्यो ग्रास।
जो खग मारूं साह-सिर, तो कहियो सावास ॥६७॥

सीह, सिँचाणो, सापुरुष, ए लहुरे न कहाय ।
वड़े जिनावर मारि कै छिन में लेय उठाय ॥६८॥
सिंह जोन तें निकसतै, गय-घड़ दीठी जाँम ।
तुट्टवि गज मसतक लड्यौ, आइ रह्यौ महि ताँम ॥६६॥

कवित्त

वादल कहइ, सुण माय, सत्त तुझ साहस मेरा,
लड़ू साह कै साथ, करू संग्राम घणेरा ।
मारु सुभट अपार, स्याम के वधन काट्टँ,
जो सिर गयो त जाहु, सीस दे जग जस खाटूँ ।
जिम राम-काज हनुमंत कियो, मार्‍यौ रावण एक खिण,
गैवर गुडाय तोडौं तवर, साह चलाऊँ खग्ग हण ॥१००॥
वालक तो परवाँण, जाँम गैवर-घड मोडूँ,
वालक तो परवाँण, पकड पिलवाँन पछोडूँ ।
वालक तो परवाँण, स्याम के वंधन कट्टूँ,
वालक तो परवाँण, साग असवार पलट्टूँ ।
मारू तो खग्ग-साह-सिर, गयवर दलूँ, सत्य चढूँ,
जननी लजाऊँ तुज्झ कूं, जे वाग मोड़ पाछो मुडूँ ॥१०१॥

दूहा

जैसा, वादल, तैं किया, तैसा करै न कोय ।
माता जाइ आसीस दै, अब तेरी जै होय ॥१०२॥
माता जवही फिर चली, वहुवर दिवी पठाय ।
मेरो राख्यो ना रह्यौ, अब तुम राखो जाय ॥१०३॥

आयो हुकम ज साह को, बादल भयो तयार,
सुनो, रावतो, कान धर, अैसी करियो मार ॥९३॥

कवित्त

प्रथम निकस चकडोल, तुरत चढि तुरी धसावो,
नेजा लेकर हाथ जोर, दुसमन सिर लावो।
जब नेजा तुट्टवै, तबहि तरवार उठावो,
जब तूटे तरवार, तबे तुम गुरज उडावो।
जब गुरज तूट धरणी पड़े, कट्टारी सनमुख लड़ो,
बादक कह हो रावताँ, स्याँम काम इतनो करो ॥९४॥

दूहा

बादल जूझन जब चल्यो, माता आई ताँम,
रे बादल तैं क्या किया, ए बालक परवाँन ॥९५॥

कवित्त

रे बादल बालक्क, तुंही है जीवन मेरा,
रे बादल बालक, तुज्झ विन जुग अंधेरा।
रे बादल बालक्क, तुज्झ विन सब जग सूना,
रे बादल बालक्क, तुज्झ विन सबहि अलूना।
तुज्झ विन न सूझै कछू, तूटि बाँह छाती पड़ं,
छुट्टंत तीर वंका तहाँ, केम साह-सनमुख लड़ै ॥९६॥

दूहा

माता बालक क्युं कहो, रोइ न माँग्यौ ग्रास।
जो खग मारूं साह-सिर, तो कहियौ सावास ॥९७॥

सीह, सिँचाणो, सापुरुष, ए लहुरे न कहाय।
वड़े जिनावर मारि कै. छिन में लेय उठाय ॥६८॥
सिंह जोन तें निकसतै, गय-घड़ दीठी जाँम।
तुट्टवि गज मसतक लड्यौ, आइ रह्यौ महि ताँम ॥६६॥

कवित्त

बादल कह, सुण माय, सत्त तुभ्क साहस मेरा,
लड़ू साह कै साथ, करूं संग्राम घणेरा।
मारुं सुभट अपार, स्याम के बंधन काट्टूँ,
जो सिर गयो त जाहु, सीस दे जग जस खाट्टूँ।
जिम राम-काज हनुमंत कियो, मार्‍यौ रावण एक खिण,
गैवर गुडाय तोडौं तवर, साह चलाऊँ खग्ग हण ॥१००॥
बालक तो परवाँण, जाँम गैवर-घड मोडूँ,
बालक तो परवाँण, पकड़ पिलवाँन पछोड़ूँ।
बालक तो परवाँण, स्याम के बंधन कट्टूँ,
बालक तो परवाँण, साग असवार पलट्टूँ।
मारूं तो खग-साह-सिर, गयवर दलूँ, सत्य चढूँ,
जननी लजाऊँ तुज्झ कूं, जे वाग मोड पाछो मुडूँ ॥१०१॥

दूहा

जैसा, बादल, तैं किया, तैसा करै न कोय।
माता जाइ आसीस दै, अब तेरी जै होय ॥१०२॥
माता जबही फिर चली, बहुवर दिवी पठाय।
मेरो राख्यो ना रह्यौ, अब तुम राखो जाय ॥१०३॥

कवित्त

नव सत सज्झै नवल, नारि बादलपै आई,
अज हुं न रम्यौ मुझ साथ, चल्यौ तू करण लड़ाई।
अजहुँ न माँणी सेझ, घाव-नख नाहि चमंके,
कुचन चोट नहि सही, सहै क्युं साग घमंके।
छुट्टंत नाल गोला तहाँ, तुट्टवि धड़ सिर उप्परै,
नारि कहै हो राव, इम मता देखि दलतैं मुडै ॥१०४॥

दूहा

कंता रिण में पैसताँ, मत तू कायर होइ।
तुम्हे लज्ज, मुझ मेहणो, भलो न भाखै कोइ ॥१०५॥
जो मूवा तो अति भला, जो उबर्या तो राज।
बेहुँ प्रकारा हे सखी, मादल घूमै आज ॥१०६॥
कायर केरै माँस कों, गिरज न कबहुँ खाइ।
कहा डंख इन मुक्ख को, हम भी दुरगति जाइ ॥१०७॥

कवित्त

मेर चलै, ध्रू चलै, भाण जो पच्छिम ऊगै,
साधु वचन जो चलै, पंगु जो गिर लगि पूगै।
धरण गिडै धवलहर, उदध मरजादा छोडै,
अरजन चूकै बाँण, लिखत वीधाता मोड़ै।
बादल कह, री नार, सुण, एहवो जो होतव टलै,
म्हासूँ न, पूठ देऊ नहीं, बादल दलसूँ ना चलै ॥१०८॥

दूहा

त्रीया, तुझकों क्या दिऊँ, सती हुवे मुझ साथ।
जूड़ो दीनो काटकें, नारी-केरे हाथ ॥१०६॥
.. .. ।
ताके ऊपर अरगजा, भमर भमैं चिहुं फेर ॥ ११० ॥
सुखपाला सझ पाचसै, सोभा घणी करेह।
गढ़ तैं डोले उतरे, साह न पायो भेद ॥ १११ ॥
गोरा बादल दोइ जण, आप भए असवार।
आय मिले पतिसाह सूँ, किए सिलाँम तिवार ॥ ११२ ॥
ले आए संग पदमनी, दोडन लागे मीर।
लाज जु लागै हम तुमै, बहुत भया दिलगीर ॥ ११३ ॥
साह ढंढोरो फेरियो, मत कोई देखो ऊठ।
गरदन मारूं तास कौं, लूँ सब डेरा लूट ॥ ११४ ॥
भी भिर आये साह पैं, एक करैं अरदास।
रतनसेन कूँ हुकम हुइ, जाइ पदमन के पास ॥ ११५ ॥
मिल विछुरे संग पदमनी, तुमको दीजे आँन।
हुकम कियो पतसाह तब, यह विधि मन में जाँन ॥ ११६ ॥

कवित्त

बादल तिहा आवियो, राय तिहाँ बाँधण बाँध्यो,
लेइ मस्तक आपणौ, चरण ऊपर तस दीधो।
हुऔ कोप राजाँन, वैर कीधो तैं वैरी,
कीधो मूँडो काँम, नारि आणावी मेरी।

बादल ताँम हँसि बोलियो, कृपा करो साँमी, सही।
बालक रूप-पदमावती, राव नारि तेरी नहीं॥ ११७॥

दूहा

ले आए सग राव को, मन बिच हरख अपार।
डोलै भीतर पैसताँ, आगे बीच लोहार॥ ११८॥
बेड़ी काटी तुरत तिन, राय कियौ असवार।
तवल बाज तिनही समै, निकढे सुभट अपार॥ ११६॥

सोरठा

रण वाजै रणतूर मारू गावै मंगता।
उमग तिहाँ चित सूर, कायर के चित खलभले॥ १२०॥
ढमकै जगी ढोल, सुरणाई वाजै सरस।
घुरै दमामा घोर, सिंधूड़ा ढाढी चवै॥ १२१॥
साह-कटक पड्यौ सोर, ओरू की ओरू भई।
रही पदमनी ठोर, रण आये रजपूत रट॥ १२२॥
तीन सहस रजपूत. खाय अमल, वूमै खड़े।
पड़े क्रपन के पूत, राँम राँम मुख ते रटै॥ १२३॥
जुड़ आये रजपूत, भूत भये कारण भिडण।
परिहरि जोरू-पूत, खत्री आये खेत पर॥ १२४॥
हवक ग्रहे हथियार, हलके हाथी साज के।
अंबाड़ी-असवार, पातसाह आयो प्रगट॥ १२५॥
गोरा-बादल वीर, सिर फूलाँ को सेहरो।
केसर छिटके चीर, सूंग्रे-मीना सापुरल॥ १२६॥

छंद वीरारस

जुडाये जंग, उलसे अंग।
गोरा वादल, ताने तंग ॥ १२७ ॥

छद जात रसावलू

कर खंग लिय करि करि, विहंड भुजदंड दिखावै,
पाडलियै पाखरी उलट, अपने दल आवैं।
निज साँम-काज भूपत लडै, काट-काट लावै कमल,
गोरा लगावत जिहाँ खड़ग, तिहाँ पाड़ करैं दोइ धड़ ॥ १२८ ॥

छंद पद्धरी (मोतियदाम)

लडैं जब गोरल बाँवन वीर, कमाँणक चोट चलावत तीर।
न चूकत रावत एकण चोट, लड़ै, गज लोट सपोटालोट ॥१२९॥
ग्रहै बरछी जब गोरल राय, सु नागन ज्यूँ नर ऊडत खाय।
फोड़त पाखर साथ पलाँण, सु जातन का सिर सुदर माँण ।१३०।
तजै बरछी, पकडैं तरवार, घणी खुरसाण सो बीजलसार।
चलावत मीर उतारत सीस, उडावत एक चलावत वीस ॥१३१॥
तजै तरवार गुरज्ज भिडाय, दुरज्जन चोट दडव्वड़ ल्याय।
करैं चकचूर गयद-कपाल, सकै उमराव न आप सभाल ॥१३२॥
कहैं मुख मीर ज आयो काल, डरैं नर, दे हथियार संभाल।
ग्रहे त्रिन्ह दत बडे-बड़े मीर, न मारहु गोरल राव सधीर ॥१३३॥
चल्यो एक मीर ज चोट चलाय, पड्यो धर ऊपर गोरल राय।
पुकार पुकारत गोरल नाँम, करैं जब वादल ऐसो काँम ॥१३४॥

कवित्त

सुभट सुभट सुं लड़ग, पडग तिहाँ खड़ग भडाभड़,
जुड़ग-जुडग जहाँ जुड़ग, जुड़ग तहाँ खड़ग धडाधड़।
मुड़ग मुडग तहाँ मुड़ग, मुड़ग कोउ अंग न मोड़ग,
गहर गहर गज दंत, भुजे भूपति गह तोड़ग।
संग्राम राम-रावण-सुपरि, जुड़े ज्वान ऐसी जुगति,
सलसलै सेस, सायर सलल, धड़हड़ कंप्यौ धवलहरि ॥ १३५ ॥

कवित्त

चावक चंचल लाइ, उलट अपने दल आवै,
नेजा लेकर हाथ, जोर दुसमन—सिर लावै।
नाठे तवहि गयंद, तोफ भीडा फड़ पड़ियो,
मारे मुगल अपार, वाल वादल इम लड़ियो।
खुर-खेह सूर झंपत लियो, रैन-दिवस समसिर भयो,
छुटकाय वंध, चाढिय तुरिय, राय भेज घर कों दियो ॥ १३६ ॥
भारथ भयो अपार, साट सूरों के तूटे,
मारे ते रिण मांझ, जिनाँ के कालज खूटे।
वहुत मुए रजपूत, तुरक को अंत न लहिये,
चले रुधिर के खाल, तीन लोकन में कहियै।
भागत मतंग-गज-थाट जव, अपछर मंगल गाइयो,
रणजीत, राय छुटकाय कै, तव वादल घर आइयो ॥ १३७ ॥
वादल की आरती आय, पदमनी उतारै,
मुकताफल भर थाल, भरी सिर ऊपर वारै।

बहुयड दे आसीस, जीव तू कोड वरीसा,
सूरवीर वंकडा, तूझ गुण गावै ईसा।
वलिहारी तस नाव पर, जिण कत हमारो मेलियो।
गोरा गयंद बादल विकट, धन धन जननी जनमियो ॥ १३८ ॥

दूहा

बादल सुँ नारी कहै, हू वलिहारी, कंत।
तै खग मार्‍यो साह-सिर, दे चरणाँ गजदत ॥ १३६ ॥
पिय मुख पूँछत प्रेम सुँ, धन बादल भरतार।
बोल निवाह्यो आपणों, मूर जपै जयकार ॥ १४० ॥
काकी बादल सों कहै, गोरल नायो काय।
भिड मूवौ कै भाजि कै, सो मुझ बात सुणाय ॥ १४१ ॥
गोरा गिर सू धीर, भिडै न भाजें भूम तें।
मार चलावै मीर, मगर चलावै तीर तें ॥ १४२ ॥
जाके लाए अंग, रंग निकासे ते जडग।
मारे मनुख तुरग, गोरा गरजै सिंघ ज्यूं ॥ १४३ ॥
भला हुआ जे भिड मूवा, कलंक न आयो कोय।
जस जपै श्री जगत में, हिव रिण ढूढो जोय ॥ १४४ ॥
रिण ढूढै नारी तहाँ, माथै सगला लोइ।
सीस न पावै, सो कहा, अंबर वाणी होइ ॥ १४५ ॥

कवित्त

गोरे का सिर ताँम, तुरत तिण गिरझ उठायो,
मुखतै छूटो गिरझ, ताँम देवँगना पायो।

देवँगना तें छूटि, सोइ सिर गंगा पड़ियो,
गंगा तें लियो संभु, रुंडमाला में जड़ियो।
सो सोह गोरल भरतार इम, सापवित्र मस्तक भयो।
यो जूझै परकाज-पर, सो गोरो सिवपुर गयो ॥ १४६ ॥

दूहा

नारी इम वाणी सुणी, पिय की पघड़ी साथ।
सती भई आणद सू, सिवपुर दीनो हाथ ॥ १४७ ॥
गोरा बादल की कथा, पूरण भइ है जाँम।
गुरु-सरस्वती-प्रसाद करि, कविजन करि मन ठाँम ॥ १४८ ॥
सोलैसं असियैं समैं, फागण पूनिम मास।
वीरा रस सिणगार रस, कहि जटमल सुप्रकास ॥ १४९ ॥

छंद रिसावला

वसैं मोल्ह अडोल अविचल, सुखी रइयत लोक,
आणंद घरि-घरि होत ऊछब, देखियत नहिं सोक ॥ १५० ॥
राजा जिहाँ अलिखॉन न्याजी, खान-नासिर-नंद,
सिरदार सकल पठान बिच हैं, ज्यों नखत्रे चंद ॥ १५१ ॥
धर्मसी को नंद, नाहर जात, जटमल नाँउ,
जिण कही कथा बनाय कै, बिच संबला के गाँउ ॥ १५२ ॥
कहताँ तहाँ आनन्द उपजै, सुन्याँ सब सुख होय,
जटमल पयंपै, गुनि जनो, विघन न लागै कोय ॥ १५३ ॥

लब्धोदय कृत पद्मिनी चरित्र चौ० में प्रयुक्त देशी-सूची

खण्ड–१

(१) चौपाई—रामगिरी

(२) योगनारा गीत री, राग-मल्हार

(३) करता सु' तो प्रीति सहु हूँसी करै रे

(४) सिहरां सिहर मधुपुरी रे, कुमरां नन्दकुमार

(५) ढुढणीयां मेवाड़ी देशी—मेवाड देशे प्रसिद्धास्ति

(६) ता भव वन्धण थी छोड हो नेमीसर जी

(७) जाइ रे जीयरा निकसि के, तथा—यात म काढो रे व्रत तणी

खण्ड–२

(१) वागलिया री

(२) राग गौड़ी—मन भमरा रे

(३) ढाल-अलवेल्यानी, कहिनइ किहा थी आविया रे लाल

(४) राग मारू—वाल्हा ते विदेशी लागे वाल्हो रे, ए गीत नी

(५) राग मल्हार—सहर भलो पण साकड़ो रे नगर भलो पण दूर

(६) कोई पूछो बांमण जोसी रे, ए देसी अथवा यतनी

(७) मनसा जे आणी

खण्ड–३

(१) मणइ मन्दोदरी दैत्य दसकंध सुण (राग-आसा सिधु कड़खारी)

(२) चरणाली चामुण्डा रण चढै

(३) बातं म काढो व्रत तणी, काची कली अनार की रे

(४) तिण अवसर वाजै निहा रे ढंढेरा नो ढोल, २ मेवाड़ी दरजण री

(५) अलबेल्या नी

(६) हंसला नै गल गूघरमाल कि हंसलो भलो

(७) रागमारु—पंथी एक संदेशड़ो, कपूर हुवे अति ऊजलो रे

(८) मेवाड़ी राजा रे चितोड़ी राजा रे

(९) एक लहरी लै गोरिला रे

(१०) राग मारू—नाहलिया न जाए गोरी रे वणहटै रे

(११) मधुकरनी

(१२) श्रेणिक मन अचरज थयो

(१३) नदी यमुना के तीर उड़ै दोय पंखिया

(१४) म्हारा सुगुण सनेही आतमा

(१५) सङंमुख हुं न सकु कही आडी आवै लाज

(१६) वन्दना करूं वार-बार ए देसी प्राहुणा री

(१७) साधजी भले पधार्या आज

(१८) बलध भला छे सोरठा रे

(१९) सदा रे सुरंगा थे फिरो, आज वि रंगा काय

(२०) नाथ गई मोरी नाथ गई

(२१) गच्छपति गाइयइ हो युगप्रधान जिनचन्द

(२२) वाल्हेसर मुझ वीनती गोड़ीचो.

(२३) करड़ो निहा कोटवाल, राग-खंमाइती सोला की या मारू

(२४) धन्यासी—लोक सरूप विचारो आतम हित भणी

विशेष नाम सूची



सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट के प्रकाशन

राजस्थान भारती (उच्च कोटि की शोध-पत्रिका)

भाग १ और ३,	८) रु० प्रत्येक
भाग ४ से ७	९) रु० प्रति भाग
भाग २ (केवल एक अंक),	२) रुपये
तैस्सितोरी विशेषांक—	५) रुपये
पृथ्वीराज राठोड़ जयन्ती विशेषांक	५) रुपये

प्रकाशित ग्रन्थ

१ कलायण (ऋतुकाव्य) ३॥) २. बरसगांठ (राजस्थानी कहानियाँ) १॥)
३. आभै पटकी (राजस्थानी उपन्यास) २॥)

नए प्रकाशन

१ राजस्थानी व्याकरण
२ राजस्थानी गद्य का विकास
३ अचलदास खीचीरी वचनिका
४ हम्मीरायण
५ पद्मिनी चरित्र चौपाई
६ दलपत विलास
७ डिंगल गीत
८ परमार वंश दर्पण
९ हरि रस
१० पीरदान लालस ग्रंथावली
११ महादेव पार्वती वेल
१२ सीताराम चौपाई
१३ सदयवत्सवीर प्रबन्ध
१४ जिनराजसूरि कृति कुसुमांजलि
१५ कवि विनयचन्द्र कृति कुसुमांजलि
१६ जिनहर्ष ग्रन्थावली
१७ धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली
१८ राजस्थानी दूहा
१९ राजस्थानी वीर दूहा
२० राजस्थानी नीति दूहा
२१ राजस्थानी व्रत कथाएँ
२२ राजस्थानी प्रेम-कथाएँ
२३ चंदायण
२४ दम्पति विनोद
२५ समयसुन्दर रासपंचक

पता :—सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर ।